मुक्ति शिखर

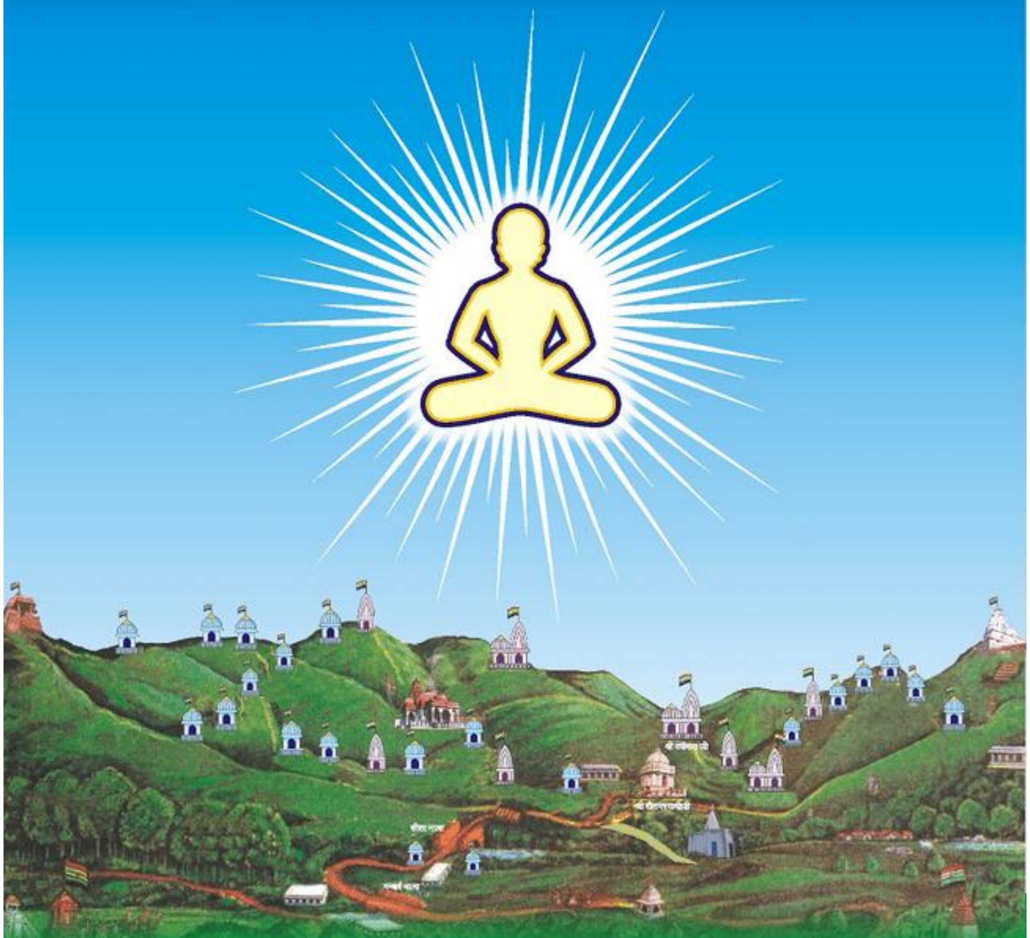

डॉ. स्वतंत्र जैन

वीर
अखिल भारीय दिगम्बर जैन परिषद का मुखपत्र, नई दिल्ली
दिसम्बर 2006

(समीक्षा)

मुक्तियाँ

आप इस ब्रह्माण्ड जैसे विशाल और शक्तिशाली हो सकते हैं, लेकिन कैसे ? यह संसार दुःख का सागर है, फिर आपको सदाकाल रहने वाले सुख का अमृत कुछ मिले तो कैसे ? आप स्वयं सिद्ध बुद्ध हो, लेकिन कैसे ? आप स्वयं परमात्मा हो सकते हो, लेकिन कैसे ? सभी प्राणी, सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि सभी परमात्मा हैं, लेकिन कैसे ? इस संसार में सुख का साम्राज्य स्थापित हो सकता है, लेकिन कैसे ? ऐसे प्रश्नों का उत्तर देने के सद्प्रयास से सराबोर, शाश्वत सुख को दर्शाने वाली आध्यात्मिक कृति 'मुक्तियाँ' चिन्तन, मनन और अध्ययन की दृष्टि से एक प्रभावी कृति है जो मुक्ति को आत्मसात कर भगवान बनने की दृष्टि से विचारोत्तेजक एवं पठनीय कृति है।

लेखक ने जिनागम रत्नाकर के मंथन से अमृतरस से भरपूर एक सौ एक रत्नों को उदहारण देकर तत्व समझाने की अभिनव पद्धति से तत्वप्रेमियों को जिस कौशल से परोसा है, उसके लिए यह निश्चित ही एक विचारोत्तेजक, पठनीय और उपयोगी पुस्तक बन पड़ी हैं।

सन्मति सन्देश

आध्यात्मिक सदाचार एवं सत्य तथ्य प्रकाशक मासिक पत्रिका, दिल्ली
जुलाई 2002

(समीक्षा)

मुक्तियाँ

सुना है कि समुद्र मंथन से 14 रत्न निकले थे, उनमें एक अमृत और विष भी था । किन्तु जिनागम रत्नाकर के मंथन करने से 101 रत्न निकाले गये हैं। वे सभी मात्र अमृतरस से भरपूर हैं।

आत्मार्थी को सत्पथ प्रदर्शक मुक्ति के साधक ये बोल अनुभव की मथानी से मंथन किये गये हैं । उदाहरण देकर तत्व समझाने की अभूतपूर्व पद्धति है इसमें ।

तत्वप्रेमी को अपूर्व शांति रस की प्राप्ति होगी ।

मुक्ति शिखर

विवरणिका

1. मुक्ति शिखर की वन्दना
2. विषधर सर्प
3. जंगल की आग
4. सम्यकदर्शनरूपी सुदर्शन-चक्र
5. अन्धत्व की पीड़ा
6. आपकी अशुद्धि ही आपकी शुद्धता को ही दर्शाती है
7. एक चिंगारी ही काफी है
8. अंधकार को चीरती प्रकाश की एक किरण
9. कल्पना का संसार
10. सच्चा सुख कैसे मिले ?
11. क्रोधादि विकार मुझ में हैं ही नहीं।
12. बहुरूपिया
13. आप कौन हो?
14. सच्चे सुख का स्वरूप
15. जो हूँ सो हूँ
16. मदहोशी
17. कीचड़
18. सच्ची विरक्ति
19. मिठाई
20. संसार चक्र
21. अनादि-अनन्तता
22. भिखमंगा
23. पात्रता
24. अग्नि की लपटें
25. निज-स्वभाव द्रष्टि

26. सूत्रवती सुई
27. शरीर रूपी अग्निकुंड
28. मूढ़जन
29. परछाई
30. आपकी सच्ची कसौटी
31. फायदा बूँद का; नुकसान समुद्र बराबर पाप का
32. सुई की नोक जितने मनुष्य भव होते हैं
33. समुद्र की एक बूंद
34. आपके पास समुद्र है
35. सहज द्रष्टि
36. चौबीस सूत्रीय चिन्तन आराधना
37. सम्यकदर्शन तो मेरी परछाई है
38. शून्य और एक
39. बिन्दु-बिन्दु विचार
40. खाली पालना मत हिलाओ
41. आत्म-ज्ञानी
42. कोयला
43. कर्मोदय रूपी अंगार
44. सूरदास की पत्नी का श्रंगार करना व्यर्थ है
45. प्रज्ञा-छेनी
46. आने वाले जन्मों में अपना खुद का नुकसान रोकें
47. ग्यारह अंग रूपी क्षयोपशमज्ञान
48. सदगुरू महिमा
49. दस-बीस-पचास साल बाद आपका क्या होगा?
50. अविनाशी चैतन्य ज्योति
51. घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे

1 मुक्ति-शिखर की वन्दना

अक्सर जब भी हमें किसी जगह की यात्रा करना होता है, तब हम उस जगह से संबंधित कई पुस्तकें पढ़ते हैं, वहां के छाया चित्र देखते हैं, उस जगह के वीडियो देखते हैं, वहां की सुन्दरता पर चर्चा करते हैं, इत्यादि कितने ही सालों तक, कितने ही प्रकार की कार्य-योजना बनाने से हमारी उस स्थान की यात्रा की तैयारी हो पाती है?

यह तो सिर्फ यात्रा की तैयारी की ही बात है, अरे भाई, अगर हमें वहां पर जाना है, तो हमें टूरिंग एजेंट से उस यात्रा की बुकिंग करना पड़ेगी और फिर नियत तिथि पर जाना होगा, तभी हमारी यात्रा सफल होगी.

इसी तरह हे प्रभो, अगर आपको तीर्थधाम श्री शिखर जी की वन्दना करने की इच्छा जाग्रत होती है, तब दिन-रात आप शिखरजी के भक्ति-गीत सुनते हो, वहां की महिमा के प्रवचन सुनते हो, इत्यादि अनेक प्रकार के कितने ही भाव शिखरजी की महत्ता के भाते हो, किन्तु क्या इन सभी भावों को अनन्तकाल तक भी भाने से भी आपकी शिखरजी की साक्षात वन्दना हो पाऐगी ?

अगर आपको शिखरजी की वन्दना करना है तो आपको वहां जाने का निर्णय करना ही होगा। यह आप चाहे कैसे भी करो; चाहें चर्चा करके, चाहे महिमा सुनकर या चाहे पुस्तक आदि पढ़कर,

परन्तु यह दृढ़ निश्चय तो आपको करना ही होगा। अब अगर आप अपने श्री सदगुरू से वहां का मार्ग पूछकर चल पड़ोगे, तो शीघ्र ही आप अनन्त केवली भगवन्तों की तपोभूमि एवं मुक्तिधाम के दर्शन कर अपूर्व लाभ उठा पाओगे।

इसी तरह हे प्रभो, अगर आप -

1. अपनी आत्मा को प्राप्त करना चाहते हो,
2. उसके दर्शन करना चाहते हो,
3. अनादि से जो आप खुद अपने आप से खोये हुये हो,
4. उस मैं को पाना चाहते हो,
5. तो यह जो आप अपनी चैतन्य निजात्मा की महिमा के शास्त्र पढ़ रहे हो,
6. चर्चा कर रहे हो,
7. प्रवचन सुन रहे हो,
8. आत्मगीत गा रहे हो,
9. भक्ति कर रहे हो,
10. घ्यान कर रहे हो,
11. इत्यादि अनेक प्रकार के कार्य कर रहे हो,
12. भावना भा रहे हो,
13. परन्तु यह निश्चय से यह जान लो कि
14. यह सब कार्य करते-करते अनन्तकाल में भी आपको अपने आत्मा की प्राप्ति दुर्लभ है।
15. कारण कि ये सब कार्य अनादिकाल से आजतक आपने अनन्तबार किये हैं,
16. किन्तु इसका कोई लाभ आपको आज तक नहीं मिला है।
17. अत: आप अब अत्यन्त विचार करके यह बतलाओ कि
18. इस भव में आप ऐसा क्या अपूर्व कार्य कर रहे हो,
19. जो आपने अनादिकाल से आज तक नहीं किया है।
20. अहो, आपकी संपूर्ण चेतना को झकझोर दे, ऐसा प्रश्न है यह।

हे प्रभो, शास्त्रों में आता है कि यह जीव भवसमुद्र के बीचो-बीच स्थित काल-रूपी मगरमच्छ के जबड़े में पड़ा हुआ है।

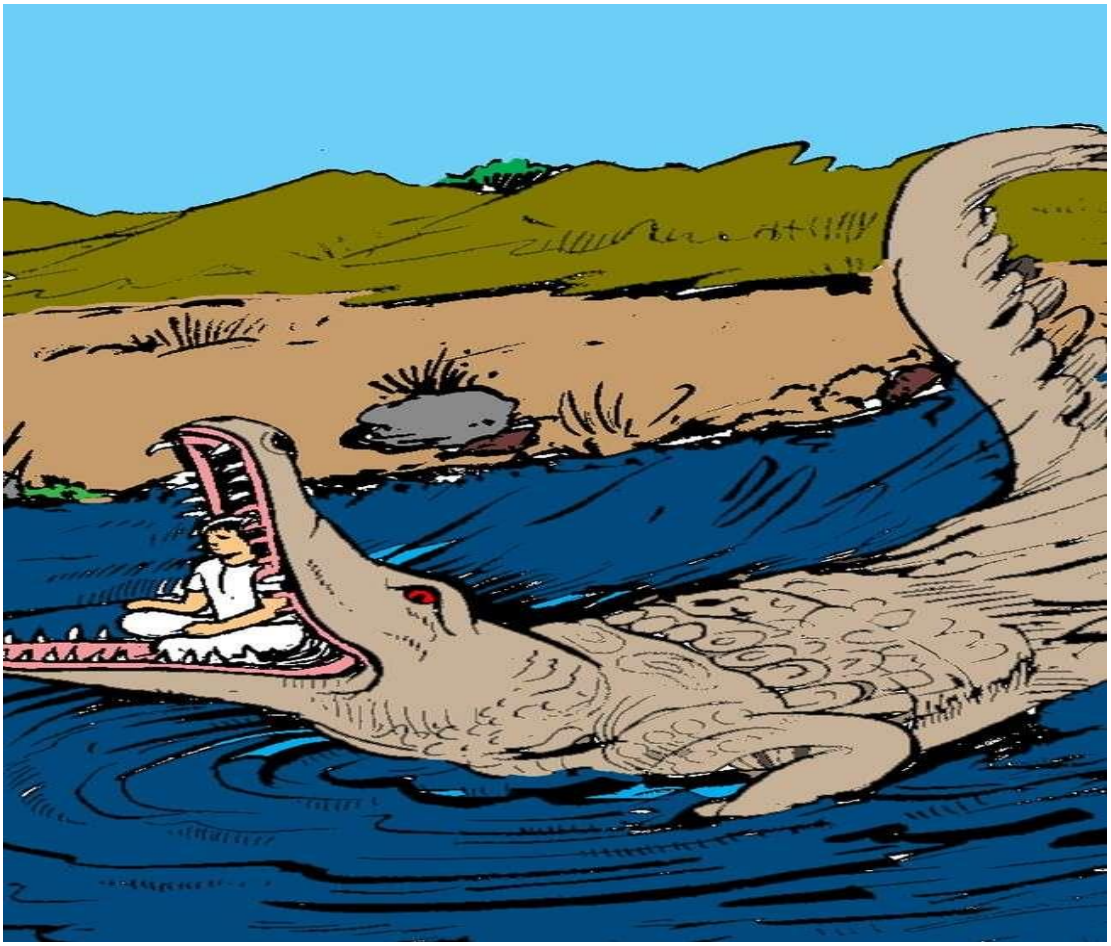

1. क्या आप नियमसार कलश 12 में आये उपरोक्त कथन को मानते हो?
2. अगर नहीं तो आपको समझाने से आपका कोई भी लाभ नहीं होने वाला है।
3. अगर आपका उत्तर 'हां में है, तो क्या आप इस संसार-सागर को देखकर वैसे ही भयाक्रांत हो,
4. जैसा कि कोई जीव मगरमच्छ के मुंह के अंदर हो जाने पर होगा।
5. हर समय उसे यह डर लगा ही रहेगा कि पता नहीं कब यह मगर अपना मुंह बन्द कर लेगा और उसका प्राणांत हो जावेगा।
6. ऐसी स्थिति में उसे न भूंख-प्यास लगेगी,
7. न ही उसे घर-बार, परिवार आदि के प्रति राग उमड़ेगा,
8. न ही उसे इष्ट पदार्थो को भोगने की कामना-वासना उत्पन्न होगी।
9. वह तो मात्र बचाओ-बचाओ ही चिल्लायेगा।

10. हे जीव अगर आप मगरमच्छ के मुंह के अंदर ही रहने जैसा अनुभव नहीं कर रहे हो,
11. तो फिर यह मान लो कि आप सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हो,
12. तथा अनंत केवली भगवंतों के ज्ञान का विरोध कर रहे हो,
13. जिसकी काफी बड़ी सजा आपको शीघ्र ही मिलेगी,
14. जिसके परिणाम-स्वरूप आप फूल-पट्टी की एकेन्द्रियादि पर्याय में चले जाओगे।
15. अतः हे प्रभो, अब तो इस सच्चाई को पहचानो और सिर्फ बचाओ-बचाओ चिल्लाओ।

2 इस जन्म को धन्यावतार बनायें

किसी मनुष्य को दुर्योग से अत्यन्त विषधर सर्प काट लेता है। तब उस मनुष्य के शरीर में अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न होती है। उसे ऐसा लगता है जैसे उसका पूरा शरीर अग्नि की लपटों में जला जा रहा हो। जब तक उसके प्राण नहीं निकलते हैं तब तक वह तड़फता ही रहता है।
जरा विचार तो करो कि जब एक सर्प के काटने पर आपकी ऐसी अवस्था होती है, तो फिर अगर हजारों विषधर सर्प एक साथ आपको काट लें, तब आपकी कैसी हालत होगी?
अहो इन सर्पो से भले ही मरणांतक पीड़ा हो, परन्तु वे सभी मिलकर भी आपके मात्र एक जन्म का ही नाश कर सकते हैं,
किन्तु यह जो अनन्तानुबंधी कर्म रूपी अत्यन्त घातक विषैले अनन्त नाग एक साथ अनादिकाल से आपको डस रहे हैं,
आपके अनन्त भवों का नाश कर रहे हैं,
तथा इनके काटने से होने वाली अत्यन्त कष्टकर, मरणांतक पीड़ा में आप तड़फ रहे हो.
क्या अभी आप इस पीड़ा को महसूस कर रहे हो?

सच्चाई यह है कि उपरोक्त दृष्टांत में दर्शाये दुख को जो भव्योत्तम महसूस करता है,

1. फिर वह अपने आपको अनन्त विकराल सर्पो द्वारा डंसा हुआ पाता है।
2. फिर उसे इस संसार में कहीं भी चैन नहीं मिल रहा होता है।
3. उसके समस्त पुन्य रुपी सातावेदनीय कर्म भी उसे सुख भी नहीं दे पाते हैं।
4. वह बाह्य में भक्ति-पूजा, नियम-संयम, जप-तप-ध्यान आदि सब करता है,
5. किन्तु इन सबको करने से कहीं पर भी उसे चैन नहीं मिलता है।
6. वह यह भी जानता है कि ये सब कार्य उसने अनन्त बार किये हैं।
7. वह अनन्तबार ये सब व्यवहार के कार्य करते हुए द्रव्यलिंगी महामुनि बन नौवे ग्रेवेयक तक गया है,

8. किन्तु कहीं पर भी वह भवभ्रमण के कारण को छेद नहीं पाया है, नष्ट नहीं कर पाया है।
9. अत: ऐसा ही जीव सच्चा सुपात्र है

ऐसे ही सच्चे मुमुक्षु को सदगुरू अत्यन्त करूणा कर समझाते हैं कि क्या आपने कभी भी विचार किया है कि आपके इस संसार-परिभ्रमण का कारण क्या हो सकता है?
अहो, इसका एक मात्र कारण यह है कि -

1. आपने आज तक अपने परम-ज्योतिर्मय चैतन्यघन, अनन्तसुखधाम रूपी परमात्म-चैतन्य स्वरूप को नहीं पहचाना है।
2. अतः अब इस भव में आप अपनी अनन्त-गुणात्मक शक्ति को पहचानों,
3. अनन्त तीर्थकरों एवं केवलियों द्वारा बताये गये इस अनुपम-अदभुत-अलौकिक मुक्ति-शिखर रूपी अपनी ही परमसुखदायक निज-आत्मा, परमात्मा के दर्शन करो.
4. अपने ही निज-अन्तर मार्ग पर अत्यन्त-अत्यन्त गहरे-गहरे चलते जाओ, चलते जाओ,
5. तभी आप अपने आगामी अनन्त भवों को छेदकर, भेदकर परम निर्वाण को प्राप्त कर सकोगे.
6. अहो, आप तो सहज रूप से सदाकाल, परमात्मा स्वरूप ही हो.
7. इसमें जानना क्या, मानना क्या, इसमें तो आपको बस समा जाना है, डूब जाना है.
8. क्या आप अब अपने निज-चैतन्य तत्व में डूबने के लिए तैयार हैं?

अहोss, यह काल कितना दुष्कर है। आयु का कब अंत आ जाये, यह भी निश्चित नहीं है।
अत: अब यही कामना करते हैं कि समस्त जीव आत्मदेव के रूचिवंत हों,
अपने आत्मपथ पर चलकर अपने ही चैतन्य परमात्मा के दर्शन कर अपना यह भव सार्थक करें,
इस जन्म को धन्यावतार बनायें.
यही मंगल भावना भाते हैं।

3 जंगल की आग है आपके पास

शिष्य - हे प्रभु, आप इस संसार को क्षणभंगुर, असार बतलाते हो;
जितने भी शास्त्रों का अध्ययन किया है, उनमें भी सिर्फ यही बात लिखी है।

संसार में जीवों का जन्म-मरण होना साक्षात दिखता भी है।
यह इस संसार का शाश्वत नियम है कि जिसने भी जन्म लिया है,
उसका मरण निश्चित ही होना है।
हर व्यक्ति जानता भी है कि जैसे सबका मरण हो रहा है, वैसे ही मेरा भी मरण निश्चित ही होगा।
फिर भी यह सब जानते हुए भी मुझे इस संसार और शरीर से कोई विरक्ति नहीं हो रही है।
मेरे आत्मदेव में रूचि लगती ही नहीं है।
अतः हे प्रभो, अब तो आप ही कोई ऐसा मार्ग बतलाइये, कि जिससे मेरा कल्याण हो सके।
सदगुरू - हे शिष्य, तुम्हारी यह जिज्ञासा, ये भाव बहुत ही उत्तम हैं।
लेकिन ऐसे भाव भी तुमने पूर्व के जन्मों में अनन्त बार किये हैं। अतः मात्र ऐसे विचारों से तुम्हारा भला होना असंभव है।
तो फिर इस संसार से विरक्ति कैसे हो? यह एक विचारणीय प्रश्न तो है,
किन्तु यह एक बहुत ही मूढ़, तीव्र मदिरा में डूबे हुए मनुष्य का प्रश्न है, जो नशे में मतवाला होते हुए भी चैतन्य दिखने की कोशिश करता हैं।
कैसे? आइये इसे निम्न-उदाहरण से स्पष्ट करते हैं -
एक बार दैवयोग से कोई बालक अपने परिवार से बिछुड़कर अत्यन्त घने जंगल के मध्य में भटक जाता है और वह वहां लगनेवाले कुछ जंगली फलों आदि को खाकर बड़ा होता है।

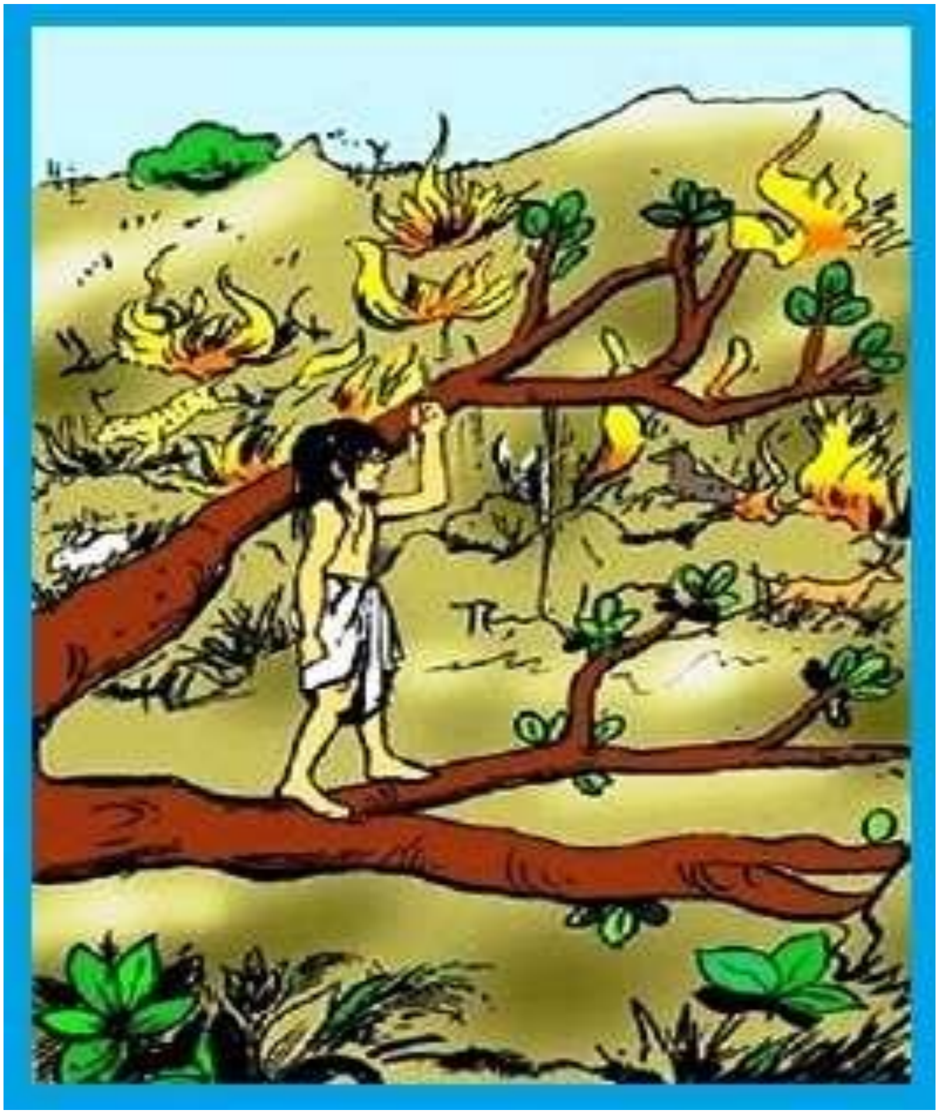

वहीं पर वह कुछ नशीले फलों का भी सेवन कर मतवाला बनकर संगी-साथी के रूप में हिंसक पशुओं को पाकर उनसे ही क्रीड़ा करता रहता है।

एक दिन उस जंगल के एक सिरे पर आग लग जाती है। धीरे धीरे अग्नि की लपटें चारो और फैलने लगती हैं।

कुछ जानवरों के जलकर मरने का क्रंदन इसे सुनाई भी देता है।

दूर कहीं दिखनेवाली लपटें धीरे-धीरे इसके पास आने लगती हैं।

इसके कुछ संगी-साथी भी जलकर मरने लगते हैं।

अब यह बालक भी समझ जाता है कि इसकी मृत्यु कभी भी हो सकती है.

किन्तु फिर भी इसे जंगल के मध्य स्थित अपने ठिकाने से इतना मोह होता है कि वह अपने नाश होने तथा मृत्यु की भयानक पीड़ा को भूलकर उसे छोड़ने का विचार भी नहीं करता है।

वह कहता भले ही है कि अब तो मेरा मरण निश्चित है,

किन्तु यह कहते समय उसे मरण की पीड़ा का दुःख किंचितमात्र भी नहीं आता है।

वह तो हर समय अपने आगामी कार्यो की, भोग उपभोग की, आमोद-प्रमोद की कल्पना में लगा रहता है ।

सपने भी उसे अपने आमोद-प्रमोद तथा राग-रंग के ही आते रहते हैं।

फिर एक दिन यह जंगल की अग्नि फैलते-फैलते इसे चारों ओर से घेर लेती है। इसके बचने के सभी मार्ग बन्द हो जाते हैं और तब यह मनुष्य अत्यंत आकुलित होता हुआ मरण को प्राप्त होता है।

हे प्रभो, इस दृष्यमान संसाररूपी भव-वन में चारों ओर कर्मरूपी अग्नि जल रही है.. आपको यह दिख भी रहा है कि यह अग्नि आपके सभी इष्ट मित्रों, सगे-संबंधियों को अपनी ज्वाला में समेट कर नष्ट करती जा रही है,

फिर भी आप इससे भयभीत नहीं दिख रहे हो और घोर मदिरापान किये हुए व्यक्ति की भांति आप भी कदाचित बीच-बीच में अपने आपको चैतन्यवान दिखाने की कोशिश करते हुए कहते हो कि –

1. मैं चैतन्य-परमात्मा हूँ,
2. अनन्तगुणों का पिंड हूँ,
3. सुख का सागर हूँ, इत्यादि।

अहो, ऐसे विचारों से भी आपका कभी भी भला होना संभव नही है।

अब आप स्वयं विचार करके बताओ कि -

1. क्या यह सब कहते हुए आप इस भव-वन में अपने आपको जलता हुआ महसूस कर रहे हो?
2. क्या संसार के समस्त सातावेदनीय-कर्म उपस्थित होकर भी आपकी इस वेदना को कम करने में समर्थ हो पा रहे हैं?
3. क्या आप इस संसार के दुःखो से नहीं, बल्कि इस संसार से ही दुःखी हो?
4. क्या आपको इस संसार में उठते-बैठते, चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते-जागते, यानि कि प्रत्येक कर्म करते हुए भी आपकी द्रष्टि का विषय एकमात्र आत्मा ही है?

5. क्या जब भी आपका ध्यान इस संसार में चला जाता है, तब आप तत्काल इस संसाररुपी भव-वन की लपटों में झुलस जाते हो?

6. अगर इन सभी प्रश्नों के उत्तर आपको हां में मिलते हैं, तभी यह मानों कि आपकी यह विरक्ति सच्ची है;

7. अन्यथा यह तो मतवाले का ही ढोंग है, जो वह सब के सामने करता रहता है।

8. ज्ञानीजन कहते हैं कि रूचि-अनुयायी वीर्य:

9. हे प्रभो, अगर आपकी रूचि अपनी आत्मा में होगी,

10. तब आपका उस ओर सहज ही परिणमन शुरू हो जावेगा।

11. अत: अब भी चेत रे भाई चेत.

12. अब आप अनादि की अपनी मोहनिद्रा को त्यागकर इस शमशान-वैराग्य को छोड़कर अपने परिपूर्ण स्वभाव को लक्ष्य में ले लो।

13. आप में न पहले कोई कमी थी, न अब है और न कभी होगी।

14. अत: अब आपको पाना भी कुछ नहीं है।

15. बस इस बात को स्वीकारना है कि आप स्वयं ही सिद्धस्वभावी हो।

16. तब आपका चैतन्य-स्वरूप में अपने आप ही सहज-परिणमन चालू हो जावेगा।

17. सदगुरू के वचन यहीं पर शिष्य के लिए हितकारी साबित होते हैं;

18. क्योकि आत्मा के क्षेत्र में तो शिष्य अंधा ही है और वह अंधत्व की पीड़ा से व्याकुल हो रहा होता है।

19. जब श्री सदगुरू अत्यन्त करूणा कर उसे समझाते हैं कि हे जीव, तू भिखारी नहीं भगवान है, सहजानन्द-स्वभावी है,

20. तो वह उनके प्रति श्रद्धा के बल पर जमकर अपने सदगुरू के इन अमृत-वचनों को पीकर हृदयंगम कर लेता है।

21. फिर कभी भी उसे उनपर शंका नहीं होती है।

22. पुराणों में कई राजाओं और अन्य नगरसेठ आदि का वर्णन आता है कि वे मुनिराजों के पास गये, जहां उन्हें आत्मा के वैभव का पता चला,

23. तो तत्क्षण उन्होंने उसे धारणकर आत्म ज्ञान प्राप्त किया और कुछ तो उसी समय दीक्षा धारण कर मोक्ष भी पधार गये।

24. अत: हे प्रभो, अब और अधिक विकल्पों को छोड़ दो और अपने चेतन-स्वभाव को धारण कर लो।

25. अपने आपको द्रष्टिमुक्त कर लो।

26. एक बार द्रष्टिमुक्त हो गये, तो फिर तो आप इस संसार में रहते हुए भी स्रष्टि मुक्त हो जाते हो।

27. फिर आपकी द्रष्टि अपनी आत्मा पर ही टिक जाती है,

28. भले ही आप इस संसार में अपने परिवार, इष्ट-मित्रों के साथ रह रहे हो।

29. लेकिन सच्चाई यह है कि यह जंगल की आग अब आपके पास है. अतः इससे बचने की कोशिश तुरंत करें; अन्यथा यह आग आपको जलाकर नष्ट कर देगी.

30. अहोss, कितना गंभीर कथन है यह। इसके अलावा धर्म की और कोई विधि नहीं है।

31. अनंत सिद्ध भगवंतों द्वारा बताये ऐसे कल्याणकारी मुक्तिपथ पर चलकर समस्त जीव द्रष्टिमुक्त होकर अपना भला करे, बस यही मंगलभावना भाते हैं।

4 सम्यकदर्शनरूपी सुदर्शन-चक्र

शिष्य - हे प्रभो, शास्त्रों में आता है कि येन केन प्रकारेण, कुछ भी करके, यहां तक कि अपनी जान देकर भी सम्यकदर्शन (निज-परिचय) की प्राप्ति हो सकती हो, तो करना चाहिए, क्योंकि यह इस मनुष्य जन्म में प्रत्येक भव्यात्मा का प्रथम से प्रथम कर्तव्य है। इसलिये हम तो आज से अपने शरीर, परिवार, सन्तान, सुख-समृद्धि, धन-दौलत, राग-द्वेष आदि के प्रति अपने राग भाव को छोड़कर दिन रात सम्यकदर्शन को पाने की कोशिश में लगे हुए हैं, फिर भी उसकी प्राप्ति नहीं हो पा रही है.

अत: हम अत्यन्त खेदखिन्न हैं। कृपया हमें मार्ग और दिशा बताकर हम पर उपकार करें।

सदगुरू - हे चैतन्य प्रभाकर, अनादिकाल से आप अपनी भूलवश इस चतुर्गति रूपी भव-वन में भटक रहे हो;

अनंत बार आपने उपरोक्तानुसार सम्यकदर्शन को पाने की कोशिश की है, फिर भी आपका भला किंचित भी नही हो पाया है।

अत: इस बात को अच्छी तरह समझकर अब इस भव में आपका क्या कर्तव्य है, उस पर ही आपको बारम्बार विचार करना चाहिए।

आइये, हम भी इस विषय पर गहन चर्चा करते हैं:-

हे वत्स, आपके प्रश्न से ऐसा प्रतीत होता है कि आप सम्यकदर्शन को पाने की तीव्र इच्छा, भावना कर रहे हो और सोचते हो कि अगर यह सम्यकदर्शनरूपी सुदर्शन-चक्र आपको मिल गया, तो आप इसके सहारे अपने समस्त कर्म-शत्रुओं का नाश कर दोगे। सुदर्शन चक्र का उदाहरण यहां पर इसलिये सटीक है, क्योकि इसके बारे में प्रसिद्ध है कि इसको एक बार चला दिया जाए, तो शत्रुओं का नाश करके ही वापस आता है।

सम्यकदर्शन तो और भी अदभुत है, क्योंकि उसके आते ही अनन्तानुबंधी कर्म करने वाले अनन्त शत्रुओं का नाश तत्क्षण अपने आप ही हो जाता है।
समुद्र के बराबर अनन्त कर्म-राशि समाप्त होते ही बूंद बराबर बची हुई कर्मराशि तो फिर मात्र कुछ ही भवों के अल्प-समय में ही मुरझा जावेगी।

हे आत्मदेव, अनादिकाल से आपने जो अनंतबार सम्यकदर्शन को पाने की इच्छा की है, भावना भाई है, तपस्या की है; क्या उससे आपको आज तक सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई है? वर्तमान में जो आपका मति-श्रुतज्ञान है, बुद्धिमत्ता है, क्षयोपशम ज्ञान है; उससे करोड़ो गुना ज्यादा ज्ञान आपको पूर्व में अनंत बार हुआ था।

साथ ही आप वर्तमान में जो तप-त्याग कर रहे हो, व्रत-उपवास आदि कर रहे हो, इससे करोड़ो गुना ज्यादा व्रत-उपवास, तप-त्याग करके आप पूर्व में बहुत-बहुत उच्च कोटि के स्वर्ग के भव भी पा चुके हो।

अत: अब आप स्वयं ही सोच लो कि इस पंचमकाल में क्या आप इतने त्यागी व्रती हो?

क्या आज आपको शास्त्रों के मात्र एक अंश का भी ज्ञान है, जबकि पूर्व में आपको कई बार ग्यारह अंगो का ज्ञान हुआ था?

कहने का तात्पर्य यह है कि जब आप पूर्व में इतने सारे शास्त्रों के, असंख्य शास्त्रों के ज्ञानी थे; तपस्या भी आपने बहुत उच्चकोटि की थी;

तो फिर वर्तमान में जबकि आप कदाचित कई शास्त्रों के नाम भी नहीं जानते हो, तप-त्याग भी आपका बहुत ही अल्प है;

साथ ही पूर्व के भवों में जिस तरह से आपने उच्चकोटि के संयम आदि कार्य अनंत बार किये हैं, क्या इस जन्म में उसी तरह के, लेकिन बहुत मंद और हीन प्रयासों से सम्यकदर्शन की आपको प्राप्ति संभव है?

अगर आपका उत्तर हाँ में है, तो जरा विचार करके बताओ कि एक स्कूल में अगर आपका बच्चा बार-बार फेल हो रहा हो, तो आप क्या करोगे?

1. अपने बच्चे का स्कूल बदल दोगे.
2. स्कूल में जा कर उसके टीचर को बदलने की बात करोगे.
3. उसके टीचर से मिलकर अपने बच्चे की समस्या समझ कर टीचर से उस पर विशेष ध्यान देने की बात करोगे.
4. अपने बच्चे की विशेष कोचिंग का इंतजाम करोगे.
5. घर में अपने बच्चे के ऊपर विशेष ध्यान रखोगे.

हे प्रभो, आप अपने वर्तमान के टीचर या गुरू को अधिक से अधिक पांच साल तक समय दें, फिर भी अगर आपको लगे कि आपका कल्याण नहीं हो पा रहा है, तो आप अपने टीचर को बदल दें या स्कूल को बदल दें या अपने लिए विशेष कोचिंग का इंतजाम करें.

यह मनुष्य भव बहुत-बहुत दुर्लभ है. अनन्त काल के सामने इस जन्म का समय अब बहुत ही कम है, इसलिए इसकी स्मार्ट प्लानिंग जरुरी है. अतः आप ही निर्णय करो कि अब आपको क्या करना है?

अगर आपका उत्तर 'नहीं में है, तो भी आप गलत हो; क्योकि आपका अल्पज्ञान, अल्प तप-त्याग आदि कहीं से भी आपको आपके स्वरूप को पाने से रोक नहीं सकता है।

अनादिकाल से आज तक आपने अपनी आत्मा को पाने की, सम्यकदर्शन को पाने की सच्ची कोशिश ही नहीं की है। इसी कारण आप चतुर्गतिरूपी भव-वन में आज तक भटक रहे हो।

वास्तव में आपकी द्रष्टि अभी भी दूषित ही है, विपरीत ही है; जो कि संसार पर ही टिकी हुई है और इस संसार को ही टालना चाहती है।

संसार रुपी पर्याय को टालना किसी के भी बस की बात नहीं है. यह एक असंभव कार्य है और इसी कारण आप इसे आज तक करने में असमर्थ रहे हो।

लेकिन आपने यह तो ध्यान ही नहीं दिया है कि संसार रुपी इस पर्याय का जीवन काल मात्र एक समय होता है और एक सेकण्ड में असंख्य समय होते हैं.

हे प्रभो, आपकी आत्मा के किसी भी क्षेत्र में और प्रदेश में इस संसार का प्रवेश ही नहीं है,

फिर आपकी इस संसार को छोड़ने की, टालने की कोशिश निरर्थक होना ही है।

देखो भाई यह एक बहुत गंभीर बात है, जो यह समझाती है कि अगर वास्तव में आप अपनी आत्मा को प्राप्त करना चाहते हो, तो विचार करके बताओ कि अनादिकाल से अभी तक के आपके अपनी आत्मा को प्राप्त करने के सभी प्रयत्न निष्फल क्यों हुए?

अब इस भव में आपको यह अपूर्व अवसर मिला है, तो इसे अपने हाथ से जाने मत दो और अब अपने आपको पाने की क्रिया में जुट जाओ।

जो वस्तु आपकी है, अनादिकाल से जो कभी भी खोई नहीं है, फिर भी आप अपनी उस वस्तु को, अपनी आत्मा को क्यों भूले हुए हो?

इसीलिए शास्त्रों में आप जैसे जिज्ञासुओं को कहा भी जाता है कि आप तो -

1. भूलेरा भगवान हो;
2. आप तो एक ऐसा ज्ञानपुंज भगवान हो, जो स्वयं अपने आपको भूला हुआ है
3. अपनी अनन्त-शक्तियों को भूला हुआ है।
4. अहो, आपकी एक-एक शक्ति में अनन्त महिमा समाहित है;
5. ऐसे आप अनंत वैभववान हो।

6. तीनों लोकों की समस्त सम्पदा भी अगर आपको मिल जाये,
7. तो वह भी आपकी आत्मा की सम्पदा के सामने सुई की नोक के बराबर भी नहीं है।

फिर भी देखने में आ रहा है कि आप पर वस्तुओं को, पर पदार्थो को प्राप्त करने की कोशिश में अपना यह अमूल्य मनुष्य-भव गंवा रहे हो। आप यह भी नहीं सोच पा रहे हो कि जो कुछ आप जान रहे हो, देख रहे हो, समझ रहे हो, वह ज्ञान आप अपनी आत्मा के गुणों से ही प्राप्त कर रहे हो।

यह तो ऐसा ही हो रहा है जैसे कि जिसे आंखो से कम दिखता हो, ऐसा कोई नासमझ व्यक्ति चश्मा पहने हुए अवस्था में ही अपने चश्में से अपना खोया हुआ चश्मा ढूढने की कोशिश करे।

कितने आश्चर्य की बात है ना यह, लेकिन आप विश्वास करो या ना करो, वास्तव में अनंत केवली भगवंत देख रहे हैं कि आपकी स्थिति भी ऐसी ही है।

आपका यह जो वर्तमान का ज्ञान है, वह कभी विचार तो करो कि वह कहां से आ रहा है?

क्या यह इस शरीर और मन के द्वारा ही उपज रहा है?

अरे, शरीर और मन तो जड़ होते हैं, जबकि आपका ज्ञान, आपकी चेतना वह तो सच्ची ही है।

देखो प्रभु, जो चैतन्य-वस्तु का, आत्मा का सच्चा स्वरूप है, उसे समझे बिना कभी भी आप अपने आत्म-स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकते हो।

सभी शास्त्रों में यही बातें बारम्बार कही गई हैं कि हे जीव, हे भव्य आत्मा,

1. आप भक्त नहीं, भगवान हो,
2. सेवक नही, स्वामी हो,
3. तीनों लोको के नाथ हो,
4. चैतन्य सम्राट हो।

ऐसा मानने से ही आप अपने आत्म-स्वरूप को, अपने परमात्म स्वरूप को पा सकते हो, अन्यथा आपका यह मनुष्य-भव फिर से निष्फल चला जावेगा।

हे मेरे परमात्मा, अब और समय मत गंवाओ और इस बात पर बहुत गहराई से विचार करो। इस संसार में जो कुछ भी आप देख रहे हो, यह सब क्षणभंगुर होने से, विनाशीक होने से आपकी अविनाशी सत्ता के सामने काल्पनिक ही है, नश्वर ही है।

अत: इस कल्पना के जाल से अपने आपको मुक्त करो और अपनी आत्मा के दिव्य प्रकाश को लक्ष्य में लेकर अपने अनन्त स्वरूप को ध्यान में लाओ, उसी को अपना मानो ओर इन तीनों लोकों से अपनी द्रष्टि को समेटकर अपने निज स्थान में, अपनी आत्मा में अपनी द्रष्टि को जमा लो, तभी आपका कल्याण हो सकता है।

अहोss, कितना गंभीर कथन है यह। इसके अलावा धर्म की और कोई विधि होती ही नहीं है।

अनंत जिनवर-प्रणीत ऐसे मुक्ति-पथ पर चलकर समस्त जीव द्रष्टिमुक्त होकर अपना कल्याण करे, बस यही मंगलभावना भाते हैं।

5 स्वयं के अन्धत्व से बचें

शिष्य- हे गुरुवार, मैं दिन-रात प्रवचन सुनता हूं, तत्वचर्चा करता हूं, कई शिविरों में भी मैं सम्मिलित हुआ हूं।

ऐसा करते-करते दसियों साल गुजर गये, फिर भी मुझे आजतक मेरे निज आत्मदेव की प्राप्ति नहीं हुई है, सो क्या कारण है?

सदगुरू - वत्स, आपका प्रश्न बहुत सामयिक है। अधिकांश जिज्ञासु जीवों की भी यह उलझन होती है।

इसको समझने के लिए निम्न उदाहरण दृष्टव्य है-

बहुत समय पूर्व की बात है; जेम्स नामक एक व्यक्ति अफ्रीका के घने जंगलो में सोने की खदानों की खोज करने निकलता है।

एक दिन कुछ खराबी आ जाने से उसका हेलीकाप्टर एक पहाड़ी प्रदेश में गिर जाता है। जेम्स किसी तरह पैराशूट के सहारे बाहर छलांग लगा देता है।

उतरते समय पेड़ों से टकराते-टकराते वह किसी तरह जमीन पर गिरता है और बेहोश हो जाता है।

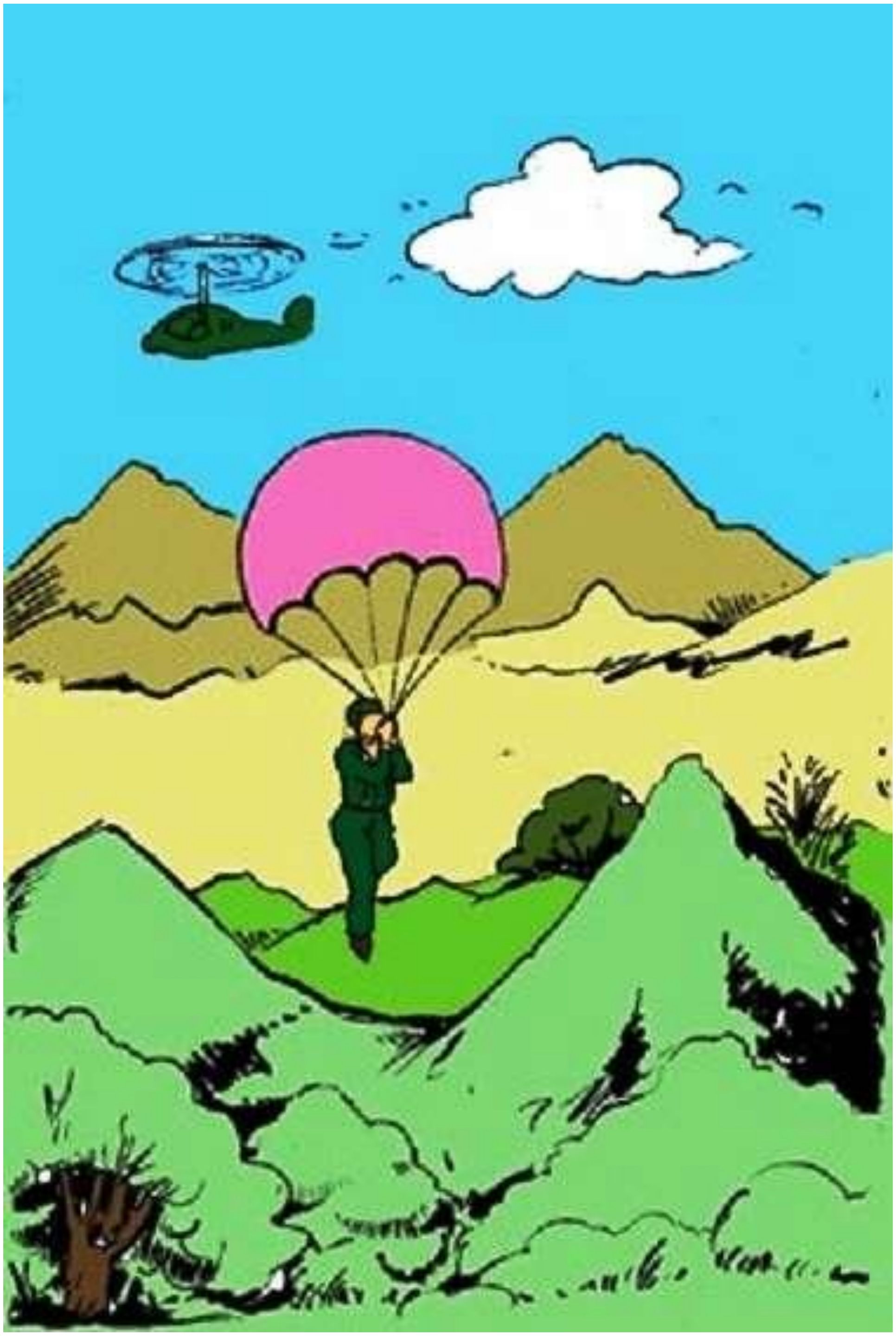

वह क्षेत्र बड़ा ही विकट था। वहां पर उंचे-उंचे पहाड़, नदियां और खाइयां थी। उस क्षेत्र में कुछ जहरीले पौधे थे जिनसे रिसने वाली विषैली गैस वहां पर रहने वाले सभी जीवों को अंधा बना देती थी। इस कारण जेम्स भी होश में आने पर अपने आपको अंधा पाता है।

ऐसी विकट स्थिति में वह काफी डर जाता है और जोर-जोर से चिल्लाता है कि बचाओ-बचाओ। किन्तु कोई भी उसे बचाने वाला नहीं आता है। तब वह थोड़ी हिम्मत जुटाकर धीरे-धीरे टटोल-टटोलकर आगे बढ़ता है। काफी चलने पर उसे कुछ आवाजें सुनाई देती हैं। वह बड़ी मुश्किल से उन लोगो के पास पहुंचता है और उन्हें अपनी विपदा सुनाता है।

तब उस गांव वाले उसे बताते हैं कि वे भी बचपन से ही अंधे हैं लेकिन इस अंधत्व के साथ रहना उन्होनें सीख लिया है और अब उन्हें द्रष्टि की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती है।

अधिकांश अंधे अपनी इसी स्थिति में खुश रहते हैं और अपने घर गृहस्थी के कामों मे ही मग्न रहते हैं। कुछ अंधे भगवान की भक्ति-पूजा में अपने आपको लगाये रखते हैं।

कुछ अंधे द्रष्टि मिलने के फायदों पर भी दिन-रात चर्चा करते रहते हैं किन्तु उसे पाने की कोई इच्छा-शक्ति या लगन उनमें नहीं दिखती है।

जेम्स कुछ दिन वहां रुककर विश्राम करता है, किन्तु उसे हर समय अपने अंधत्व की पीड़ा सताती रहती है। जैसे ही उसकी अवस्था कुछ सुधरती है, वह उस क्षेत्र से बाहर निकलने की सोचता है।

खाने पीने रहने आदि की कोई कमी न होते हुये भी वह उस स्थान को शीध्र छोड़ना चाहता है; ताकि वह बाहर निकलकर अपनी आंखो का इलाज करवा सके। वह दिन-रात अपने घर की यादो में, उसके अनुपम वैभवों में ही खोया रहता है। सपने भी उसे अपने घर परिवार के ही आते रहते हैं।

वह प्रत्येक गांव वाले से वहां से बाहर निकलने का मार्ग पूछता है किन्तु वे कहते हैं कि वे स्वयं अंधे हैं, अत: उन्हें बाहर निकलने का मार्ग नहीं पता है।

एक-दो अंधे ऐसे भी मिलते हैं, जिन्हें मार्ग मालूम नहीं होने पर भी वे इसे मार्ग बताने का ढोंग करते हैं और उसे गलत मार्ग बता कर भटकाते रहते हैं।

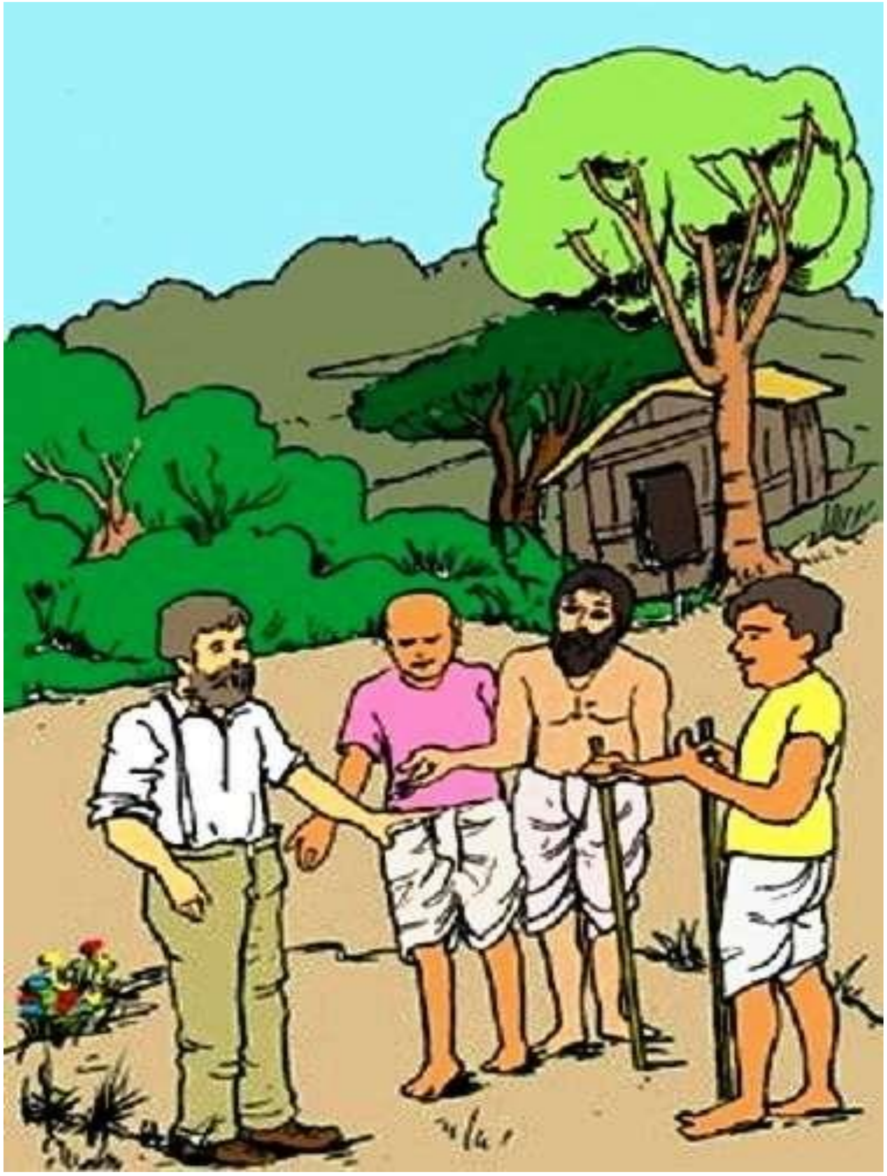

उस मार्ग पर जाके मेहनत करने पर भी उसे आगे उसे रास्ता नहीं मिलता है और फिर उसे अत्यन्त परेशान होकर, निराश होकर वापस आना पडत़ा है।
लेकिन उसके मन में वहां से निकलने की सच्ची लगन थी और अंदर ही अंदर उसे अपना अंधत्व कचोट रहा था। अत: देवयोग से उसे एक दिन एक ऐसा व्यक्ति मिलता है जो उसे बताता है कि वह वहां से निकलने का मार्ग जानता हैं और चूंकि उसने विषैली गैस से बचाने वाला चश्मा पहन रखा है, इसलिये उस क्षेत्र में घूमते हुये भी वह अंधा नहीं होता है ।

उस व्यक्ति को उस क्षेत्र में रहने वाले अंधे जीवों पर अत्यन्त करूणा है और इसलिये वे उन्हें बार-बार समझाते रहते हैं कि इस क्षेत्र से बाहर निकलकर अपनी आंखो का इलाज करवा लो और चश्मा लगा लो। फिर आपकी इच्छा हो तो इस क्षेत्र में घूमो, क्योकि तब तुम्हे कोई भी नुकसान नहीं होगा।

कई लोग उस व्यक्ति से वहां से निकलने का मार्ग तो पूछ लेते हैं किन्तु अंदर से उन्हें वहाँ से निकलने की कोई लगन नहीं होने से वे वहां से जाना ही नहीं चाहते हैं।

ऐसे ही अंधे व्यक्ति बाद में खुद को मार्ग का ज्ञानी बताकर दूसरों को मार्ग समझाने लगते हैं। लेकिन किसी भी अंधे के बताये गये मार्ग पर चलने से कभी किसी का भला संभव हो सकता है क्या?

हमारे नायक जेम्स को वह व्यक्ति भगवान स्वरूप लगने लगता है। वह उसके चरण पकड़ लेता है और कहता है कि मुझे शीध्र ही इस स्थान से निकाल बाहर कर दो। मैं अब एक पल भी यहां नहीं रहना चाहता हूं। मैं इस अंधत्व से अत्यन्त परेशान हूं।

तब करूणा-मूर्ति ऐसे वह सदगुरू जेम्स को अपने साथ बाहर ले जाते हैं और उसका इलाज करवाकर उसे द्रष्टि प्रदान करवा देते हैं। इसके पश्चात जेम्स शीध्र ही अपने देश चला जाता है और वहां पर अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक रहने लगता है।

हे प्रभो, इस दृष्टांत में कई गंभीर भाव भरे हुये हैं जिन्हें आपको बहुत गहराई से विचार करना चाहिये।

इस कथा में आया गांव चतुर्गति रूपी इस संसार को दर्शाता है, जहां पर तरह-तरह के जीव निवास करते हैं।

समस्त केवलज्ञानी भगवन्त देख व जान रहे हैं कि ये जीव अनादिकाल से अंधे हैं लेकिन ये प्राणी स्वयं को अंधा न मानकर कभी कुछ मानते हैं कभी कुछ। एक जन्म के बाद दूसरे जन्म में भ्रमण के साथ इनकी मान्यता भी बदलती रहती हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है:-

1. एक इन्द्रिय से पंचेन्द्रीय असंज्ञी अवस्था में अनन्तानन्त जीव राशि रह रही है। उन्हें अपने अंधेत्वपने का भान ही नहीं हो सकता है तो फिर वे उसे दूर करने का उपाय किस तरह कर सकते हैं।

2. उपरोक्त जीवराशि का अनन्तवां भाग ही पंचेन्द्रिय संज्ञी-पना में आता है और उसमें भी सामान्यत: देव भव, तिर्यन्च भव व नरक भव में अपने अंधत्व पर द्रष्टि ही नहीं जाती है। अत: वे उसे दूर नहीं कर पाते हैं।

3. उपरोक्त पंचेन्द्रिय संज्ञी जीव राशि के असंख्यवें भाग को ही महाभाग्य से मनुष्यपना मिलता है।

अब इस मनुष्यभव के अंधे जीवों को निम्न पांच भागों में बांटा जा सकता है -

1: अधिकांश मनुष्य तो अपने संसार के रागादि के कार्यों में ही मग्न रहते हैं। उन्हें होश ही नहीं रहता है। वे तो उपरोक्त कथा में आये अधिकांश अंधे गांव वालों की तरह ही अपना जीवन खाने, कमाने और परिवार को सम्भालने में व्यतीत कर देते हैं।

2: कुछ अंधे जीव भक्ति-पूजा, जप-तप, स्वाध्याय आदि में संतुष्ट रहकर अपना भला मानते हैं और सोचते हैं कि इस तरह करने पर उन्हें दिव्य द्रष्टि प्राप्त होगी लेकिन उन्हें वर्तमान के अंधत्व की कोई बैचेनी या पीड़ा नहीं रहती है।

3: अत्यल्प संख्या में कुछ अंधे ऐसे भी हैं जिन्होंने किसी द्रष्टिवान व्यक्ति से आँख या चक्षु होने के फायदे सुन रखे होते हैं या पढ़ रखे होते हैं. अत: वे इस द्रष्टि रूपी आत्मा के मिलने से होने वाले लाभों की ही दिन-रात चर्चा करते हुये अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत कर देते हैं; किन्तु उन्हें भी वर्तमान में स्वयं को न देख पाने के अंधत्व की कोई पीड़ा महसूस नहीं होती है।

सुख से संतुष्ट एवं दुख से असंतुष्ट रहते हुये वे खुद के चैतन्य परमात्मा की लाटरी खुलने की इच्छा, प्रतीक्षा करते रहते हैं।

4: बहुत थोड़े लेकिन बहुत खतरनाक अंधे जीव ऐसे भी होते हैं जिन्हें खुद तो मार्ग दिखाई नहीं देता है फिर भी वे दूसरों को मार्ग बताने का छल करते रहते हैं।

उन्होने चैतन्यदेव के बारे में किसी सदगुरू से सुना होता है या ग्रंथों में पढ़ा होता है लेकिन रूचि नहीं होने से उन्हें उसकी प्राप्ति नहीं होती है। अत: उनके बताये मार्ग पर चलकर उनके अनुयायी लोग भटकते ही रहते हैं.

5: कुछ ऐसे भी प्राणी होते हैं जो होते तो अंधे हैं, परन्तु घोषणा करते हैं कि मैं द्रष्टिवान हूं, मुझे मार्ग स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मेरे बताये मार्ग पर अगर आप चलोगे तो आपको अपने आत्मदेव की प्राप्ति अवश्य होगी।

ऐसे जीव खुद तो अनंत काल के लिए डूबते ही हैं, दूसरों को भी डुबोते हैं।

हे चैतन्यदेव, कोई भी अंधा व्यक्ति कितना भी सम्भलकर चलने का प्रयत्न करे, किन्तु वह खुद तो ठोकर खायेगा ही, साथ ही उसके शिष्य भी भटकेंगे ही।

अत: उपरोक्त पांचों तरह के मनुष्य जन्म आपने अनन्त बार धारण किये हैं, फिर भी आपका अनादिकाल से अभी तक भव-भ्रमण का अंत नहीं हुआ है। अत: अब तो आपके नीचे की भूमि खिसक जानी चाहिये और आपको लगना चाहिये कि आप

मिथ्यात्व रूपी अंधत्व की अनन्त गहराई में गिरते जा रहे हो और कोई आपको सम्भालने वाला नहीं है।
ऐसे ही दशा हमारी इस कथा के नायक जेम्स की होती है जो अंधत्व की पीड़ा से इतना परेशान रहता है कि उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है और वह इसे दूर करने का उपाय ढूंढ़ता रहता है।
अतः अब आप भी निश्चय से मान लो कि आपका परिवार तो आपका चेतन द्रव्य और उसके अनन्त गुण हैं।
इनमें से प्रत्येक गुण में अनन्त शक्ति भरी हुई है, जो आपको सदाकाल अक्षत सुख पहुंचाने में समर्थ है।
फिर भी आप अपने इस परिवार को छोड़कर पर में सुख प्राप्ति की आशा में घनघोर अंधकार रूपी इस संसार में इधर-उधर भटक रहे हो और आप अपनी ही निज वस्तु अपने परमात्म स्वरुप और उसके अक्षय अनंत वैभव को ही देख नहीं पा रहे हो।
यही आपके निज स्वरूप की प्राप्ति में बाधा पहुंचाने वाला मुख्य कारण है।
इस अंधत्व की पीड़ा को जो भी निकट भव्य जिज्ञासु जीव जानता है, मानता है और अनुभव करता है, वही उसे दूर करने का उपाय कर सकता है।
अन्य सभी अंधे जीव उपरोक्त तरह से इस संसार रूपी रंगमंच में बारी-बारी से चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक भूमिका में अनन्त बार आते रहे हैं औेर आगे भी आते रहेंगे।
ॐ शांति.

6 आपकी अशुद्धि ही आपकी शुद्धता को ही दर्शाती है

किसी प्राणी को अज्ञान अवस्था के कारण घनघोर दुख के समुद्र में अति बेचैन और आकुल-व्याकुल पाकर अत्यन्त करूणाभाव से श्री सदगुरू उससे उसकी परेशानी का कारण पूछते हैं।
तब वह जीव अपनी व्यथा बतलाता है कि अनादिकाल से जो-जो भी मैंने दुष्कर्म किये हैं, वे सब अब उदय में आ रहे हैं।
यह जो अनादि की मिथ्यात्व की अनन्तानुबंधी कर्मो की अशुद्धि है, उसको मैं बहुत प्रयत्न करने पर भी दूर नहीं कर पा रहा हूं। इसके कारण मैं इस मनुष्यभव में अपने स्वरूप को पाने का अपना एकमात्र कार्य नहीं कर पा रहा हूं।
इसलिए यह विकारी अवस्था ही मेरे इस दुख का कारण है।

अत: हे प्रभो, मुझे सच्चे सुख का स्वरूप समझाकर मेरे इस विकार को दूर करो।
शिष्य की ऐसी सच्ची लगन देखकर श्री सदगुरू अपने अंतर-तत्व में डूब जाते हैं और कुछ समय पश्चात बाहर आकर कहते हैं कि -

1. हे वत्स, जिस अशुद्धि को आप अहितकारी मानकर खेद-खिन्न हो रहे हो, व्यथित हो रहे हो,
2. वह अशुद्धि तो वास्तव में आपके चैतन्य की शुद्धता को ही दर्शा रही है।
3. अशुद्धता का दिखना भी आपके शुद्धत्वपने के कारण ही संभव है।
4. अत: अब आप नि:संकोच होकर अपने चेतनपने, शुद्धत्वपने को धारण करो,
5. तथा उसी में जम जाओ, रम जाओ, समा जाओ।

श्री सदगुरू के ऐसे अदभुत विस्मयकारी वचन सुनकर शिष्य हक्का-बक्का रह गया। उसने कहा कि -

1. हे प्रभो आप क्या कह रहे हैं?
2. मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है।
3. अशुद्धता ही शुद्धता की सूचक है; यह कैसे संभव है?
4. अंधकार ही प्रकाश को जणाता है, इसकी कल्पना ही असंभव सी लगती है।

तब शांति-सागर में रमण करने वाले श्री सदगुरू गहन गंभीर आवाज में शिष्य को निम्न उदाहरण से समझाते हैं :-
हे चैतन्य प्रभाकर, बहुत ध्यान से सुनो। एक बार एक छोटा अबोध बालक बगीचे में लगे हुए एक अति-विशाल दर्पण के सामने खड़ा होकर कौतूहल-वश कई तरह की क्रीड़ायें कर रहा था।
उसे उस दर्पण में बहुत से सुन्दर पेड़-पौधे, पहाड़, घर-मकान आदि दिखाई दे रहे थे। वह बालक इस प्राकृतिक छटा पर मुग्ध हो जाता है। वह समझता है कि ये वस्तुयें दर्पण में ही भरी हुई हैं।
उसे उस दर्पण के स्वरूप का, उसकी स्वच्छता का रंचमात्र भी भान नहीं होता है।
सहसा वह बालक चौंक जाता है।
उसे उस दर्पण में लपलपाती हुई अति-विशाल अग्नि की लपटें दिखती हैं, जो उन पेड़-पौधों, मकान आदि को भस्म करती हुई तेजी से उसकी बढ़ रही हैं। वह बालक इतना भोला होता है कि वह यह नही समझ पा रहा है कि यह अग्नि उसके पीछे की ओर जल रही है।

वह तो भ्रमवश दर्पण में दिख रही अग्नि को ही सच मानकर पीछे खिसकता जाता है और शीध्र ही जल रही अग्नि की लपटों में घिरकर अपना सर्वनाश कर लेता है।
हे ज्ञान-पुंज, आप इस दृष्टांत में वर्णित अबोध बालक पर करुणा कर रहे होगे कि कैसे उसने अपनी नासमझी में अपने आपको जला डाला?
आपके अनुसार वह बालक कितना मूर्ख था कि जिसे इतना भी पता नहीं है कि कभी दर्पण में जल रही अग्नि भी सच्ची हो सकती है?

किन्तु जरा विचार तो करो, उस बालक ने तो अपनी नादानी में अपने एक ही भव या जन्म का नाश किया है; किन्तु आप तो अनादिकाल से आजतक अपनी मूर्खतावश अपने जड़पने से अपने खुद के अनन्तभवों का नाश कर रहे हो और फिर भी दूसरों पर

करुणा कर रहे हो और उन्हें उपदेश देकर समझाने की कोशिश कर रहे हो कि यह सही है और यह गलत।

हे मेरे चैतन्य-चमत्कार, थोड़ा विचार तो करो कि -

1. आप कौन हो?
2. कहां से आये हो?
3. कहां पर आपको जाना है?
4. आपका स्वरूप कैसा है?
5. आपको अपने आपको कैसा मानना है,
6. आपको अपने आपको कैसा पहिचानना है?

आइये उपरोक्त उदाहरण के माध्यम से इस पर और भी गंभीर चर्चा करें -

हे भव्य जन, वर्तमान में जो कुछ भी आप सोच रहे हो, जान रहे हो, मान रहे हो, महसूस कर रहे हो, वह सब मात्र आपके आत्म-दर्पण में झलकती, परद्रव्यों की परछाई या छवि ही है।

इस चारों और फैले हुये कर्मों के जाल से आप व्याकुल हो रहे हो और आपको लगता है कि यह अत्यन्त विकट कर्म रूपी अग्नि आपको जलाकर नष्ट कर देगी।

किन्तु अगर आप थोड़ा विचार करो, तो आपको ज्ञात होगा कि जिस तरह किसी भी दर्पण की स्वच्छता का पैमाना हम उसमें झलकते हुये पदार्थो की स्पष्टता को ही मानते हैं.

इसी तरह वास्तव में यह जो आपको कर्मो की प्रतिच्छाया दिख रही है, वह वास्तव में आपकी अशुद्धता नहीं, बल्कि आपके ही खुद के आत्म-दर्पण की स्वच्छता, निर्मलता, शुद्धता को ही दर्शाती है; उसकी ही उदधोषणा करती है।

अहो, बहुत अदभुत कथन है यह।

सीधे आत्मा की अनन्त गहराई में ले जावे, ऐसा कथन है यह।

आपका आत्मद्रव्य इतना निर्मल है, शुद्ध है कि उसमें झलकने वाली प्रत्येक वस्तु भी इतनी स्पष्ट हो उठती है कि आप भ्रम से उसे वास्तविक मानकर उससे राग-द्वेष कर बैठते हो और फिर अपने को विकारी मानकर उस दोष का कारण पर-पदार्थो को मानकर उसे अपने आत्म-दर्पण में से दूर करने की चेष्टा में लग जाते हो।

लेकिन किसी भी परपदार्थो को दर्पण में से दूर करना, उसमें फेरफार करना तुम्हारे आत्म-दर्पण के स्वभाव के विरूद्ध होने से यह कार्य करने में आप असमर्थ होते हो।

तब आप अपने आपको अत्यन्त विकारी, अधम, नीच और कर्मों में लिप्त मानकर खेद-खिन्न हो उठते हो।

इस तरह आपने अनादिकाल से इन परपदार्थों रूपी काल्पनिक अशुद्धता को दूर करने की वृथा चेष्टा की है और अपने अमूल्य अनन्तभवों का नाश किया है।

हे त्रिलोकपति, इस भव में अब यह अपूर्व अवसर आया है कि एक बार, सिर्फ एक बार आप यह जान लो कि -

1. अनादि से आपने चाहे कितने ही पाप क्यों न किये हो,
2. कर्मो की गठरी चाहे कितनी भी विशाल क्यों न हो,
3. अज्ञान का घनघोर अंधेरा चाहे कितना ही पुराना क्यों न हो;
4. किन्तु यह सभी अशुद्धि वास्तव में आपके आत्म-दर्पण में झलक रही प्रतिछाया ही है,
5. पर पदार्थो की छवि है,
6. जो मात्र आपके निजात्मा रूपी दर्पण की टंकोत्कीर्णता, अविकारिता, निर्मलता, स्पष्टता, शुद्धता को ही दर्शाती है।
7. अहो बहुत ही अलौकिक चर्चा निकली है भाई,
8. प्रत्येक जीव उस अबोध बालक के समान अपनी इस अनादि की बालवृत्ति को त्याग कर अब चैतन्य रूपी तरुण अवस्था को धारण करें
9. अपनी अशुद्धता को अपना कलंक मानना छोड़कर इस अशुद्धता को झलकाने वाले अपने परम-शुद्ध चैतन्य स्वभाव को जाने-माने,
10. उसी में रमण होकर सदाकाल के लिए इस सुख के समुद्र में लीन रहे,
11. बस यही मंगल भावना भाते हैं।

7 एक चिंगारी ही काफी है

शिष्य- हे प्रभो, मैं प्रयत्न कर-कर के थक गया हूं, फिर भी ये दुष्ट कर्म मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं और मुझे चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करा-कराकर मुझे अत्यन्त दुखी कर रहे हैं।

अतः अब तो भगवन, ऐसा मार्ग बताओ, जिससे मैं इन कर्मों से निवृत्त हो सकूं।

सदगुरू - हे शिष्य, ध्यान से सुन। कुछ समय पूर्व समीप के गांव से एक भोलाराम नामक व्यक्ति मेरे पास आया था। वह बहुत दुखी था, क्योकि गांव के जमीन्दार नें

उसकी झोपड़ी को तोड़कर फिर उसकी जमीन भी छीन कर, उसे मार-पीट कर भगा दिया था।
अब वह और उसका परिवार बेसहारा थे। उसके पास रहने की भी कोई जगह नहीं थी, अत: सदगुरू करुणावश उसे समझाते हैं कि यह जो सामने जंगल है, उसमें थोड़ा आगे जाने पर तुमको एक विशाल मैदान मिलेगा.
यह मेरा खुद के स्वामित्व वाला मेरा निजी स्थान है और उस स्थान पर एक लकड़ियों का विशाल ढेर रख हुआ है।
जंगल में जब भी कभी आंधी या तूफान आता है, तो पेड़ों की टहनियां आदि टूट जाती हैं। साथ ही वैसे भी सूखी हुई टहनियाँ पेड़ों से गिरती ही रहती हैं.
अतः कुछ आदिवासी लोग अपने आने-जाने के रास्ते में पड़ी इन लकड़ियों से आवागमन में बाधा पहुंचने के कारण इन लकड़ियों को इस मैदान में लाकर डाल देते हैं। अत: आप जाओ और इस लकड़ी के ढेर को जलाकर नष्ट कर दो और उस स्थान पर अपने लिये एक झोपड़ी बना कर आजीवन वहां पर सुखपूर्वक रहो।
कई महीनों बाद एक दिन फिर भोलाराम पहले से भी ज्यादा परेशान हालत में श्री सदगुरू के पास आता है और बताता है कि उसने एक जगह अलाव जलाया और वह इन लकड़ियों के ढेर से रोज लकड़ियां ले जाकर उसे अलाव में डाल रहा है। इस तरह कई महिने बीत जाने पर भी वह लकड़ियों का विशाल ढेर वैसा का वैसा ही दिख रहा है। किंचित भी कम नहीं हो रहा है। अत: अब वह अत्यन्त निराश और हताश हो गया है।
यह सुनकर श्री सदगुरू अत्यन्त गम्भीर हो उठते हैं।
फिर करुणावश वे भोलाराम को समझाते हैं कि इस तरह अगर तुम एक-एक लकड़ी को उठाकर जलाओगे, तो यह ढेर अनन्तकाल में भी नष्ट नहीं होगा; क्योंकि जितनी लकड़ियों को आप निकालते हो, उससे ज्यादा लकड़ियाँ ये आदिवासी उस ढेर में डाल देते हैं। अत: इस ढेर को समाप्त करने का बस एक ही उपाय है कि आप सीधे इस ढेर के किसी भी कोने में एक चिंगारी लगा दो।
देखो, इस ढेर के चारों तरफ अग्नि जलाना भी आवश्यक नहीं है, उसे नष्ट करने के लिये तो मात्र एक चिंगारी ही काफी है, जिसके लगते ही वह ढेर अल्प समय में स्वत: ही जलकर नष्ट हो जावेगा।

फिर तुम उस विशाल प्रदेश के स्वामी बन जाओगे.

इस बात को समझकर भोलाराम ऐसा ही करता है और उस विशाल भूमि का मालिक बनकर सुखपूर्वक रहने लगता है।

हे प्रभो, वर्तमान में जैसी गलती भोलाराम ने की थी, वैसी ही गलती आप भी कर रहे हो। आप कर्म रूपी लकड़ियों के विशाल ढेर में से सिर्फ कुछ कर्मों को हटाना चाहते हो । जब तक वे हटते हैं, तब तक अन्य कर्म पुन: आकर जुड़ जाते हैं। इस तरह यह मिथ्यात्व का सुमेरू पर्वत से भी विशाल ढेर रंच मात्र भी कम नहीं हो रहा है।

कई बार तो आप उस ढेर में से मोहवश शुभकर्म रूपी कीमती इमारती लकड़ियों को रागभाव से अपने पास रखना चाहते हो और अशुभ कर्म रूपी जलाउ लकड़ी द्वेष भाव से नष्ट करना चाहते हो।

इस तरह यह तो राग-द्वेष की ही क्रिया हुई जिससे आपका कोई भी भला होना संभव नहीं है।

ऐसे जीव दूरान्दूर भव्य अथवा अभव्य जीवों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

वे अनन्तकाल से अपने निज-घर को पाने की कोशिश कर रहे हैं किन्तु अपने परमात्म-स्वरूप को आजतक नहीं समझ सके हैं।

अत: अब तो हे ज्ञान प्रभाकर, इस भव में अब तो ऐसा कार्य करो, जो आज तक आपने नहीं किया है।

वह है अपनी आत्म-सत्ता को मानना.

बस एक बार अगर आपने अपने आत्म-स्वरूप को मान लिया, तो फिर जिस तरह आप अपने वस्त्र बदलते हुए निर्मोही रहते हो, उसी तरह आप इस शरीर को बदलते हुए भी इसके प्रति ममत्व रहित हो जाओगे; क्योंकि तब आपकी द्रष्टि तो अपने अनादि-अनन्त स्वरूप पर ही होगी।

ऐसे अपने परमात्म-स्वरूप को पहचानकर जब आप इस भेद-ज्ञानरूपी चिंगारी को इन कर्मपुंजों के पास ले जाओगे, तो वे सहजरूप से अपने आप ही जलकर नष्ट हो जावेंगे।

हे प्रभो,

1. अपने आत्मा के मार्ग को,
2. सत्य के मार्ग को,
3. धर्म के मार्ग को,
4. निज-स्वभाव के मार्ग को,

पाने के लिये इस संसार में कोई बहुत मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

बस अपनी द्रष्टि को पर से समेटकर स्वमुखी करना पड़ता है।

इसके लिये आप कहीं पर भी खड़े होओ, चाहे देव गति में, या मनुष्य गति में, या तिर्यन्च गति में या नरक गति में; बस अपनी द्रष्टि की दिशा बदलकर उसे आत्ममुखी कर लो।

फिर तो अपनी-अपनी सामर्थ्य है, इस मुक्ति के पथ पर तो -

1. कोई जीव पैदल चलता है,
2. कोई जीव बैलगाड़ी में
3. कोई जीव मोटरकार में,
4. कोई जीव हवाईजहाज से और
5. भरत चक्रवर्ती सरीखे जीव अल्प समय में राकेट की भांति गमन कर अपने मोक्ष पद में विराजते हैं।

अत: समस्त विकल्पों का त्याग कर अब अपने आपकी, खुद की रूचि करके मुक्ति-मार्ग पर चलना शुरू कर दो।

8 अंधकार को चीरती प्रकाश की एक किरण

हे प्रभो, यह जीव अनादिकाल से अपने स्वरूप को भूलकर अमावस्या की काली घनघोर अंधियारी रात रूपी इस जड़ संसार में पड़ा हुआ है, किन्तु अत्यंत तीक्ष्ण मोह रूपी मदिरा का सेवन किया होने के कारण उसे स्वप्नवत अवस्था में यह जड़ संसार अत्यंत प्रिय लग रहा है।

यह अपने निज स्वरूप को भूलकर पर पदार्थों को अपना मान रहा है, जड़ को चेतन मानकर अंगीकार कर रहा है।

हे प्रभो, अभी आप इस वास्तविकता को नही पहचान रहे हो। आपको पांच इन्द्रिय औेर मन द्वारा दर्शित यह संसार ही सच्चा लग रहा है।

इसी में आप अनुकूल और प्रतिकूल पदार्थो की कल्पना कर सुख-दुख का वेदन कर रहे हो।

कदाचित आपके महान पुण्योदय से जब कोई श्री सदगुरू आपको समझाते हैं कि हे आत्मन, आपका सदाकाल रहने वाला सच्चा सुख आपकी आत्मा में है, तो आप यह मान लेते हो कि जैसा सुख आपको वर्तमान में कभी-कभी मिल रहा है, उसी जाति का ही कोई उत्कृष्ट सुख आपकी आत्मा में होगा।

तब आप इसी आत्मा को पाने की कामना, इच्छा करने लगते हो, किंतु जिस तरह वंध्या के पुत्र की शादी असंभव है, उसी तरह आपकी भी इसी तरह की खोटी मिथ्या मान्यता होने के कारण आपको तुम्हारे आत्मा की प्राप्ति असंभव हो जाती है।

अब फिर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि -

1. आत्मा का सच्चा स्वरूप क्या है?
2. क्यों यह जीव अनादि से उसे प्राप्त नहीं कर पाया है?
3. वर्तमान में प्रत्येक जीव को क्या करना चाहिए कि उसे निज आत्मा की प्राप्ति हो सके?

उपरोक्त प्रश्न बहुत गंभीर हैं और प्रत्येक जीव को ऐसा समझना चाहिये कि इस मनुष्य भव का एकमात्र कर्तव्य अपने स्वरूप की प्राप्ति करना ही है।

हे प्रभो, अगर आप ऐसा न करके इस संसार में सुख की प्राप्ति के लिये अपने समस्त प्रयत्नों के साथ लगे हुए हो; तो यह मान लो कि आप ठंड की पीड़ा से व्याकुल होकर अंगीठी में कोयले की जगह अत्यंत मूल्यवान हीरे डालकर उसकी गरमी से अपने हाथ सेंक रहे हो।

इसी तरह आप भी इस हीरे जैसे नर-भव, मनुष्य भव को जलाकर खत्म करके इस संसार के सुखों की प्राप्ति रहे हो और अपने आपको भूल इस संसार में मग्न हो रहे हो। यही कारण है कि आप अनादिकाल से कदाचित आत्मा की भावना भाते हुए भी उसे प्राप्त नहीं कर पाए हो।

हे प्रभो, शब्दों में तो आपने आत्मा का स्वरूप अनंत बार भाया है कि आप -

1. सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी हो
2. अनादि निधन हो
3. चैतन्यधन हो
4. परमज्योतिस्वरूप हो
5. त्रिलोकपति हो
6. अनंत शक्तिपुंज हो
7. अनंत गुणाधिपति हो
8. साक्षीभाव से विचरण करने वाले हो
9. अदभुत अलौकिक हो
10. परमपिता परमेश्वर हो
11. भगवान-आत्मा हो

किंतु ऐसी भावना भाते हुए भी आपको अपने आपको स्वीकार करने से कौन रोक रहा है?

अतः आप ऐसे अपने स्वभाव को पहचानकर, बस अब आप इस विलक्षण स्वरूप को हृदयंगम कर इसी में जम जाओ, रम जाओ, समा जाओ; तभी आपका कल्याण हो सकता है।

हे प्रभो, आप यह मान जो कि जब तक आप रात को रात नहीं मानोगे, तब तक आपके दिन को दिन कहने का प्रमाण क्या है?

इसी तरह आप चाहे हर समय आत्मा-आत्मा या दिन-दिन कहा करो, परन्तु आपके उस आत्मा का प्रमाण क्या है, क्योंकि आपने रात को रात नहीं समझा है और फिर यह तो अनादि की घनघोर मिथ्यातत्व रूपी काली रात है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक में आता हैं कि शराबी की बात का प्रमाण क्या?

क्योकि कभी वह मां को मां कहता है तो कभी मां को पत्नी कहता है।

इसी तरह हे प्रभो, आप भी अब मतवाले मत बनो.
हे देव, सच्चाई यह है कि जब तक आपकी इस आत्मतत्व में सच्ची रूचि नहीं होगी,
जब तक आपको इस संसार में अंधेरा ही अंधेरा नही दिखेगा,
तथा जब तक आप अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न नही करोगे,
तब तक हे भव्यजन, आपका कल्याण नहीं होगा,
तथा तब तक आप पामरता को त्याग कर चैतन्य प्रभु नही बन सकेंगे।

9 कल्पना का संसार

अनादिकाल से आपने अनंत बार तीर्थंकर भगवंतों की वाणी सुनी, सदगुरूओं की देशना पाई, किंतु फिर भी इस संसार को आपने दुःख का सागर नहीं माना।

यह तो ऐसा ही हुआ कि घनघोर अंधकार में डूबी हुई एक गुफा में अगर कोई व्यक्ति टार्च लेकर घुसे, तो उस गुफा में रहने वाले चूहे उस प्रकाश में अपनी आंखे चुंधिया जाने के कारण इधर-उधर भागने लगते हैं।

वे उस प्रकाश को ग्रहण करने की कोई भी कोशिश नहीं करते हैं, क्योकि वे उस अंधेरे को ही अपना स्वरूप समझकर उसी में अपनी कल्पना का संसार बसा लेते हैं और उसी में मग्न रहते हैं।

उनको यह अंधेरा नहीं दिखता है, बल्कि अपना काल्पनिक संसार दिखता है और वे उसी मे विचरण करते रहते हैं।

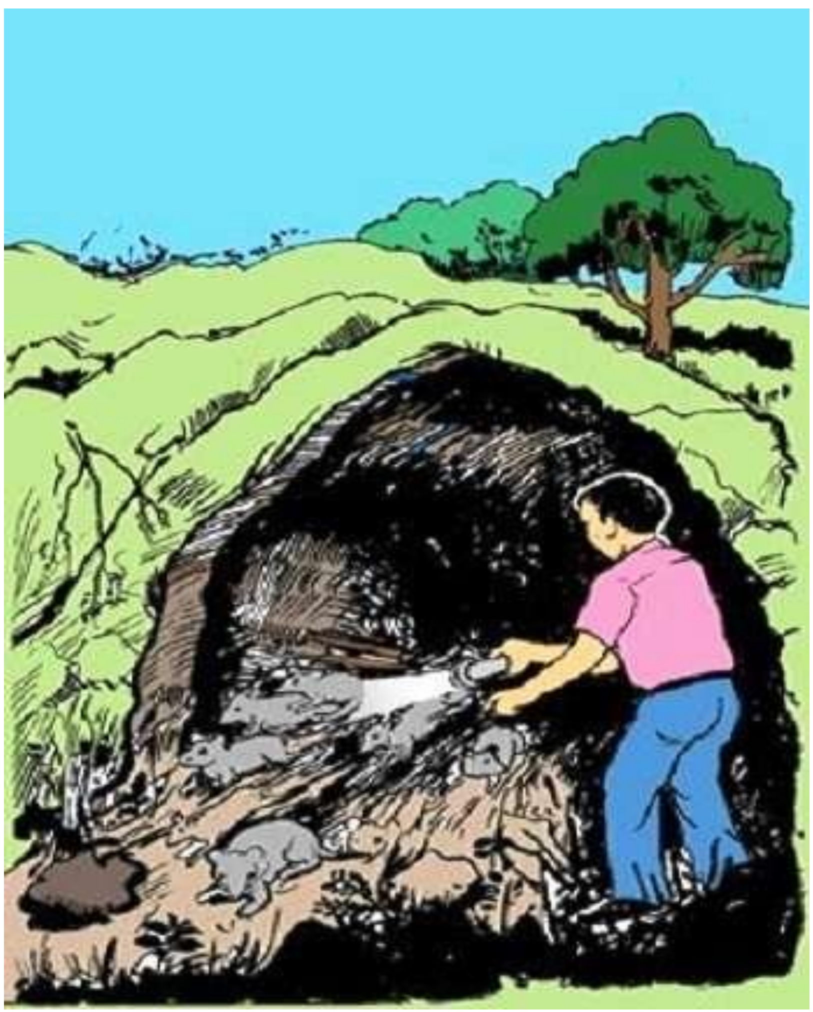

हे चैतन्यदेव, आप भी अपने अनादि-निधन भगवतस्वरूप चैतन्यघन परमात्मा को भूलकर चूहों के समान घोर अंधियारे में रहते हुए अपने आपको कल्पना के संसार में मगन रख रहे हों और फिर भी एक बात बड़ी विचित्र है कि यह सब होने पर भी आप खुद को ज्ञानी-ध्यानी, धर्मात्मा मानकर संतुष्ट हो रहे हो और दूसरों को भी धर्म समझाने की कोशिश कर रहे हो।

कदाचित कोई सतपुरूष आपके अत्यंत पुण्योदय के योग से आपके पास आता है और अपनी ज्ञान किरण से आपके अंधियारे को प्रकाशित करने की कोशिश करता है; तो आप उसके अमृत वचनों को ग्रहण कर आत्मसात करने के बजाय उलटे इधर-उधर भागने लगते हो।

कोई जीव कदाचित रूककर कौतूहलवश सुनते भी हैं, तो उन वचनों को ग्रहण नहीं करते हैं, आत्मसात नहीं करते हैं और यह नहीं मानते हैं कि -

1. मेरा स्वरूप तो जगमग-जगमग है,
2. तीन लोक को प्रकाशित करने वाला है,
3. अखण्ड अविनाशी, सहज सुखदायक है।

हे प्रभो, वास्तव में आप इस अंधेरे के इतने अभ्यस्त हो गए हो कि इस अंधेरे रूपी संसार की ही कल्पना में अपना स्वरूप मानते हो । इसी में रहते हुए सुख की कामना करते हो और दु:खो से मुक्ति चाहते हो।

लेकिन जब आपके महा परम भाग्य से कोई सदगुरू अत्यंत करूणावश आपको बतलाते हैं कि-

- आपकी आत्मा में ही अनन्त सुख भरा पड़ा है।

तो आप उसकी भी इच्छा, वांछा और कामना संसार के ही दु:खो को टालने और संसार के ही समान सुखों की प्राप्ति के लिए करने लगते हो।

आप यह मानने के लिए किंचित भी तैयार नहीं हो कि यह अंधेरा रूपी संसार ही दुख का एकमात्र कारण है और जब इसका लोप होगा, तभी आपको सच्चा सुख प्रगटेगा।

तटस्थ बुद्धि से देखा जाए तो वास्तव में आपको इस अंधेरे को हटाना नहीं है। क्योंकि आप इसके कर्ता हो ही नहीं, इसलिये इसके प्रति जो आपकी एकत्व बुद्धि है, राग बुद्धि हैं, अहमपना है, उसको आपको आप से ही दूर करना है।

आज तक किसी ने भी अंधेरे को न तो पैदा किया है और न ही कर सकता है।

हां आप अगर चाहो तो अपने अंतरमन की प्रकाश की किरण, ज्ञान की किरण से इस कल्पना के संसार को देखो, तो यह काल्पनिक अंधेरा अपने आप ही, उसी तरह नष्ट हो जाएगा, जिस तरह स्वप्न अपने आप खत्म हो जाते हैं।

अहो, अभी यह जो अंधेरा तुम्हें दिख रहा है, वह मात्र आपकी शिथिलता, कमजोरी, राग-लोलुपता, मोहांधता को ही दर्षा रहा है।

हे प्रभो, इस संसार में आपको दिख रहे समस्त विस्तार का सार यह है कि -

1. **आप अपने इस अदभुत, अचल, अविकारी, अविनाशी, शाश्वत, सहज, सुखदायक, त्रिकालवर्ती चैतन्य-सूर्य को पहचान लो.**
2. **फिर आप स्वयं ही ऐसे हो, ऐसा मानकर उसी में रम जाओ, जम जाओ समा जाओ।**
3. **तब आप स्वयं देखोगे कि आपके इस चैतन्य-रत्नाकर ज्ञान-सूर्य की मात्र एक किरण से इस अनादि के अंधकार रूपी संसार का सहज लीलामात्र में ही नाश हो जाऐगा.**
4. **इसमें आपका कुछ भी, कोई भी कर्तत्व नहीं रहेगा।**
5. **ऐसे अपने निरालंबी, निर्मल, निर्भय, नित्य, अविकल, सहजानंदी स्वरूप को जानकर प्रत्येक जीव उसी में रमण करें, यही मंगल भावना भाते हैं।**

10 सच्चा सुख प्राप्त करें

इस संसार में हर प्राणी सुख चाहता है और दुखों से दूर रहना चाहता है।

लेकिन इस संसार में वह जन्म लेते से ही सुख पाने के लिये किन-किन दुखो में निमग्न हो जाता है,

किन-किन दुखो को पार करके वह सुख पाने की चेष्टा करता है, यह आप जानते ही है।

एक छोटे से छोटा सुख पाने के लिये भी आपको घंटो मेहनत एवं कष्टों के पहाड़ जूझना पड़ता है, तब कही जाकर वह सुख आपको मिलता है।

अपने परिवार के लिये आजीविका कमाने के लिये आपको 8 से 12 घंटे मेहनत करनी पड़ती है।

जो हमारे भाई व्यापार करते हैं, उन्हें तो कई बार 12 से 16 घंटे भी मेहनत करनी पडती है; तब कही वे अपने घर के लिये, अपने परिवार के लिये, अपने बाल-बच्चो के लिये सुख की सामग्री इकठठी कर पाते हैं, उन्हें भरपेट भोजन करा पाते हैं।

कई ऐसे भी हमारे दीनहीन भाई लोग हैं जो दिन-रात मेहनत करने पर भी, दिन-रात पसीना बहाने पर भी, पत्थर फोड़ने पर भी दो टाइम के लिये अपने परिवार के भोजन की व्यवस्था भी नहीं कर पाते हैं।

इस तरह से इस संसार की यह स्थिति सबको दिखती है लेकिन कोई भी दूसरों के दुख से दुखी नहीं होता है।

जब स्वयं उसको कष्ट आता है, तब ही वह दुखी होता है।

कहा भी है कि जो दूसरों की पीड़ा समझता है, वही उस दुख को दूर करने का सच्चा उपाय कर सकता है ।

हे प्रभु, जब आप किसी दूसरे व्यक्ति या जीव को देख रहे हो, तो वह वास्तव में कोई दूसरा व्यक्ति या जीव नहीं है, बल्कि आपके ही पूर्व के उस आकार और शक्ल के आपके अपने ही भव हैं,

आपके ही पिछले जन्मों के फोटोग्राफ हैं, जो दर्शाते हैं कि आपने भी किसी समय, किसी काल में इसी जगह इस भव में जन्म लिया था और आज ये जो पीड़ा उठा रहे हैं, वैसी ही आपकी भी पीड़ा रही है; वैसे ही दुख आपने भी उठाये हैं।

साथ ही आपको जो छोटे-छोटे जीव दिखते हैं, चौपाये और पशु-पक्षी दिखते हैं, उन सभी तरह के घनघोर दुख आप भी उठा रहे थे, आपने भी उस-उस योनि में जाकर वो सब दुख उठाये हैं।

अगर आप दूसरो का दुख देखकर उनका दुख दूर करने की चेष्टा करोगे, तो यह मान लो कि आप अपने आप को ही सुखी कर रहे हो और तब आपके उतने भव कट जायेंगे, उतने भव में जो दुख आने वाला है, वह कम हो जायेगा।
इस संसार का सुख कैसा होता है, देखिये आज हम एक बहुत सरल उदाहरण से इस पर चर्चा करते हैं।
यह संसारिक सुख तो दलदल में खिलने वाले कमल के फूल की तरह होता है। जहां पर पानी एवं कीचड़ होता है, वहां पर कमल भी खिल जाते हैं।

अब वह कमल, खिला हुआ कमल देखकर कोई उसको तोड़ने की इच्छा करे तो क्या होगा? अरे वह जैसे ही कमल को तोड़ने के लिये दलदल में उतरेगा, वो उस दलदल में फंसता जाएगा।

वहां से निकलने का जितना प्रयत्न करता जाएगा, उतना ही वो दलदल में समाता चला जाएगा। फिर एक समय ऐसा भी आयेगा कि वह पूरी तरह दलदल में फंसकर अपने आप को नष्ट कर देगा।

ऐसे घोर दुःख मयी इस संसार में आपको जो तरह-तरह के भौतिक सुख दिख रहे हैं, जिसको आप सुख कहते हो और जिसको पाने के लिये आप चेष्टा कर रहे हो; उसका परिणाम सिर्फ और सिर्फ दुःखमय ही होता है.

इस संसार में रूचि रखने से आप इस संसार रूपी दलदल में फंसते चले जाते हो और इस सांसारिक सुख को पाने की, सांसारिक सुख रुपी कमल के फूल को तोड़ने की

आप जितनी भी ज्यादा कोशिश करते हो, उतने ही दलदल में आप और ज्यादा उतरते चले जाते हो।

फिर एक समय ऐसा भी आता है कि जब आप इस दलदल में पूरी तरह फंस जाते हो। तब वहां से निकलने का आपको कोई मार्ग नहीं मिलता है और आप वही पर तड़फ-तड़फ कर अपने प्राण त्याग देते हो।

हे प्रभो, अब यह जो उदाहरण है, उससे यह सिद्धान्त बनता है कि यह जो मनुष्य भव आपको मिला है, वह बहुमूल्य है। काल्पनिक सुख रूपी कमल को प्राप्त करने के लिये इसको इस संसार के दलदल में मत फंसाओ अन्यथा तुम्हारे जीवन में बहुत मुश्किल आ पड़ेगी।

हे प्रभो, अब सिर्फ केवली भगवंत ही जानते हैं कि बड़ी मुश्किल से पता नहीं कितने पुण्य आपने किस योनि में, किस भव में किये होगें, जो आपको यह मनुष्य शरीर मिला है, सोचने की शक्ति मिली है, निर्णय करने की क्षमता आज आपके पास है.

अतः अब आप विचार कर सकते हो कि -

1. क्या अच्छा है, क्या बुरा है;
2. क्या आपको गृहण करना चाहिये, क्या छोड़ना चाहिये;
3. आपके लिये कौन सी वस्तु उपयोगी है
4. तथा कौन सी चीज आपके लिये फालतू है।

अब अगर आप यह निर्णय नहीं करोगे और संसार के सुखों को प्राप्त करने की मृगमरीचिका में और संसार के दुख के सागर में, दुखो के दलदल में अपने आपको फंसा दोगे, तो हे प्रभो, आपका क्या होगा?

फिर आप किस तरह से -

1. अपना कल्याण कर मुक्त हो सकते हो,
2. तीन लोक के नाथ बन सकते हो,
3. सर्वज्ञ बन सकते हो,
4. परमात्मा बन सकते हो,

ऐसा यह जो बहुत मुश्किल से प्राप्त किया हुआ आपका मनुष्य शरीर है, मनुष्य भव है, वह आप फिर पता नहीं, फिर कितने काल के बाद आप प्राप्त करोगे?

अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि अगर जल्द ही आपने अपना कल्याण नहीं किया तो आप पता नहीं फिर कितने काल के लिये पुनः मृतक समान होकर चौरासी लाख

योनियो में चले जाओगे और वहाँ पर जन्म-मरण करते-करते अनन्तानन्त दुखों को अनन्त काल तक भोगते रहोगे।

लेकिन आज आप इस मनुष्य भव में बूंद बराबर छोटा सा सुख प्राप्त करने की कोशिश में सालोंसाल आप अत्यंत मेहनत करते हो और फिर इस के परिणाम स्वरुप अनन्त-अनन्त काल के लिये दुख के सागर में डूब जाते हो, फिर आपका कल्याण कैसे हो सकता है?

सोचो प्रभु, जरा सोचो तो सही कि -

1. क्या ये आपकी स्वयं की बात नहीं हो रही है?
2. क्या ये आपकी ही चर्चा नहीं हो रही है?
3. क्या आपका ही ये भवितव्य नहीं है?
4. क्या आप इसमें आपका अपना भविष्य नहीं देख पा रहे हो?
5. क्या आपको विश्वास है कि आप जो कर रहे हो, वो कार्य आपने अनादि से अभी तक नहीं किया है?
6. जो कार्य वर्तमान में आप कर रहे हो, उससे आपका निश्चित तौर पर भला होगा ही; ऐसा आप अपने अन्दर से कह सकते है क्या?
7. अतः अपने मन की गहराइयों में अपने आप को टटोलिये।

शास्त्रो में आता है कि -

1. संसार के समस्त प्रकार के सतकार्य;
2. जो लोगो के अच्छे से अच्छे कार्य हो सकते हैं,
3. वो सब कार्य आपने अनन्त बार किये हैं।
4. लोगो की भलाई के लिये आपने अपना जीवन होम दिया है,
5. कुर्बान कर दिया है,
6. काम-क्रोध-लोभ-मोह सबको त्यागकर आपने अपने आप को दूसरे जीवों के भलाई में लगा दिया है,
7. आपने किसी-किसी जन्म में तो ऐसी उग्र तपस्या भी की है कि उस समय किसी दुश्मन ने आपकी चमड़ी नोच ली थी,
8. फिर इस चमड़ी को नोचकर उस जगह पर नमक डाल दिया था,
9. तब भी आपकी पलके भी नहीं कपकपांई।
10. शरीर की तकलीफ में शरीर की कपकपांहट तो दूर की बात है, आपकी तो उस समय पलके भी नहीं कपकपांई थीं।

अतः हे प्रभो, आपने इतना उच्च कोटि का तप भी कई बार किया, फिर भी यह सब करते हुए भी आपने -

1. अपने आप को जानने की
2. अपने आप को मानने की
3. अपने आप को समझने की
4. अपने आप को पाने की

किंचित भी कोशिश नहीं की है। इसका परिणाम यह हुआ कि इतना उच्च कोटि का कार्य करते हुए भी आप इस संसार में ही रहे हैं, जनम-मरण करते रहे हो, चौरासी लाख योनि में ही चक्कर लगाते रहे हो।

हां यह बात सत्य है कि आपने जो बाहर का उग्र पुरुषार्थ किया, तप किया, जो आपने संयम दिखाया, तो उसके फलस्वरूप आपको कुछ अच्छे उच्च कोटि के भव मिल गये। इन भवों में आपके पास बहुत सम्पदा भी रही, रुपया पैसा रहा या फिर आप स्वर्गलोक में जाकर देवता बने, उच्च कोटि के देवता बने लेकिन वह आयु पूरी होने के बाद फिर आप पुनः वापस इस चौरासी लाख योनियो के चक्रव्यूह में आ गए।

इस तरह आपका आज तक इतनी मेहनत करने पर कहीं से भी, कोई भी भला तो हुआ ही नहीं।

यह एक बहुत गम्भीर बात है जो आपके लिये समझना बहुत जरूरी है कि आप सर्वत्र सर्व प्रकार से बाहर में अच्छे कार्य करते हुए भी, जिनको संसार अच्छे कार्य कहता है, वो सब कार्य करते हुए भी आप अपने आप को ही नहीं पहचानते हो कि वो कार्य करने वाला कौन है?

आपने पिछले जन्मों में बहुत उच्च कोटि का तप किया है।

अब मैं आपसे पूछता हूं कि यह तप रुपी कार्य जिसने किया-

1. क्या वह अपने आप को जानता है?
2. क्या वह अपने आप को मानता हैं?
3. क्या वह अपने आप को पहचानता है?
4. वो कहाँ से आया है?
5. वो कहाँ पर जायेगा?
6. उसकी शक्ति क्या है?
7. उसका खुद का स्वरूप क्या है?

8. जो अपने आप को जान ही नहीं रहा है, फिर पूजा-पाठ, संयम, तप, त्याग आदि कौन कर रहा है?

9. यह तप आदि कार्य वह कहां पर कर रहा है?

देखो भाई, आपने बाह्य तप करके एक अच्छा कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप आपको एक अच्छा भव मिला और जब आप खोटा काम करते हो, तो खोटा भव मिलता है, अच्छा काम करते हो, तब अच्छा भव मिल जाता है।

लेकिन आपके सभी भवों का ही नाश हो, यह तभी संभव हो सकता है, जब आप -

1. अपने आप को पहचानो,
2. अपने आप में जमो,
3. अपने आप में रमो।

जब भी आप अपने आप को देख लेते हो, तब आपके आत्मा के भव ही नहीं होते हैं, क्योंकि आत्मा तो सदाकाल निर्बन्ध ही है, बंधन रहित ही है, उसमें भव का अत्यन्त-अत्यन्त अभाव है।

अष्टावक्र गीता के पहले ही अध्याय में प्रकरण 1, सूत्र 3, 6 और 7 में समझाया गया है कि -

1. तू मनुष्य शरीर मात्र नहीं है,
2. बल्कि चैतन्य आत्मा है,
3. तू चैतन्य सम्राट है
4. शरीर, मन और बुध्दि आदि तेरे इस संसार के भृत्य हैं,
5. जो तेरे आदेशानुसार सांसारिक कार्य करते हैं.
6. धर्म और अधर्म, सुख और दुःख मन के हैं;
7. वे तेरे लिए नहीं हैं.
8. तू मात्र चैतन्य आत्मा ही है
9. जो न कर्ता है, न भोक्ता है.
10. तू तो सर्वथा मुक्त ही है.
11. यह मुक्ति तेरा स्वभाव ही है.
12. यह आत्मा ही परमात्मा है
13. एवं यही द्रष्टा-ज्ञाता है.
14. इससे भिन्न कोई द्रष्टा नहीं है.
15. अतः यह आत्मा मुक्त ही है,
16. किसी भी बंधन में बंधा ही नहीं है.
17. अज्ञानी ही आत्मा से भिन्न
18. किसी एक ईश्वर को द्रष्टा, कर्म-फल प्रदाता एवं कर्ता मानते हैं;
19. ज्ञानी ऐसा नहीं मानते हैं.

अतः आपके चैतन्यदेव की महिमा अद्भुत है, अपार है, अकल्पनीय है, अद्भुत है और आध्यात्म की चर्चा ही सर्वोत्कृष्ट श्रेणी की चर्चा होती है,

ऐसी सच्ची द्रष्टि पाकर समस्त प्राणी अपने चैतन्यदेव को प्राप्त कर त्रिलोकपति बन अपना कल्याण करें, बस यही मंगल भावना भाते हैं।

11 क्रोधादि विकार मुझ में हैं ही नहीं

हे प्रभो, जब एक बार आप अपने अंदर, अपने आप को, अपने भगवान आत्मा को देख लेते हो, पहिचान लेते हो, अपने आप को जान लेते हो; तो फिर आपके आत्मा के अन्दर क्रोधादि विकारो का अत्यन्त अभाव होने से बाह्य में भी अपने आप ही सहज रूप से इनमें, आपके क्रोधादि विकारो में, कमी होने लगती है।

इसके लिये आपको प्रयत्न भी नहीं करना पड़ता है और वे खुद-ब-खुद ही कम होने लगते हैं। आपके अपने भगवान-आत्मा की सम्पूर्ण पहिचान होते ही बाह्य में भी उनका सम्पूर्ण अभाव हो जाता है।

कई लोग सोचते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है कि -

1. हमको कभी भी क्रोध आऐगा ही नही?
2. हमें क्रोध का विकल्प आयेगा ही नहीं, ऐसा कैसे संभव है?
3. क्रोध को तो हमें कोशिश करके कम करना ही पड़ेगा।
4. भले ही हमें कोई कितना भी गुस्सा दिलाए,
5. लेकिन हमको क्रोध नहीं करना है,
6. ऐसा हमारे मन में हमको दृढ़ निश्चय करना ही पड़ेगा.
7. कोशिश करनी ही पड़ेगी कि हम क्रोधित नहीं हों।
8. कोई कितना ही हमें डाटे, फटकारे, मारे,
9. हमारे जो शरीर के अंग हैं, उनको प्रताड़ित करे,
10. तो भी हमें क्रोध नहीं करना है।
11. इन सभी बातो को हमें ध्यान में रखना पड़ेगा,
12. तभी तो हम क्रोध नहीं कर सकेंगे.

हे प्रभो, वास्तविक स्थिति ऐसी नहीं होती है, क्योकि आप कितनी भी कोशिश करो किन्तु परिस्थितिवश क्रोधादि तो हो ही जाते हैं।

उसके लिये आप कितना भी विचार करो कि मैं क्रोध नहीं करु, मान नहीं करु, माया का अभाव करु, लोभ का त्याग करु, लेकिन आप अपनी कषाय कितनी भी मन्द कर लें, तो भी अनादिकाल से ऐसा देखने में आ रहा है कि किसी न किसी भव में निमित्त

पाकर रागादि भाव बढ़ जाते हैं। इस तरह अनादिकाल से आपका चौरासी लाख योनियों में गति भ्रमण हो रहा है।

अब अगर आपने-

1. अपने चैतन्य-आत्मा को लक्ष में ले लिया है।
2. अपने परमात्मा को लक्ष में ले लिया है।
3. अपने परमपद को पा लिया है।
4. फिर आपको बाह्य में जाने का किंचित भी प्रयोजन नहीं रहेगा।
5. तब आप आत्मा के अनंत सुख में सदाकाल रमना चाहोगे, समाना चाहोगे।
6. ये भव अच्छे हैं और ये भव बुरे, ऐसी आपकी बाह्य की अपेक्षा भी खतम हो जाएगी.
7. अगर आप अपने भगवान आत्मा के अन्दर चले जाते हो,
8. तो आप देखते हो कि आपके आत्मा के किसी भी प्रदेश मे क्रोध होता ही नही है।
9. आपके आत्मा के अनन्त गुणों मे से किसी भी गुण में क्रोध होता ही नही है।
10. आपके आत्मा की किसी भी शक्ति में क्रोध होता ही नही है।
11. आपके आत्मा की किसी भी क्रिया में क्रोध होता ही नही है।
12. जब आप अपने अंदर की इस वास्तविकता को पहिचानेंगे,
13. तब आपको न तो क्रोध का कोई कारण दिखेगा,
14. न आपको बाह्य में क्रोध उपजेगा,
15. और न ही क्रोध का कोई विकल्प आयेगा।
16. जब क्रोध का विकल्प ही नहीं आयेगा,
17. तो फिर आपको क्षमा भाव रखना चाहिये, ऐसा विकल्प भी नहीं उपजेगा या आयेगा;
18. किसी भी तरह का विकल्प ही नही आयेगा।

हे प्रभो, वास्तविकता यह है कि जब आपने अपने भगवान आत्मा को लक्ष में ले लेते हैं, तो फिर क्रोध करने का जो कारण है, वह होता ही नहीं है। जरा विचार तो करो कि क्रोध करने का, क्रोध होने का कारण क्या रहता है?

अहो, राग-द्वेष ही वह कारण होता है, जिससे आपके अंदर क्रोधादि की उत्पत्ति नहीं होती है।

कारण यह है कि किसी वस्तु से आप अगर बहुत राग करते हो और उस वस्तु को कोई नुकसान पहुंचता है या उस वस्तु का कोई नुकसान करता है, तो आप उस व्यक्ति या वस्तु पर क्रोधित हो उठते हो।

अब द्वेष कब और कैसे होता है? आइये अब इस पर भी चर्चा करते हैं -

1. जिससे आप द्वेष कर रहे हो, वो व्यक्ति या वस्तु अगर आपके पास आती है तो आप उस पर क्रोधित हो उठते हो, यहीं पर राग-द्वेष की उत्पत्ति होती है।
2. इस तरह राग-द्वेष का कारण कोई वस्तु या व्यक्ति ही होता है। जिस वस्तु या व्यक्ति पर आपका राग है, यदि उससे आपका बिछोह होता है, तो आप जिस व्यक्ति या परिस्थिति के कारण बिछोह होता है, उससे क्रोधित हो उठते हो.
3. तथा जिस वस्तु से आप द्वेष करते हो या जिस व्यक्ति से आप द्वेष करते हो, वो अगर समीप आता है, तो आप उस पर क्रोधित हो उठते हो।
4. अब अगर आपका इस वस्तु या व्यक्ति में हो रहा राग या द्वेष ही नष्ट हो जाता है, तो क्या होगा?
5. अरे फिर तो अपने आप ही आपकी क्रोध की क्रिया भी खत्म हो जाएगी।
6. आप कहोगे कि क्रोध मत करो, क्रोध मत करो, क्रोध मत करो; तो भाई कभी न कभी तो बहुत कोशिश करने पर भी किसी को भी क्रोध तो आऐगा ही,
7. लेकिन अगर आपने अपने राग-द्वेष को ही नष्ट कर दिया और अपने परमात्म-स्वरूप को जाना, वही रम गए, वही जम गए;
8. तब फिर कितनी ही राग-द्वेष या क्रोधादि की वस्तुऐं सामने आ जाए, तो भी आपको क्रोधादि उत्पन्न ही नहीं होगा।

हमारे एक बहुत बड़े आध्यात्मिक शास्त्र के लेखक आचार्य-कल्प पं. टोडरमलजी हुए है। वो एक बार जब मोक्ष मार्ग प्रकाशक की रचना कर रहे थे। उस समय वे दिन रात अपने शास्त्र की रचना में, अपना जो परमात्म तत्व है, उसकी महिमा का बखान करने में ही लीन रहे और इसतरह उन्होने इस मोक्ष मार्ग प्रकाशक नामक अद्भुत शास्त्र की रचना की।

अहो, मोक्ष के मार्ग को बताने वाला, उसे प्रकाशित करने वाला, प्रत्येक जीव को मोक्ष के मार्ग में ले जाने वाला, ऐसा बहुत ही अदभुत शास्त्र उन्होंने लिखा है।

वे जब इस शास्त्र की रचना कर रहे थे, तो उस समय उनकी माताजी ने देखा कि मेरा बेटा तो हर समय अपने शास्त्र की रचना में ही खोया रहता है और इसको आत्मा की महिमा का वर्णन करने में बहुत आनन्द आ रहा है।

फिर उन्होंने वास्तव में अपनी आत्मा में इनकी कितनी गहरी रूचि है, इसकी परीक्षा के लिए उनके भोजन में नमक डालना ही बन्द कर दिया।
अब इस तरह एक दो नहीं बल्कि कई महिने बीत गए, फिर भी उनकी माताजी ने कोई नमक नहीं डाला और श्री टोडरमलजी ने एक बार भी नहीं कहा कि माँ भोजन में नमक नहीं डला हुआ है। इस तरह लगभग छः महिने व्यतीत हो गए।
एक दिन अचानक टोडरमलजी ने बोला - हे माँ आज भोजन में आपने नमक क्यों नहीं डाला है?
तब वह माँ बोलती है – पुत्र, मैं तो जैसा भोजन रोज बनाती हूँ, वैसा ही भोजन आज भी मैंने बनाया है। फिर आज तू नमक की बात क्यों कर रहा है? इससे ऐसा लगता है कि तू जो शास्त्र लिख रहा था, वो अब पूर्ण हो गया है, इसलिये तेरे को भोजन में नमक की कमी परिलक्षित हुई, ध्यान में आई।

तब टोडरमलजी कहने लगे कि मैं तो रोज खाता था और मेरे को तो भोजन में कोई कमी नजर नहीं आती थी, मुझे खाना बिलकुल अच्छा लगता था।
तब माँ कहने लगी कि यही बात तो मैं कह रही हूं कि तू अपने ग्रन्थ में इतना खोया हुआ था कि पिछले छः महिने से मैं नमक नहीं डाल रही थी, लेकिन तेरे को तो पता ही नहीं चल रहा था।
आज तेरा ग्रन्थ पूरा होते ही तेरा वो विकल्प पूरा हुआ, इसलिये तेरे को भोजन के स्वाद में नमक की कमी लगने लगी।
अहो, धन्य हैं हमारे पंडित प्रवर टोडरमलजी साहब; वास्तव में वे इतने उच्च कोटि के लगनशील व्यक्ति रहे हैं और इसीलिए उन्होंने इस अदभुत शास्त्र की रचना की थी।
मोक्ष को प्रकाशित करने वाला, मोक्ष का मार्ग बताने वाला, ऐसा सरल शब्दों में उन्होंने यह शास्त्र लिखा हैं जो कि वाकई में अदभुत है।
यहां पर ये विचारणीय बात हैं कि वे तो अपने कार्य में, अपने शास्त्र लिखने में लगे रहे. उनको जो शास्त्र रचना की लगन का रस रहता था, उसके कारण उन्हें भोजन के रस का ध्यान ही नहीं रहा और वे अपने शास्त्र की रचना में ही लीन रहे।
इसी तरह हे प्रभो, जब आप भी अपने भगवान आत्मा की लगन में, उसके रस में लीन रहते हो, तो बाह्य में कितने ही राग द्वेष आ जायें, किन्तु आप तो अपने चैतन्य-प्रभो में ही लीन हो, अपने भगवत-स्वरूप में ही खोए हुए हो, इसलिये आपको क्रोधादि का विकल्प आएगा ही कैसे?

1. जो भव्यात्मा अपने आप को पहचानते हैं,
2. अपने भगवान आत्मा को मानते हैं, उनके अपने आप ही सभी तरह के विकार दूर होते चले जायेंगे.
3. क्रोध की तरह ही ये मान माया लोभ भी दूर होते चले जायेंगे।
4. सप्त व्यसन हैं, उनका त्याग भी उनको अपने आप ही बनेगा।
5. करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।
6. आपका सदाकाल जो स्वभाव है,
7. उसमें ही फिर आप बारम्बार जाना चाहोगे,
8. आपका ध्यान भी उधर ही रहेगा,
9. यही धर्म का सच्चा स्वरूप है,
10. धर्म का सच्चा मार्ग है,

11. इसी में आपका कल्याण है,
12. फिर आपको सदाकाल सुख ही सुख मिलता रहेगा।

12 बहुरूपिया

हे प्रभो, क्या आपने कभी सोचा है कि आप कौन हो?
कभी आपको लगता होगा कि-

1. किसी अपेक्षा आप पुत्र हो, तो किसी अपेक्षा पिता,
2. किसी के भाई हो, तो किसी के पति,
3. किसी के जेठ हो, तो किसी के देवर.
4. किसी के दोस्त हो, तो किसी के दुश्मन,
5. किसी अपेक्षा मालिक हो, तो किसी अपेक्षा नौकर,
6. किसी अपेक्षा क्रेता हो, तो किसी अपेक्षा विक्रेता।

इस तरह संसार में तुम्हारे अपने कई रूप हैं। धार्मिक द्रष्टि से सोचें तो -

1. कहीं आप एक हो, तो कहीं अनेक।
2. किसी अपेक्षा जीव हो, तो किसी अपेक्षा अजीव।
3. किसी अपेक्षा मुक्त हो, तो किसी अपेक्षा संसारी।
4. किसी अपेक्षा अखंड हो, तो किसी अपेक्षा खंडित।
5. किसी अपेक्षा द्रव्य हो, तो किसी अपेक्षा पर्याय।
6. किसी अपेक्षा अविकारी हो, तो किसी अपेक्षा विकारी ।

तात्पर्य यह है कि आपके भिन्न-भिन्न कई रूप हैं, जो हर समय उपस्थित तो रहते हैं, किंतु जब आप किसी को मुख्य करते हो, तब अन्य गौण हो जाते हैं।

हे प्रभो, जब आप उपरोक्त कथन को स्वीकार कर लेते हो, फिर क्या आपने कभी सोचा है कि जिस तरह एक बहुरूपिया तरह-तरह के स्वांग या रूप धारण कर संसार का मनोरजंन करता है, उसी तरह आपके बहुरूप क्या आपके संसार का पोषण नहीं कर रहे हैं?

कितने आश्चर्य की बात है कि इस बहुरूपियापने को धारण करते-करते आपने अनादि से आज तक अनंतकाल गंवाया है, किंतु आपको कभी भी यह सहज जिज्ञासा नहीं हुई कि वास्तव में -

1. आप कौन हो?

2. ऊपर लिखे बहुरूप में से ही कोई हो
3. या उनसे अलग आपका कोई स्वरूप है?

अगर आप कहते हो कि मैं तो आत्मा हूं तो यह रूप तो जीव के आश्रित होने से ऊपर लिखे बहुरूप में ही शामिल है। इसी कारण आपने अनादिकाल से आजतक आत्मा की भावना भाते हुए भी आत्मा के सच्चे स्वरूप को नहीं समझा है और उपरोक्त बहुरूप में शामिल जीव रूपी आत्मा को पाने की, उस बहुरूप को ही पुनः धारण करने की कोशिश की है, जिससे आज तक आपके प्राप्य की प्राप्ति में हर बार आपको असफलता ही मिली।

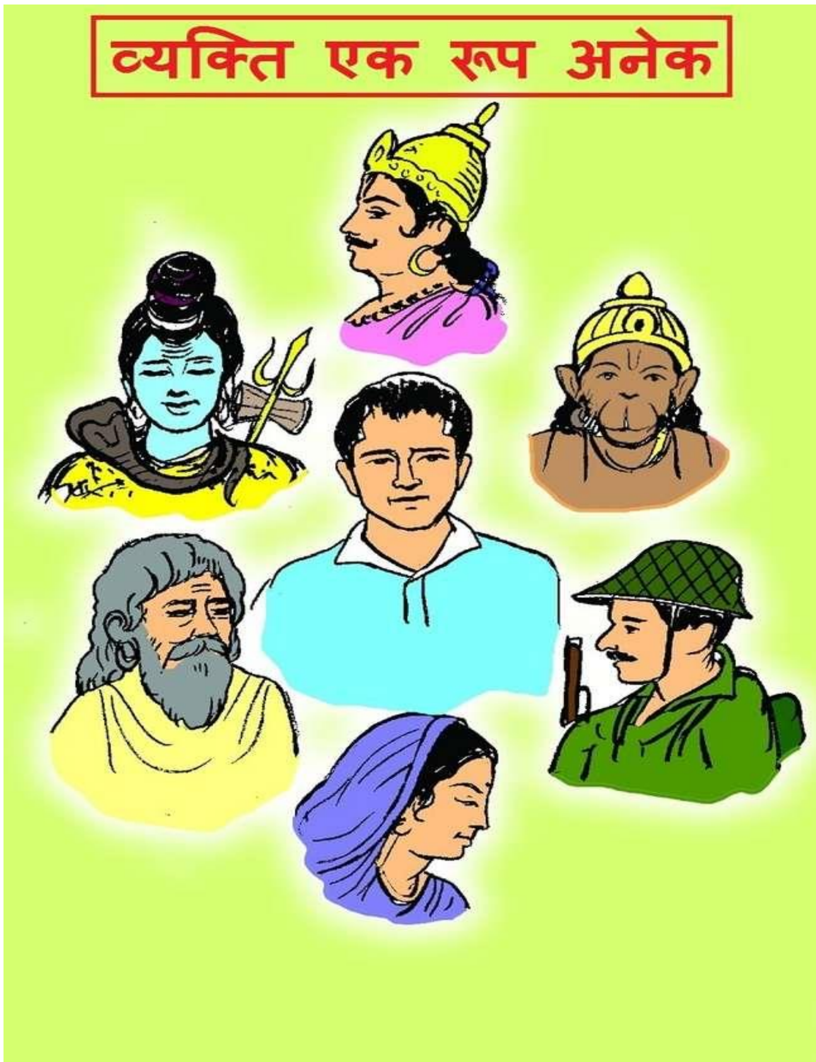

हे प्रभो, यह एक बहुत-बहुत गंभीर कथन है, जिसको समझे बिना आपका कल्याण होना असंभव है।

जिस तरह माता-पिता भाई-बहन, बेटा-बेटी, चाचा-भतीजा होते समय भी आप अपने मनुष्यत्वपने को हमेशा धारण करते रहते हो,

एक पल के लिए भी अपने बारे में नहीं सोचते हुए भी आपका मनुष्यत्वपना सदाकाल कायम रहता है।

इसी तरह आप अपने आपको -

1. जीव-अजीव,
2. एक-अनेक,
3. मुक्त-संसारी,
4. खंड-अखंड,
5. विकारी-अविकारी,
6. गुणी-अवगुणी

आदि अनेक रूप मानो या न मानो;

चाहे आपको इनके नाम भी मालूम हों या नहीं, जैसा कि तिर्यन्च अवस्था में रह रहे ज्ञानी जीव का होता है।

उसे तो आत्मा, जीव आदि शब्दों से परिचय भी नहीं होता है, फिर भी इन शब्दों का भाव भाषण उन्हें अच्छी तरह से मालूम होता है।

इसलिए वे अपनी चेतन सत्ता को अच्छी तरह पहचानते हैं।

इसी तरह हे प्रभो, आपका भी जीवत्वपना, चेतनत्वपना सदाकाल स्थिर रहता है, कायम रहता हैं।

अगर आप पुनः विचार करो तो पाओगे कि जिसे आप पाना चाह रहे हो, वह आप खुद ही हो।

आप मानो या न मानो, लेकिन आपका स्वरूप कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है। जो कुछ भी आजतक आप भ्रमवश मान रहे हो, जान रहे हो,पहचान रहे हो, वह मात्र आपका बहुरूपियापन है।

इस संसार में रंगमंच पर एक आपका बहुरूप सामने आता है, तो दूसरा परदे के पीछे चला जाता है।

आपकी भूल यह है कि जो रूप सामने आता है, उसी को ही सच्चा मानकर आप उसमें खो जाते हो, जबकि आप तो स्वयं इन सबके दर्शक हो और दर्शक को पता रहता है कि उसका यह बहुरूप थोड़े समय का ही है और कुछ काल पश्चात् वह अपने आप नष्ट भी हो जावेगा, बदल जावेगा।

अत: दर्शक कभी भी इनमें राग नही करता है, उसमें एक रुप नही होता है।
वह तो जानता है कि उसका स्वरुप इन सबसे पृथक है, स्वतंत्र है, अविनाशी है, अनादिअनन्त है, सहजानन्दी है, चैतन्यधन है, परमात्मा है।
दर्शक जानता है कि उसके जो भी बहुरूप सामने आ रहे हैं, उसमें भाव-विभोर होते हुए भी वह उन सबसे जुदा है, उसका अस्तित्व उन सबसे पृथक है, अलग हैं।
हे प्रभो, यह एक बहुत ही गंभीर कथन है। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने तो इसे समयसारजी में रंगमंच के नौ अध्याय के नाटक की संज्ञा दी है.
अरे भाई अगर आपको ये बहुरूप प्रिय लग रहे हैं तो कोई बात नही, किन्तु जिस तरह टी.वी. पर प्रसारित होते कार्यक्रम को देखकर आप उनमें एकमेक होते हुए भी अपनी सत्ता पृथक मानते हो,
इसी तरह इन बहुरुपों को देखते हुये भी आपकी सत्ता अलग है, जुदा है।
एक छोटा सा बालक भी टी.वी. को देखते हुये अपनी सत्ता अलग मानता है, जानता है, तो फिर आप इस संसार रूपी रंगमंच को देखते हुये क्यों नही अपनी सत्ता अलग मान रहे हों, स्वीकार रहे हो?
अनादिकाल से आजतक आपकी यही भूल रही है कि आप अपनी खुद की सत्ता नही मान रहे हो।
अब इस भव में अपने मनुष्य जन्म को सार्थक कर लो और अपने स्वरुप को पहचान लो, अपनी सत्ता को मान लो।
एक बार अगर आपने अपने आपको स्वीकार कर लिया, फिर आपके लिये करने योग्य कोई कार्य ही शेष नहीं बचेगा।
फिर आपका मुक्ति-शिखर की ओर सहज गमन चालू हो जायेगा।
फिर आप तो बस फिर अपने स्वयं के इस बहुरूपपने के स्वयं दर्शक बन

"जो हूँ, सो हूँ"

की सत्ता को गृहण कर तीन लोक के स्वामी बन अनन्तकाल तक सहज सुख में लीन रहोगे।
समस्त प्राणी ऐसे अपने इस वस्तु-स्वभाव, जीव-स्वभाव को समझ कर अपना कल्याण करें, बस यही मंगल भावना भाते हैं.

13 आप कौन हैं?

1. विज्ञान के सभी छात्र पढ़ते हैं कि –
2. परमाणु को न तो बनाया जा सकता है
3. न ही उसका विनाश किया जा सकता है।
4. वे तो अनादिकाल से हैं
5. और अनन्त काल तक रहेंगे।
6. अत: संसार में जैसे परमाणु सदा काल से रहते हैं,
7. वैसे ही आपका चैतन्य-आत्मा भी सदाकाल से संसार में है,
8. एवं जैसे प्रत्येक परमाणु में अपार परमाणु-शक्ति छिपी है

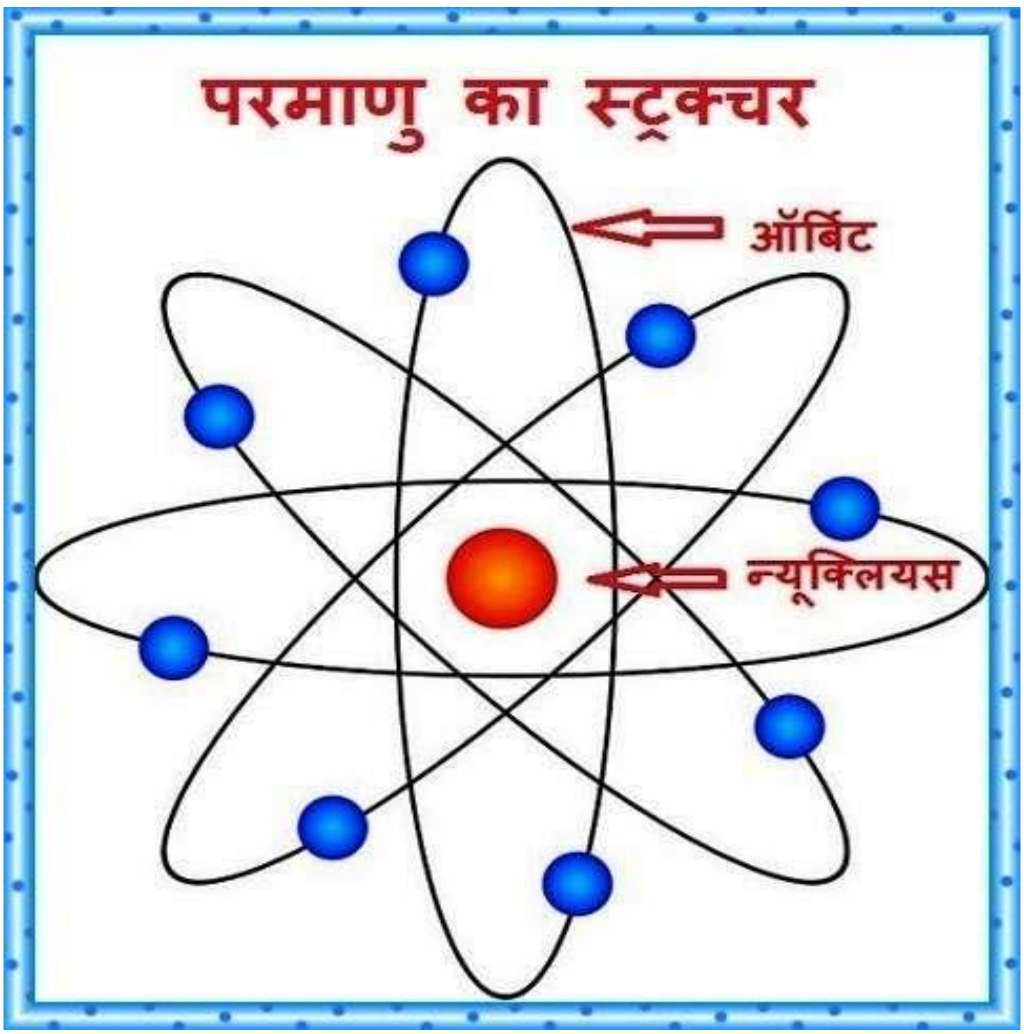

9. वैसे ही आत्मा में भी अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान एवं अनन्त सुख सरीखे अनन्त गुण समाये हुए हैं।

10. प्रत्येक प्राणी अपनी इस शक्ति को पहचान ले तो वह भी
11. पामर से परमात्मा बन सकता है,
12. खुद से खुदा बन सकता है,
13. भक्त से भगवान बन सकता है.

हे प्रभो, इस सत्य को नहीं पहचान कर ही प्रत्येक मनुष्य इस संसार में अपना जन्म-मरण मानकर दुखी होता रहता है और अगर आप इस सत्य को समझकर अपनी पहचान या अपने चैतन्य-स्वरूप को पाने की कोशिश करोगे, तो आप सदाकाल के लिए सुखी हो सकते हो।

आओ इस बात पर थोड़ा और गहराई से विचार करें -

आप देखते हो कि प्रतिदिन इस संसार में बहुत से जीवों का जन्म होता है और कई अन्य जीव मरण को प्राप्त होते हैं। अपने आस-पास होने वाले जन्मों पर तो लोग खुशियाँ मनाते हैं एवं अपने इष्ट मित्र एवं संगी-साथियों की मृत्यु पर शोक मनाते हैं।

इस संसार का यह जन्म-मरण रूपी व्यापार देखकर कई बार आपके मन में भी यह विचार उत्पन्न होता होगा कि -

1. एक समय ऐसा भी आयेगा।
2. जब मेरा भी मरण होगा।।

कुछ समय के लिये सभी सामान्यजन इस उलझन पर चिन्ता कर फिर इसे टालकर अपने दैनिक कार्य में पुन: संलग्न हो जाते हैं।

1. क्या मेरा भी मरण होगा?

यह एक ऐसा शाश्वत प्रश्न है जिसे सभी टालना चाहते हैं, किन्तु सच्चाई से मुंह फेरना उचित भी नहीं है।

अत: इस जिज्ञासा को शांत करने से पहले इससे सम्बन्धित कुछ अन्य प्रश्नों पर भी विचार करें -

1. मैं कौन हूँ?
2. मैं कहाँ से आया हूँ?
3. मेरा परिचय क्या है?
4. क्या इस शरीर मात्र ही मेरा परिचय है?
5. क्या इस शरीर के नाश होते ही मेरी सत्ता (अस्तित्व) समाप्त हो जावेगी?
6. फिर मेरा स्वरूप क्या है?

उपरोक्त प्रश्न अपनी स्वयं की शोध करने के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं एवं प्रत्येक जिज्ञासु को उपरोक्त प्रश्नों पर बारम्बार विचार करना चाहिये।

साथ ही निम्न बिन्दुओं पर मन में उत्साह एवं शांति रखकर चिन्तन करने से उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर मिल जावेंगे।

हम देखते है कि प्रतिदिन सुबह होती है, शाम होती हैं। रात्रिकाल के पश्चात पुन: एक नई सुबह होती है। यह जो दिन और रात का चक्र चलता रहता है, उसे हम सूर्योदय और सूर्यास्त का नाम देते हैं।

किन्तु आज हम सभी जानते हैं कि सूर्य तो इस संसार का शक्ति स्त्रोत है, शाश्वत है एवं सदाकाल उदित रूप ही रहता है।

यह जो सूर्योदय एवं सूर्यास्त रूपी क्रिया हो रही है, वह मात्र पृथ्वी की गतिशीलता ही है जिसे हम भ्रमवश महातेजस्वी सूर्य का उदय एवं उसका अस्त (नाश) होना मान लेते हैं।

इसी तरह यह जो हमारे चारों ओर जन्म-मरण रूपी क्रिया चल रही है, उसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये सभी क्रियायें पृथ्वी के ही एक अंश इस शरीर में हो रही है और इस शरीर से भिन्न जो यह आत्मा है, वह सदाकाल सूर्य के समान उदित रूप ही रहता है।

इस तरह यह आत्मा अनन्त-शक्ति का पुंज है, अनन्त-सुख का भंडार है एवं समस्त संसार को अपने ज्ञान सूर्य से आलोकित करता रहता है।

इससे यह भी सिद्ध होता है कि मैं यानी आत्मा एवं शरीर भिन्न-भिन्न ही हैं।

हे प्रभो, आपके चैतन्य आत्मा के मुख्य लक्षण एवं गुण इस प्रकार हैं-

1. आत्मा का कभी भी न तो जन्म होता है और न ही मरण।
2. आत्मा का न तो कोई कर्ता है और न ही हर्ता।
3. आत्मा में अनन्त शक्ति, अनन्त सुख, अनन्त ज्ञान एवं ऐसे ही अनन्त गुण समाये हुए हैं।
4. आत्मा इस संसार का ज्ञाता-दृष्टा है, कर्ता नहीं।
5. अनादिकाल से जैसे अज्ञानवश संसारी जन सूर्य का उदय एवं अस्त मानते थे, वैसे ही आप भी अपना उदय (जन्म) एवं अस्त (मरण) मानते रहे हो।
6. ऐसी इस उल्टी मान्यता को समझकर जो भव्यात्मा अपने इस अनन्त महिमावन्त आत्मा को पहचानकर मानता है, उसमें रमना चाहता है, जमना चाहता है,
7. वह इस संसार से पार होता है,
8. तथा इस जन्म-मरण रूपी चक्र से मुक्त होकर सदाकाल सुख के समुद्र में रमण करता है,

9. तब उस जीवात्मा का निर्वाण हुआ कहने में आता है।

10. इस तरह यह निश्चित होता है कि प्रत्येक जीव को अपने परमात्मा को प्रगट करने की पात्रता है,

11. अपने आत्मा को परमात्मा बनाने की शक्ति है।

12. हे चैतन्यदेव, अब आप भी शीघ्र ही ऐसे अपने परमात्मापने को प्राप्त करो।

13. साथ ही प्रत्येक प्राणी ऐसे अपने परमात्मापने को प्राप्त कर अनन्तकाल तक सुख में निमग्न रहें,

14. ऐसी मंगल भावना भाते हैं।

14 सच्चे सुख के स्वरूप को समझें

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है और दुख से दूर होना चाहता है। अपनी इस इच्छा-पूर्ति के लिये वह तरह-तरह के सुख की सामग्री इकटठी करता है और इसके लिये अत्यन्त कष्ट सहकर भी धनोपार्जन करता है।

इस तरह के प्रयत्नों में बहुत कम लोगो को सफलता मिलती है, जबकि अधिकांश लोग इस मरीचिका में उलझकर सुख का वास्तविक स्वरूप न समझकर अपना यह मनुष्य जीवन व्यर्थ गवां देते हैं।

इसलिए हे प्रभो, आइये सच्चे सुख के स्वरुप पर गम्भीरता से विचार करते हैं -

इस मनुष्य जीवन के प्रारम्भ में बालपने की पराधीनता रहती है, तो इसके संध्याकाल में बुढ़ापे की पीड़ा रहती हैं।

जवानी के कुछ समय को आप भले ही सुख रूप मान लें किन्तु उसमें भी आपको स्वयं के एवं अपने परिवार के भरण-पोषण एवं भोग-उपभोग की सुख-सामग्री को प्राप्त करने के लिए नौकरी, व्यापार-धंधा आदि करके धनोपार्जन करने की जरुरत होती है।

इसके लिए आपको अत्यन्त कष्ट सहकर, परिवार को छोड़कर भी धन कमाना पड़ता हैं।

इस तरह यह जीव इस जीवन के अधिकांश समय में सुख प्राप्ति की आशा में दुख ही उठाता रहता है। अधिकतर लोग यह सोचते है कि अभी तो धन कमा कर रख लें, ताकि उससे बुढापे में सुख से रह सकें, लेकिन जब बुढ़ापा स्वयं ही दुख रूप हैं तो फिर उसमे आपको सुख कैसे मिल सकता है?

आगे अगर आप और डिटेल में विचार करते हैं, तो पाते हैं कि गरीबों के अपने भूख, कुपोषण, बीमारी आदि दुख होते हैं, तो अमीरों के तनाव, समयाभाव, पारिवारिक विखंड़न, चिंता, आदि दुख रहते हैं।

महिलाओं के असुरक्षा, भय, आधीनता, कमजोर शारीरिक संरचना आदि दुख होते हैं, तो पुरूषों के अहंकार, मजबूरी, पराधीनता, इच्छा की पूर्ति न होना आदि दुख होते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी, बच्चों, व्यापार, नौकरी आदि को अपनी इच्छानुसार चलाना चाहता है, और जब वे उसके चाहे अनुसार नहीं चलते हैं, तब वह अत्यंत खेद-खिन्न होता हैं।

इस तरह आप पाते हैं कि इस संसार की प्रत्येक अवस्था में दुख ही दुख रहते हैं।

आइये इन बातों पर और गम्भीर चिंतन-मनन करें:-

कुछ ऐसे दुख होते हैं, जिनके बारे में आपने आजतक ठीक तरह से विचार ही नहीं किया हैं, जैसे- भूख, प्यास, निद्रा, वासना आदि।

अगर इनकी पूर्ति होती रहती है, तो आप अपने आप को सुखी मानते हैं, अन्यथा इनकी पीड़ा से आप परेशान हो उठते हो।

सुबह उठते ही इन दुखों की क्रिया चालू हो जाती है.

इसीलिये प्रत्येक मनुष्य प्रात: उठते ही अपने शरीर की शारीरिक शुद्धि, भोजन आदि की व्यवस्था करने लगता है।

जब भी आपको अगर आहार-निहार नहीं होता है, तो आपको अत्यंत पीड़ा व दुख होता है. इस तरह ये सभी भी पराधीन एवं दुख रूप ही होते हैं।

हे प्रभो, इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य का पूरा जीवन ही दुख, दुख और मात्र दुख रूप ही है। कही पर भी इससे सुख नहीं है।

इसलिए मात्र सुख की काल्पनिक मृग-मरीचिका में व्याकुल होकर दिन-रात आकुलित होता हुआ हर मनुष्य अपना सम्पूर्ण जीवन इसी तरह भटकता हुआ व्यतीत कर देता है और अंत में अत्यन्त दुखी होता हुआ मरण को प्राप्त होता है।

अत: इस संसार के इस शाश्वत प्रश्न पर पुन: विचार करते हैं -

तो फिर प्रत्येक मनुष्य को सच्चे सुख की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

हे प्रभो, इस प्रश्न को हल करने से पहले आपको निर्णय करना होगा कि आपको इस शरीर की अल्प आयु मात्र काल्पनिक सुख चाहिये या फिर सदाकाल रहने वाला सच्चा सुख चाहिए?

अगर आपको सदाकाल या हमेशा रहने वाला सुख चाहिये, तो जब आपका खुद का जीवन ही अधिक से अधिक मात्र साठ से सौ वर्ष का है, तो फिर आपको सदाकालीन सुख कैसे मिल सकता हैं?

हे प्रभो, यह एक बहुत ही गम्भीर प्रश्न है और एक अनादिकालीन गुत्थी है. इसे सुलझाने के लिये आपको मानना होगा कि आप इस शरीर मात्र नहीं हो, बल्कि सदाकाल रहने वाले चैतन्य-परमात्मा हो।

ऐसा मानकर अब आपको अपने शरीर के प्रति जो ममत्व है, उसे त्यागना होगा, तभी आप जो अपनी निज-आत्मा है, उसे आप पहिचान कर उसे अपना बना सकोगे।
वास्तव में इस संसार में दिखने वाला जो कुछ भी सत्य है, शिव है, सुन्दर है; वह एकमात्र चैतन्य-आत्मा ही है।
बाकी जो भी आपको दिखता है, वह क्षणिक होने से असत्य ही हैं।
हे प्रभो, आपका शाश्वत और सदाकाल रहने वाला सिर्फ आपका अपना आत्मा ही है और इसी में आपकी रूचि, तल्लीनता, अपनापन होना चाहिये.
कहा भी हैं -

- जैसी होवे रूची, वैसी होवे गति

अगर आपकी इस संसार में रूचि होगी, तो आपका इसी संसार में जन्म-मरण होता रहेगा और फिर अत्यन्त-अत्यन्त दुख पाकर अधोगति में, नीच गति में आपका गमन होगा और फिर आपको वहाँ पर बहुत-बहुत लम्बे समय तक दुख भोगना होगा।
लेकिन अगर आपकी अपने आत्मदेव में रूचि होती है,
तो सदाकाल रहने वाले ऐसे सच्चे शाश्वत सुख की आपको निश्चित ही प्राप्ति होगी
फिर चूंकि आत्मा में जन्म-मरण ही नहीं होते हैं, अत: इस संसार चक्र से आपको मुक्ति प्राप्त होगी.
फिर सदाकाल अपनी निज चैतन्य-आत्मा में रहते हुये उसके अनन्त सुखों का आप उपभोग करते रहेंगे।
क्योकि हे चैतन्यदेव -

1. आपकी आत्मा में न भूख है,
2. न प्यास है,
3. न नींद है,
4. न आकुलता हैं,
5. न दुःख हैं,
6. न शोक हैं,
7. न प्रमाद हैं,
8. न बुढ़ापा हैं, बीमारी है।
9. है तो बस एक निर्मल शांति,

10. अनन्त सुख
11. बस सुख, सुख और सुख।
12. ऐसे सुख स्वरूप भगवान आत्मा को पहिचानकर
13. प्रत्येक जीव उसी में मग्न रहकर इस संसार चक्र से मुक्त हों,
14. ऐसी मंगल कामना करते हैं।

15 "जो हूँ सो हूँ"

(मुझ में करना ही क्या शेष है?)

यह एक बहुत ही गंभीर लेख है. इस लेख में एक जिज्ञासु जीव के साथ डॉ. सा. के हुए पत्राचार में हुई आध्यात्मिक चर्चा को बताया गया है. इसे छः चित्रों के माध्यम से समझाया गया है. इस लेख में अंतरंग के चिन्तन की गहराई को स्पर्श किया गया है. इस लेख का अत्यंत रुचिपूर्वक पठन, चिन्तन, मनन और घोलन करें. आपको आपके इष्ट की प्राप्ति अवश्य होगी.

दिनांक 23/3/1985 के पत्र में आपने लिखा है कि -
जिज्ञासु - उसी निष्परिणामी के आश्रय के बल से अब वर्तमान पर्याय में नहीं बल्कि अपनी आगामी पर्याय में अपने आप से सहमति लेना है, क्योंकि मैं तो जो हूँ, सो हूँ।
डॉ. सा. - अहोऽऽ, धन्य है वो घड़ी, जिसमें ऐसा दृढ़ निश्चय हुआ कि सहमति लेना ही है। अब वह जीव कही भी नही अटक सकता है। उस जीव को तो अब सहमति की भी चिंता नही है, क्योंकि वर्तमान में ही उसने यह निर्णय कर लिया है कि -

1. जो हूँ, सो हूँ.
2. मुझ में करना ही क्या शेष है?
3. अब उस आगामी पर्याय की भी मुझे चिंता क्यों हो?
4. मैं तो वर्तमान में ही परिपूर्ण हूँ।
5. क्या दर्पण में अपनी छवि देखकर ही हमें अपने आप का निर्णय होगा?
6. अगर विचार करें, तो आप पायेंगे कि आप दर्पण की छवि में नहीं बल्कि अपने आप में ही हैं.
7. आपकी यह छवि तो कदाचित भ्रमरूप ही है, अस्तित्व हीन हैं।
8. फिर आपको ऐसी छवि की रंच मात्र भी आकांक्षा या इच्छा नही होना चाहिए।
9. वो पर्याय प्रगट हो, या नही हो, लेकिन आपको उससे क्या?
10. क्योकि मैं तो जो हूँ, सो हूँ (मुझ में करना ही क्या शेष है?)

यह तो हुई परमशुद्ध निश्चयनय की बात, किन्तु जहाँ पर निश्चयनय होता है, वही पर व्यवहारनय भी रहता है। अत: आपने लिखा कि -
दूसरों की मदद से कुछ कार्य हो सकता, तो पूर्व में कई ज्ञानी गुरू मिले, परन्तु अपने पुरुषार्थ जाग्रत बिना यह जीव कोरा ही रहा।
अतः इस बाबद मैं अपनी ओर से न लिखता हुआ परम श्रध्देय रायचन्द्रजी के वचनामृत ही लिखता हूँ।

पत्रांक - 522 -

सतपुरूष का योग होने के पश्चात् आत्म-ज्ञान कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तथापि सतपुरूष में, उनके वचनों में, उन वचनों के आशय में, जब तक प्रीति-भक्ति न हो, तब तक जीव में आत्मा-विचार भी उदय होने योग्य नहीं है और वह (उस) जीव को सतपुरूष का योग हुआ है, ऐसा सचमुच उस जीव को भासित हुआ है, यह कहना भी कठिन है।

पत्रांक - 386 –

जीव को स्वरूप जाने बिना छुटकारा नहीं है, तब तक यथायोग्य समाधि नहीं है। इस बात को जानने के लिये मुमुक्षुता व ज्ञानी की पहचान उत्पन्न होना योग्य है। ज्ञानी को जो यथायोग्य रूप से जानता है वह ज्ञानी हो जाता है, क्रमश: ज्ञानी हो जाता है।

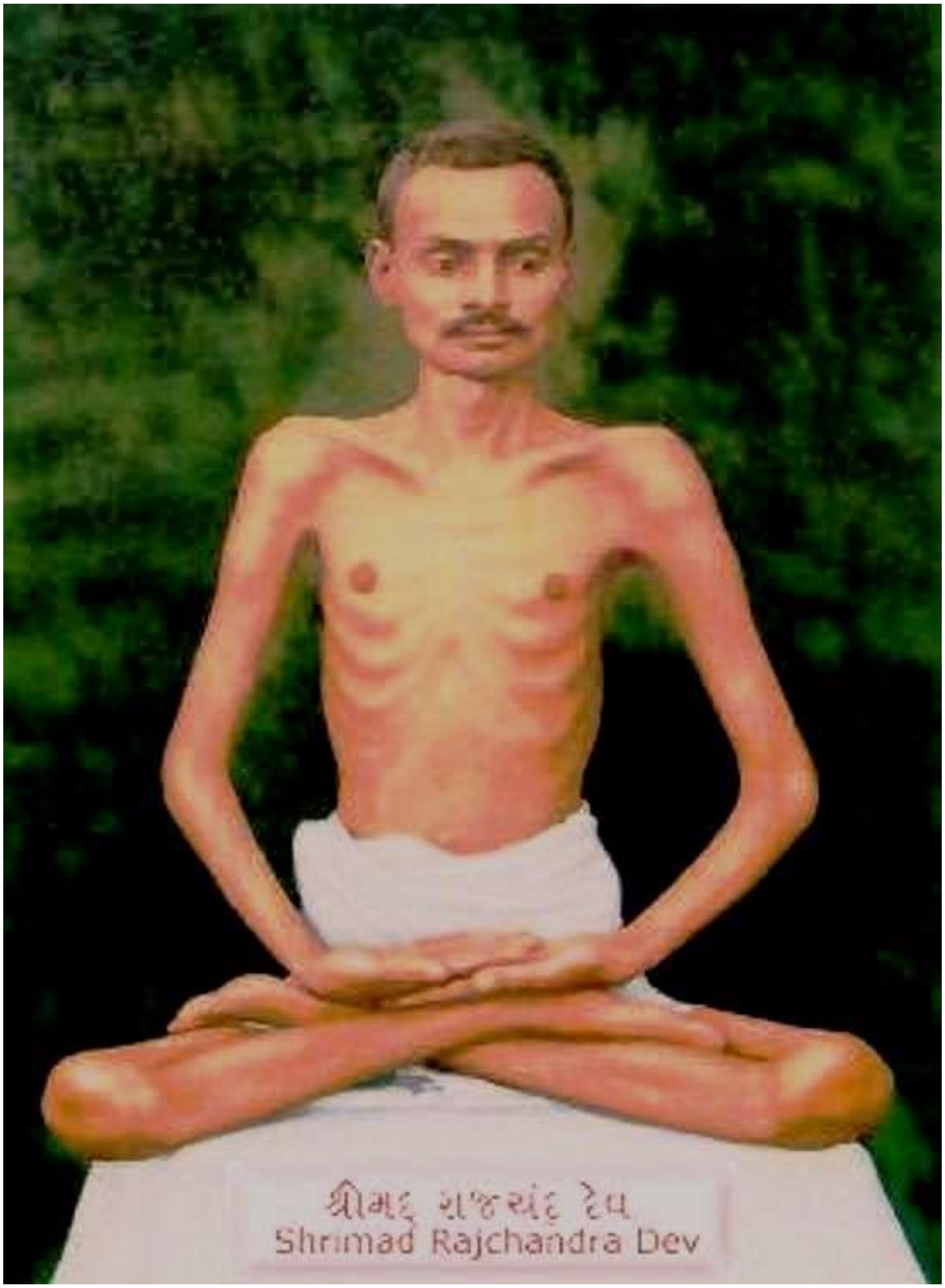

पत्रांक क्र. - 76 -

अन्य कुछ मत शोध। मात्र एक सतपुरूष को ही शोध (पहिचान) और उसके चरणों में सर्वभाव समर्पण करके वर्त। फिर मोक्ष की प्राप्ति न हो, तो मेरे से (मोक्ष) ले जाना। अहो, सदगुरू जानते हैं कि जीव कहाँ-कहाँ अटकता है, अटक रहा है। अत: वे तरह-तरह के अमृत-तुल्य वचनों द्वारा जीव को सम्बोधित करते रहते हैं।

पुन: पूज्य श्रीमदजी कहते हैं-

यह हमारा ह्रदय है।

कोई एक सत्पुरूष को शोधो और उसके सभी वचनों में श्रद्धा रखो। सत्पुरूषों के एक-एक वाक्य में अनंत आगम समा रहे हैं; यह बात कैसी होगी?

किसी भी प्रकार से सत्पुरूष की शोध करो, शोध करके उसके प्रति तन-मन-वचन और आत्मा से अर्पण बुद्धि करो, उसकी ही आज्ञा का सर्वप्रकार से नि:शंकता से आराधन करो, तो ही सर्वकायिक वासना का अभाव होगा, ऐसा समझना चाहिये।

जहाँ निश्चयनय है, वही व्यवहारनय रहता है। अत: जब स्वरूपाचरण होता है तब सच्चे देव-शास्त्र गुरू निमित्त हैं।

हे प्रभो, आपको सच्चे देव-शास्त्र तो अनन्तबार मिले, किन्तु सच्चे गुरू नहीं मिले, कदाचित मिले भी तो आपने उन्हें पहचाना ही नही।

कदाचित पहचाना भी, तो उनके बताये मार्ग पर चलने की चेष्टा नही की और जब चले ही नहीं, तो वे गुरू आपके लिये सच्चे कैसे कहला सकते हैं?

वो तो सच्चे हैं ही, किन्तु जब आप उनके मार्ग पर चले ही नहीं, तब उन्हें आपने सच्चा माना ही कहाँ है?

हे प्रभो, संसार-चक्र रूपी जेल से निकालने की चाबी सतगुरू के पास ही है। वे ही सच्चे देव व शास्त्र से आपका परिचय करवायेंगे।

अत: जो श्रीमदजी कहते है कि -

- मोक्ष मेरे से ले जाना.

सो सच ही है। जीव का एकमात्र कर्तव्य तो सदगुरू को पहिचान कर उसके आश्रित रहना ही है और फिर भी अगर स्वरूप की प्राप्त न हुई तो कारण एक मात्र सदगुरू के प्रति-

- सर्वस्व समर्पण

न करना ही है।

हे प्रभो, इस पंचमकाल में प्रतिकूलताऐं अत्यधिक हैं, आयु बहुत कम है, अत: एक क्षण को भी गंवाये बिना जुट जाओ कि अब तो जब तक आपको आपकी प्राप्ति न होगी, तब तक आप चैन से नहीं बैठोगे।

सच्ची लगन, जिज्ञासा एवं समर्पण के साथ सदगुरू का एक समय का साथ भी पर्याप्त है।

सदगुरू का इस पंचम काल में कहीं पर भी अभाव नहीं बतलाया गया है। अत: निमित्त तो उपस्थित ही हैं। अब तो मात्र निर्णय कर लो कि-

- जो हूँ सो हूँ
- मुझ में करना ही क्या शेष है?

श्रध्देय श्रीमदजी के उपरोक्त चारों कथन बाह्य सदगुरू की अपेक्षा लिये हुए ही हैं और व्यवहारनय के ही कथन है, फिर यहाँ पर निश्चय क्या है?
निश्चय से जिस जीव को बाह्य में कही पर भी, रंचमात्र भी, सपने में भी, सुख नही मिल रहा हो, अत्यंत आकुलित हुआ ऐसा यह जीव सुख के मार्ग की शोध कर रहा हो, तब ऐसे ही जिज्ञासु जीव को अत्यंत करूणा करके श्रीमदजी समझते हैं-
अन्य कुछ भी मत शोध, एकमात्र सदगुरू को खोज।

(पत्रांक - 76)

पूर्व पत्र के प्रत्युत्तर में आपने जो लिखा कि -

बाह्य में आपको जो निश्चय गुरू मिले, परन्तु उनका इशारा अंतर के निश्चय गुरू के पास पूर्ण उपयोग समर्पण करने का था। सो ठीक ही है, परन्तु यहाँ पर मूल विचारणीय बात यह है कि क्या उसे सचमुच बाह्य में निश्चयगुरू (उसकी स्वयं की अपेक्षा से) मिले?
ऐसे तो अनंत बार साक्षात तीर्थकर की वाणी सुनी, उनके दर्शन भी किये परंतु जैसा कि श्रीमदजी ने पत्रांक - 522 में कहा कि -

उस जीव को सतपुरूष का योग हुआ है, यह कहना भी कठिन है। ऐसा उसे भासित हुआ है, यह कहना भी कठिन है।
{क्योकि आप स्वयं उनके समवशरण में अनन्त बार गये हो और उनको फिर भी सच्चा गुरु नहीं माना, इसलिए आज तक भटक रहे हो.}

इसका एक अर्थ यह भी है कि अभी वह जीव पात्र नहीं हुआ है कि उसे सतपुरूष मिलें, निश्चय गुरू मिलें।
बाह्य में निमित्त तो सदा उपस्थित रहते ही हैं, किंतु स्वयं की योग्यता बिना बाह्य के गुरू को निश्चय गुरू कहने में, भले ही वो साक्षात तीर्थकर हों, बाधा उपस्थित होती है।

पुन: इसी पत्रांक मे एक शब्द और आया है :-

- प्रीति - भक्ति

इस शब्द का उत्तम उदाहरण श्री निहालभाई ने अपने पत्रांक क्रमांक 6 में प्रस्तुत किया है जो कि विशेष गौर करने योग्य है :-

परंतु अब तो वहां (सोनगढ) की धूल के लिए भी तड़फना पड़ता है। गुरूदेव के दृष्टांत के अनुसार धधकती भट्टी में गिरने सा प्रत्यक्ष अनुभव यहाँ एक दिन में ही मालूम होने लग गया है।

इस तरह अब सम्पूर्ण विवेचन को व्यापक द्रष्टि से देखने पर व्यवहारनय से सर्व विस्तार का सार इस तरह बनता है :-

जिसे कदाचित बाह्य सुख भी मलहम न लगा सके; ऐसा दुःखी रूपी दावानल से अत्यंत दग्ध जीव जब सुख की खोज में भटकता है, तब कदाचित देवयोग से उसे सदगुरू मिलते हैं। फिर वे समझाते है कि -

- यह संसार धधकती भटटी के समान है।

तो यह जीव अत्यंत प्रीति-भक्ति से उन वाक्यों को हृदयंगम कर स्वयं को धधकती भट्टी में ही पाता है।

फिर जब तक साम्यजल की बारिश नहीं हो जाती है, तब तक वैसा ही अनुभव करता है, रंचमात्र भी उसे चैन नहीं मिलता है।

ऐसा ही जीव निश्चय पात्र है और वे सदगुरू उसके निश्चय गुरू है।

फिर वह जीव अपना सर्वस्व गुरू को अर्पण कर देता है,
गुरू के हर कथन को बिना शंका किए अंतर मे उतार लेता है
और जब गुरू कहते है कि जीव जुदा और देह जुदा।

तो ततक्षण वह गुरू की श्रद्धा के बल पर भेद विज्ञान करके, निज कारण-परमात्मा की श्रद्धा करके, निज-चैतन्य में समा जाता है।

श्री समयसार आदि शास्त्रों में ऐसे ही संसार से दग्ध और सदगुरू के प्रति अत्यंत प्रीति-भक्तिवंत जीव के बारे में कथन है कि -

- उसे अधिक से अधिक 6 माह में निज स्वरूप प्राप्ति निश्चय से होगी ही होगी।

अगर नही होती है, तो यह निश्चित है कि उसे उसके सदगुरू का अभी निमित्त नहीं मिला है और वो भी नवेग्रेवेयकगामी द्रव्यलिंगी महामुनि के समान कहीं न कहीं अटका हुआ ही है।

पुनः वह धन्य दिवस जब तक न आये, तब तक उसी की लगन, चिंतन, मनन, घोलन चलते ही रहना चाहिये।

एक समय भी अन्य विचार किचिंत मात्र भी नही आना चाहिये; न खाने का, न पीने का, न सोने का, न जागने का इत्यादि।
ये समस्त क्रियायें अपने आप हों तो हों।

रास्ता तो एक यही है. आज आओ, चाहे दस दिन बाद, दस वर्ष बाद, दस भवों बाद या अनन्त भवों बाद, परन्तु जिसे अनन्त सुखों की प्राप्ति करना है, उसे आना तो इसी मार्ग पर पड़ेगा; यह निश्चय कथन है।

अपने अगले पत्र में आपने लिखा है कि -

मुक्तियाँ के द्रष्टान्त – "खूंटे से बंधी गाय" से हमे हमारे निज-स्वभाव की तरफ वलन होता है।
सो बहुत ही उच्चभाव है, एवं हम कामना करतें हैं कि आपको आपकी भावना का फल शीघ्र मिले।

पुन: आपने लिखा कि -

क्षणिक धारणा में जमता है, भले जाये, पर द्दढ़ स्तम्भ को पकड़ेंगे और उसी के चक्कर लगायेंगे, काल से भले दूरी हो।

यहां पर कौन क्षणिक धारणा में जमता है, सो स्पष्ट नहीं है। अगर एक बार भी, एक समय के लिए भी जम जाये, तो फिर जाने का सवाल ही कहाँ रहेगा?

प्रश्न - 1. द्दढ़ स्तम्भ कौन है?
2. खूंटे से बांधना किसको है?
3. स्तम्भ को पकड़ना किसको है?

उत्तर - 1. मेरे को नहीं
2. गाय को भी नहीं
3. कदाचित किसी को भी नहीं।

पुर्नप्रश्न - तो फिर किसको?
डॉ.सा. - भाई बहुत-बहुत सूक्ष्म बात है। मेरा कार्य तो मात्र इतना ही है, कि मैं गाय और खूंटे का मिलाप एक रस्सी द्वारा करवा दूँ।

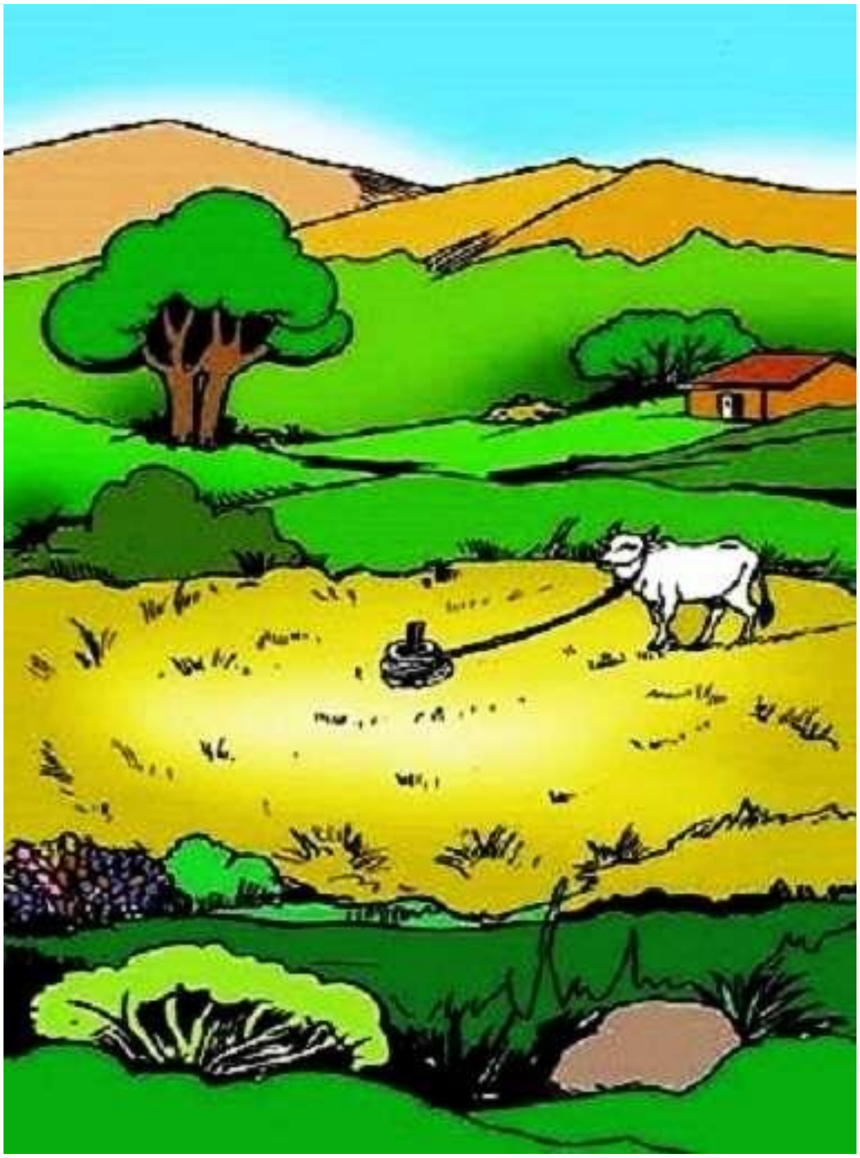

मैं तो अलग ही हूँ, गाय और खूंटे भी अलग ही हैं।
मुझे तो इससे भी प्रायोजन नहीं है कि क्या गाय खूंटे से बंधती है, या छुटटी ही रहकर जंगल में भाग जाती है।
गाय का जो होना हो, सो हो, मुझे उससे क्या?
अत: आप अगर मुंह फेरकर चल देगें, तो गाय स्वत: ही परछाईवत पीछे-पीछे आकर खूटें के आश्रय से बंध जायेगी।
देखो भाई उत्कृष्ट तत्व चर्चा की बात एक बार में समझ में आ पाना बहुत मुश्किल है।
बार-बार पढ़ने, गुनने से उन शब्दों के भीतर का रहस्य कदाचित आपको समझ में आ पाये।

द्रष्टि अगोचर होने पर भी नक़्शे पर हाथ रखकर ऊंगली से आप कैलाश पर्वत बता तो सकते ही हो, अतः बड़े धैर्य, लगन और श्रद्धा से एक-एक कदम आगे बढ़ाना है और रास्ते की घनी छाया में अटकना नहीं है।

आगे आपने लिखा कि -

जैसा योग्य होता है, निमित्त भी सहज ही मिलता है; उत्कृष्ट तत्वचर्चा में निमित्त बने आप।

इस बाबद एक दृष्टांत देता हूँ -

एक महात्माजी को देव योग से एक सिद्धि प्राप्त हो गयी थी। वे अगर धूल भी उठाकर फेंकते थे तो हीरों की बरसात होती थी।

महात्माजी को लोगों पर अपार करूणा थी। वे लोगों को बुलाकर कहते थे कि हीरे लो और धूल उठाकर फेंकते थे।

लोगों की द्रष्टि धूल पर ही रहने से वे उन महात्माजी का मजाक उड़ाकर कहते थे कि देखो लगता है, कि ये पगला गये हैं जो धूल को हीरे बताते हैं।

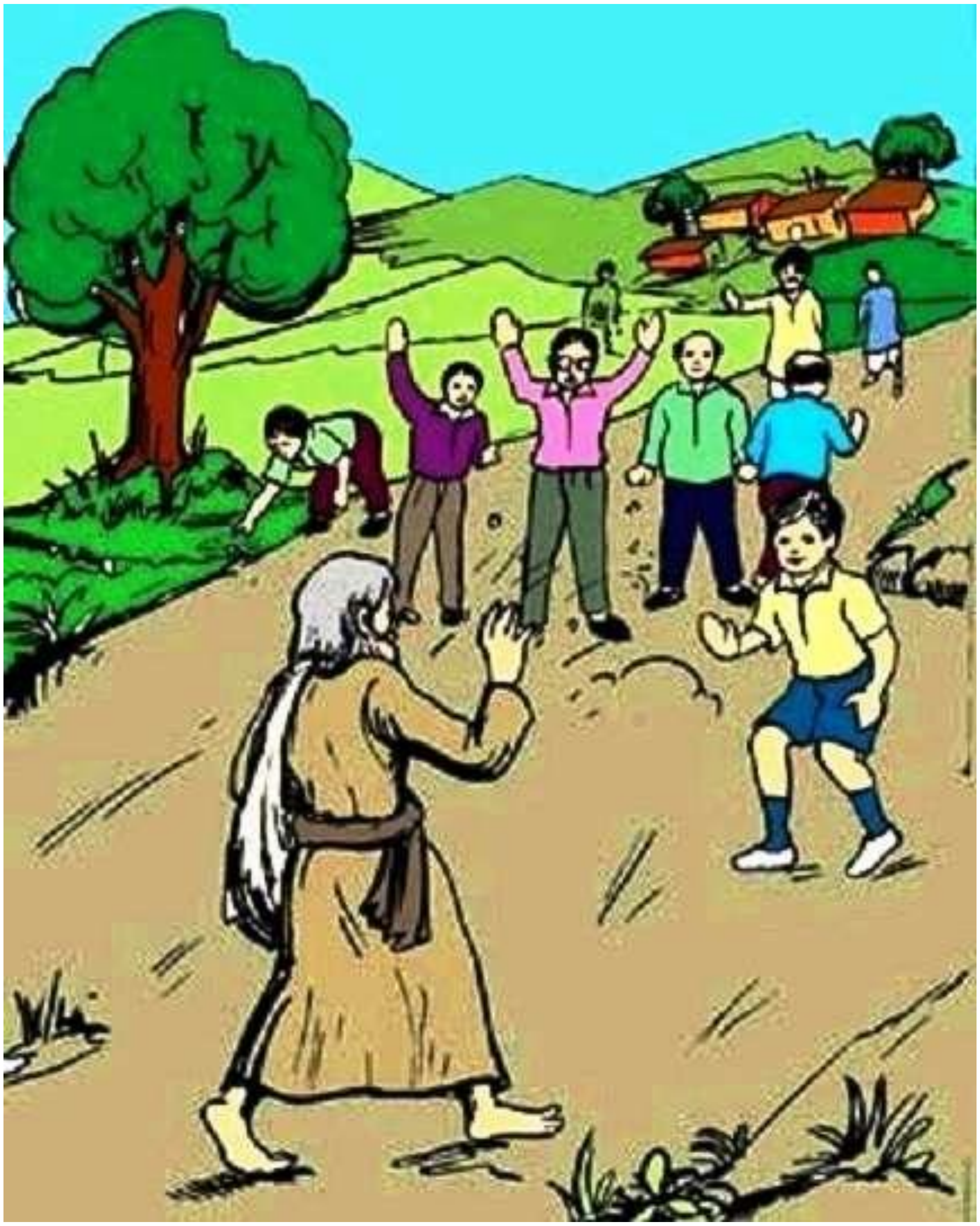

कदाचित किसी बिरले भव्य जीव ने अत्यंत श्रद्धा और भक्ति से उन्हें अपनी झोली में ग्रहण किया, तो उसे अनन्त वैभवशाली बनाने वाले हीरे हाथ लगे। अन्य लोगों की उल्टी मति पर महात्माजी खेद प्रगट करते रहे।

इसी तरह हे प्रभो, अनादिकाल से अनन्त सदगुरू अपनी अमृत वाणी की वर्षा कर रहे हैं। अब अगर आप उन श्री गुरू पर श्रद्धा नहीं करके उनकी वाणी को आत्मसात नहीं कर रहे हो, तो दोष किसका है?

सब दोष आपका ही है। अब भी वक्त है। इस सच्चाई को पहचानो और सदगुरू से नाता जोड़ो. फिर उनकी कही गई हर बात को बिना शंका किये ग्रहण करो। आपको आपके इष्ट की प्राप्ति अवश्य ही होगी।

दिनांक 15-5-1985 के पत्र में आगे आपने लिखा है कि -

(1) यह पंचम काल है, न जाने क्या चित्र-विचित्रता देखना है।
डॉ.सा. - यहाँ यह मानो कि काल कोई भी हो, वह चित्र-विचित्रता मय ही रहता है। चित्र-विचित्रता का नाम ही संसार है। काल दोष का भी आरोप मनुष्य भव में ही आता है और मनुष्य भव तो अत्यंत दुर्लभ है।
बाकी समय तो जीव मात्र देखते नहीं, अपितु ऐसे-ऐसे दुःख भोगते हैं कि जिनका वर्णन करने में लेखनी और जिव्हा दोनों असमर्थ हैं। अत: संसार को देखकर अचरज और आश्चर्य करना, कदाचित खुद के लक्ष्य से भटकना ही है।
(2) ये क्षणिक वैराग्य नहीं है, परन्तु वेराग हैं। सच्चा वैराग्य तो अंतरंग की ग्रंथि तोड़ता हुआ बाहर आता हैं।
वैराग्य का लक्षण ही सुख की अनुभूति होना है। क्या वैराग्य होने पर दुःख होगा। कदापि नहीं और आपका यह जो 'वेराग' है, वह मात्र दुःख रूपी सिरहन ही पैदा कर रहा है।
ऐसा इसलिए है कि यह 'वेराग' मात्र संसार द्वारा लक्षित है और चूंकि संसार दुःख रूप ही है, अत: इस 'वेराग' से सुख की कामना करना, वैराग्य इसे कहना, मात्र अपने आपको धोखा देना ही है।
जब सांसारिक सुखों में भी ऐसा ही 'वेराग' लगे, तब हम उस 'वेराग' को व्यवहार से वैराग्य कह सकते हैं।
यह तो अभी मन को समझाकर मात्र वहाँ अटकना ही है और मन में संतोष धारण करना ही है कि हम वैरागी हैं या हो गये हैं, या होने वाले हैं।
कदाचित इसे कषायों की मंदता कहा जा सकता है जो कि आप अनन्तानंत बार कर चुके हो और अगर आपने फिर एक बार संतोष धारण कर लिया, तो पुनः देवगति मिलेगी और -
" देव मरे, एकेन्द्रिय होवे "

सो शास्त्रों में प्रसिद्ध ही है। यानी कि हेड आफिस (निगोद) जाने का रास्ता खुल जायेगा।

(3) "नयी-नयी घटनाओं में जीवन यों ही बीत रहा है। समय चला जा रहा है। जीवन नैया मझधार में है।"

"अहोऽऽ, "बहुत उच्च विचार हैं।"

हर क्षण, हर पल मात्र यही घोलन चलता रहना चाहिये। हमेशा ध्यान में रेत से भरे घड़े का ख्याल आना चाहिये जिसमें नीचे एक छेद है और अब वह रेत कभी भी खत्म हो सकती है, या वह कच्ची मिटटी का घड़ा कभी भी, किसी की भी ठोकर से फूट सकता है और तब वह रेत बिखर जायेगी।

यहाँ निम्न प्रश्न उपस्थित होते है-

प्र.1 - क्या मैं भी इसी तरह खत्म हो जाऊंगा / जाऊँगी?

प्र.2 - क्या मेरा भी अस्तित्व मात्र घड़े में रेत जितना ही है?

प्र.3 - क्या मैं भी कच्चा घड़ा ही हूँ जिसे कोई भी ठोकर मार दे?

इस बात पर विचार करने से उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर "नही" में ही मिलते हैं।

तो फिर मैं क्या हूँ?

ध्यान में मुझे मेरा स्वरूप किस तरह का भाना चाहिये?

उपरोक्त तीनों प्रश्नों के उत्तर निम्न चित्रवत हैं -

उत्तर 1 (द्रव्य) - मैं अनन्त गहराई में समाया हुआ अनादि शुद्ध चैतन्य आत्म द्रव्य हूँ। अत: मेरे खत्म होने का सवाल ही नही है।

उत्तर 2 (गुण) - मैं तो अनन्त गुणो का पिण्ड हूँ, मैं कच्चा घड़ा कैसे हो सकता हूँ ?

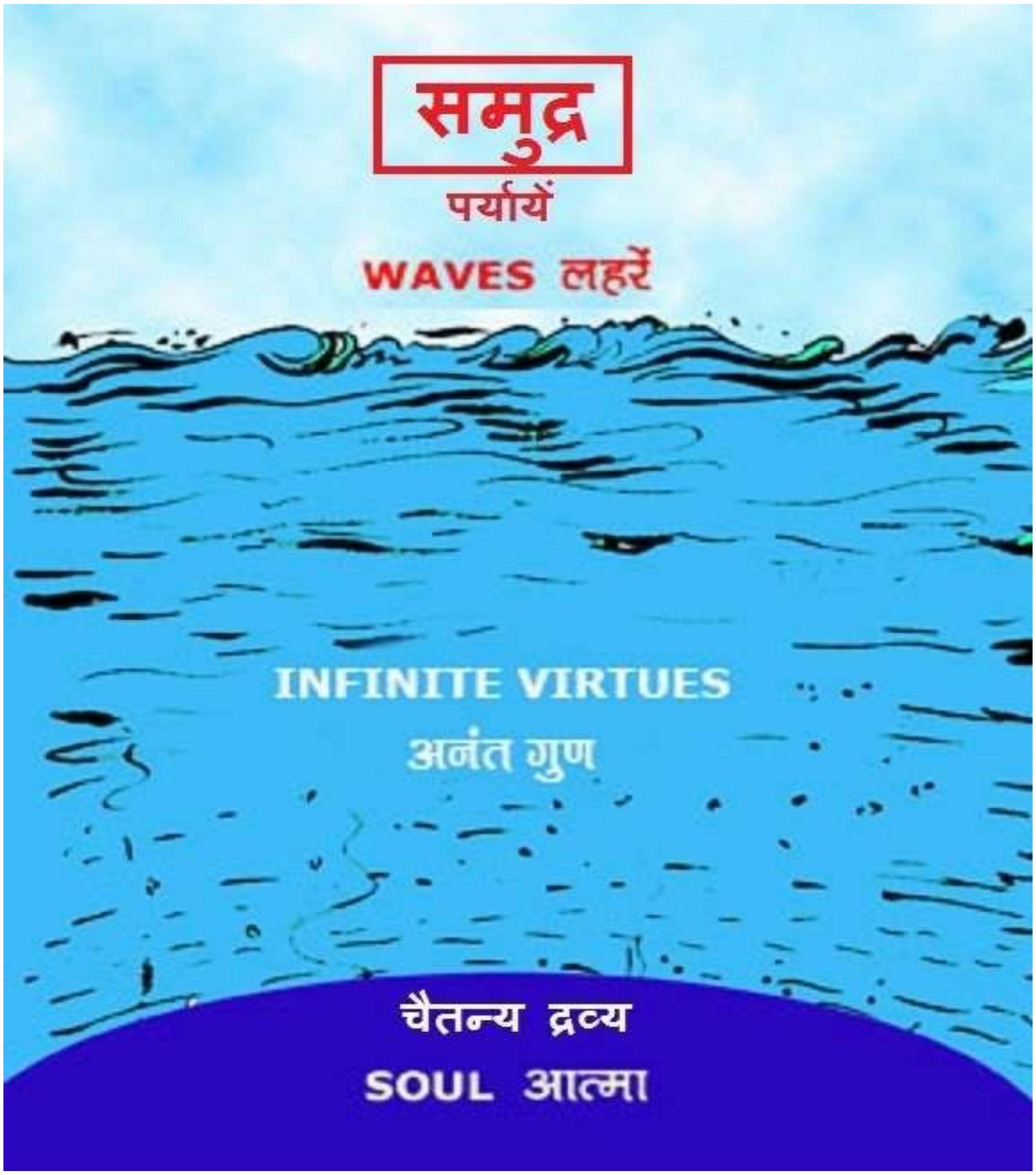

समुद्र में जितनी बूँदे हैं, उतने ही गुण मुझ में समाये हुए हैं और जिस तरह अनादि से समुद्र जैसा का तैसा है, ऐसे ही मेरे भी अनन्त गुण वैसे के वैसे ही ही भरे पड़े हैं। फिर भी चित्र में जिस तरह स्पष्ट है,

1. मैं भी गुणों से अत्यंत भिन्न ही हूँ।
2. मैं तो राजा हूँ और अनन्त गुण मेरी सेना है।

अत: जिस तरह राजा अलग है और सेना अलग,
उसी तरह मैं भी गुणी होता हुआ भी मुझ में गुणों का अत्यन्त अभाव है।
यहाँ विचारणीय बात यह है कि मुझ में गुण रहें या नही रहें, होवें या न होवें, मुझे उनसे रंचमात्र भी प्रयोजन नही है।

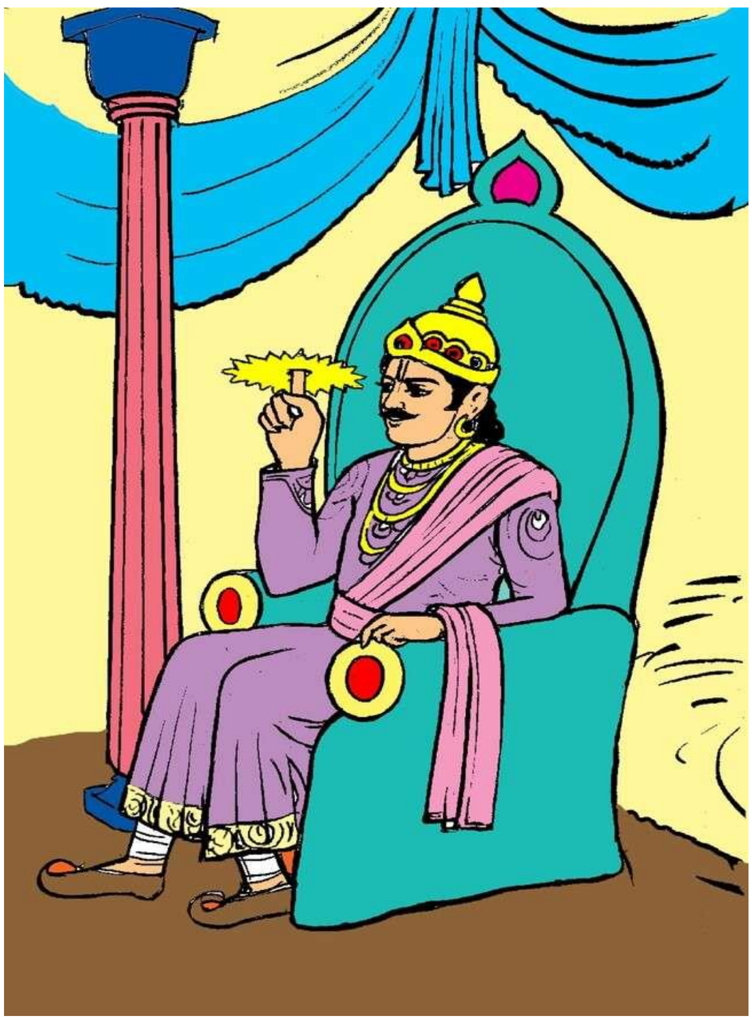

मैं तो राजा ही हूँ और हर जगह राजा ही हूँ और राजा शुद्ध ही होता है, फिर मुझमें अशुद्धि कहाँ से आवेगी?
अत: अब मैं राजा हूँ और इसलिये मेरी जीवन नैया मझधार में नही हो सकती है, यह निश्चय कथन है और ऐसा ही चिन्तन-मनन-घोलन करना चाहिये।
उत्तर 3 (पर्याय) - घड़े में रेत वत अवस्था तो पर्याय अवस्था है और मैं तो पर्याय से अत्यंत भिन्न हूँ। अत: मैं मात्र रेत जितना कैसे हो सकता हूँ?
ऐसी अनन्तानन्त पर्याये जिसके आश्रय से निकल रही हैं, ऐसा मैं निष्कम्प, निष्क्रिय इकलौता द्रव्य हूँ।

जिज्ञासु - आपके पत्र से बहुत सम्बोधित होती हूँ, परन्तु अपने कार्य करने में आलस्य से प्रमादी हूँ अतः असमर्थ हूँ।
करने की खलबली है, परन्तु जितनी होना चाहिये, उतनी नही है. विशेष सभी विचारों से पूर्णत: सहमत हूँ।
अहोss, यह आत्म स्वीकृति सूचक कथन है। यह कथन, ऐसा चिंतन अगर गहराई से उठ रहा है, तो फिर वह जीव को कही अटकने नही देगा।
उसे अपने इष्ट की प्राप्ति अवश्य ही होगी। यह निश्चय कथन है।
पुन: कोई भी व्यक्ति किसी को भी सम्बोधित करने में समर्थ ही नहीं है। आपका खुद का ज्ञान स्वयं ही सर्व समाधानकारी है, अत: आपका स्वयं का ज्ञान ही आपको सम्बोधनकारी है। मैं तो यह सब लिखकर मात्र अपने राग को ही दर्शा रहा हूँ।
आलस्य और प्रमाद तो अनादि से है, सो उसमें कोई ताज्जुब नहीं है। एक बात और है कि यह आलस्य एवं प्रमाद तो चरित्रगुण की अवस्था है और यह आपको कही भी सम्यक दर्शन-ज्ञान से रोकने मे समर्थ नही है।
आलस्य है, सो है. उसमें कोई रंज की बात नहीं। अपने स्वभाव-बल से यह आलस्य तो लीला मात्र में ही दूर हो जायेगा।
हे प्रभो, आपको खलबली तो इतनी मचाना है कि जितनी आपके ज्ञान-समुद्र की लहरें बाहर की तरफ जा रही हैं उन्हें; जिस तरह कढ़ाई पर मलाई को उलटते हैं, उसी तरह समस्त लहरों को एक बार अपने निज-पुरुषार्थ के जोर से उलटकर द्रव्य को लक्ष्य करें; ऐसा बनाना है।
एक-एक लहर को नहीं, अपितु समस्त लहरों को द्रव्य के स्वभाव बल (ज्ञाता द्रष्टापना) से उलट देना है।

फिर कुछ भी करना शेष नही रह जायेगा; क्योकि जड़ कट जाने पर शाखा-पत्ते कितने समय तक टिकेंगे? ' जितनी ' और ' उतनी ' का प्रश्न ही नही है, क्योकि मैं जो हूँ, सो हूँ।

हे प्रभो, आपका मेरे विचारों से सहमति से ही काम नही चलेगा, अब आपको अपनी आत्मा से भी सहमति लेना चाहिये।

मेरे से असहमत होकर भी हो सके, तो लें; क्योंकि आपके लिए कार्यकारी तो वही रहेगी।

ॐ शांति.

16 मदहोशी

अहोऽऽ, यह कितना आश्चर्यजनक है कि -

1. इस संसार में जहां देखो, वहीं पर कर्म रूपी अग्नि जल रही है।
2. प्रति समय यह अग्नि अनन्त जीवों को जला रही है।
3. यह जो आपका प्रिय शरीर है, वह भी कर्म रूपी अग्नि का ही बना हैं;
4. आपका मकान, जायदाद, परिवार, धन आदि जो भी आपको मिले हैं,
5. वे भी कर्म ही के ईंधन हैं,
6. जो सब प्रति समय आपकी आत्मा को झुलसा रहे हैं.
7. किन्तु आपको उसकी वेदना किंचित भी नहीं हो रही है।
8. कभी आपने विचार किया है क्या कि ऐसा क्यों हो रहा है?
9. जब अनन्त केवली भगवन्त आपको कर्मो की अग्नि में जलता हुआ देख रहे हैं, तब आपको उसकी पीड़ा महसूस क्यों नहीं हो रही है?
10. यह आपके लिये अत्यन्त गम्भीर प्रश्न होना चाहिये।

आइये, इस बात को समझने के लिए हम निम्न द्रष्टान्त का सहारा लेते हैं –

एक गाँव का जमींदार स्वयं के निज महल में सपरिवार सुख से रह रहा था। फिर किसी दिन कुछ डाकू आये और उसके परिवार को मारकर, उसके घर को जलाकर, उसका सबकुछ लूटकर और उसे पकड़ कर जंगल में ले गये और वहां पर उसके हाथ-पांव काट कर, उसकी आखें फोड़कर उसे मरा हुआ समझ कर छोड़ जाते हैं।

वास्तव में वह जमींदार बेहोश हो गया था. जब उसे होश आता है, तब वह दर्द से अत्यन्त व्याकुल होकर छटपटाता और तड़फता ही रहता है. इस अवस्था में वह कई घंटों तक पड़ा रहा.

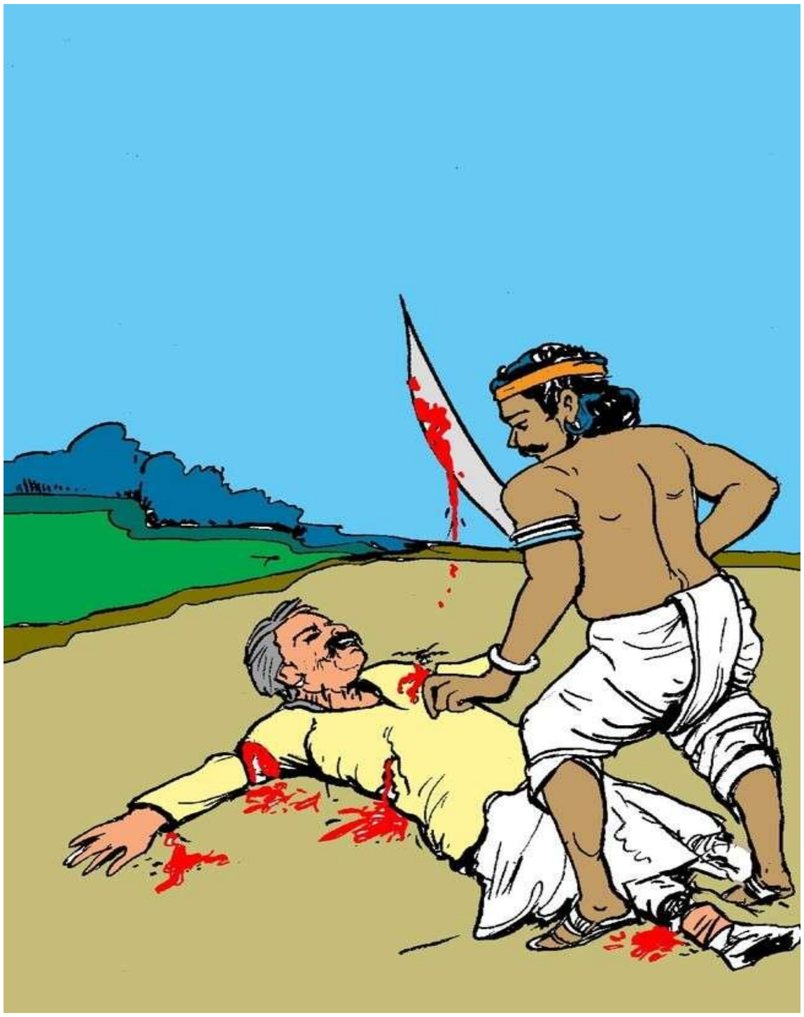

अब आप ही बताइए कि ऐसी गंभीर अवस्था में उसे भूंख या प्यास लगेगी? क्या उसे नींद आयेगी या किसी भी तरह के भोग-उपभोग की भावना होगी?
सच्चाई यह है कि वह तो बस भयानक पीड़ा में तडफ़ता ही रहता है।
फिर देवयोग से कुछ गाँव वाले आकर उसे बचाते हैं औेर अस्पताल भर्ती कर देते हैं।
डाक्टर उसे अत्यन्त बैचेन और तड़फता देख तीव्र नशे का इंजेक्शन लगा देते हैं, जिससे वह कुछ समय के लिये बेहोश हो जाता हैं।

फिर जब उसे होश आता है, तो नशे की दवाई के कारण मदहोशी में रहने के कारण उसे कोई भी दर्द महसूस नहीं हो रहा होता है।
जब डाक्टर पूंछता है कि कैसा लग रहा है, तब वह कहता है कि अच्छा लग रहा है; जबकि डाक्टर और वहां पर उसके दोस्त और रिश्तेदार आदि सभी हमदर्द और हितेषी लोग जान रहे हैं कि उसकी हालत अत्यन्त गम्भीर है।
हे प्रभो, अनन्त केवली भगवन्त, सिद्ध भगवन्त आदि सभी आपके सगे रिश्तेदार अपने केवलज्ञान में आपको देख रहे हैं कि आपकी दशा तो उपरोक्त व्यक्ति से भी कई गुणा ज्यादा गम्भीर है, क्योकि आपके सभी अनंत गुण रूपी अंग कट गये हैं. फिर भी आपको इसका एहसास नहीं हैं, इसकी पीड़ा महससूस नहीं हो रही है, तो इसका एकमात्र कारण यह है कि आपने तीव्र मोह रूपी इंजेक्शन खुद ही लगा लिया है और अब इस मदहोशी की अवस्था में आप कर्मो की ज्वाला से सतत झुलसते रहने पर भी कोई दर्द महसूस नहीं कर रहे हो और अपने कर्तत्वपने के मिथ्या अभिमान में चूर होकर भाव-बंध कर रहे हो।
समस्त सिद्ध भगवंत और ज्ञानीजन आपकी इस गहन गम्भीर अवस्था देखकर अत्यन्त करूणावश आपको इस तीव्र नशे के इंजेक्शन से दूर रहने की सलाह दे रहे हैं, ताकि आप खुद की सच्चाई को जान लो और वस्तु स्वरूप को समझ कर अपना कल्याण कर सको; अन्यथा शीध्र ही इस त्रसपने की पर्याय का नाश होगा ओर तब आप पुनः अनन्तकाल के लिये मरण को प्राप्त हो जाओगे।

17 कीचड़

शिष्य - हे प्रभू, मैं नियम से अपनी आमदनी का चतुर्थ भाग दान देता हूं। मेरा यह कार्य मेरी उत्तम गति में अवश्य ही सहायक होता होगा। कृपया स्पष्ट करें।
सदगुरू - हे जिज्ञासु, जरा ध्यान से सुन।

देवनन्दी स्वामी द्वारा रचित इष्टोपदेश के सोलहवें श्लोक में आचार्यदेव कहते हैं कि -
2. जो व्यक्ति सिर्फ और सिर्फ पुण्य प्राप्ति की भावना से दान करने के लिये धन कमाता है, वह स्नान कर लूंगा, ऐसा सोचकर अपने शरीर में कीचड़ लपेटता जाता है।

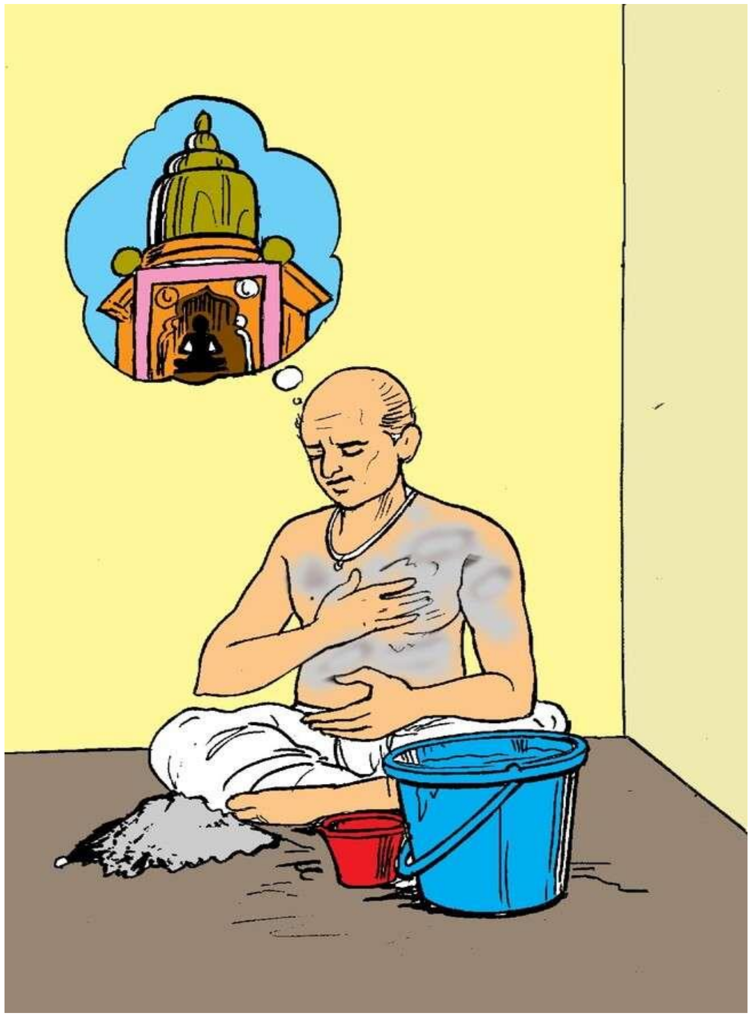

अहोss, कितना गंभीर और आँखे खोलने वाला कथन यह है.
जो जीव पुण्य प्राप्ति की, अच्छी गति या सांसारिक सुख की भावना से दान करने के लिये धन कमाता है, वह तो अपने शरीर पर सिर्फ कर्म रूपी कीचड़ ही लपेटता जाता है और इस तरह अपनी चैतन्य आत्मा पर कीचड़ रूपी गन्दगी ही बढ़ाता जाता है।
हे प्रभो, इस गन्दगी को दूर करने का एकमात्र उपाय यह ही बचा है कि आप अब स्नान कर अपने आपको पूर्ण शुद्ध कर लो।
अत: हे प्रभो, अब आप भी किसी लाभ, फायदे की इच्छा, आकांक्षा से दान करने के लिये कीचड़ रूपी धन कमाने का प्रयत्न बंद कर दो,
नहीं तो यह मान लो कि आप अपने आत्मा पर इस कीचड़ का बोझा और लाद रहे हो।
फिर आपको अपनी आत्मा को साफ करने में उतनी ही ज्यादा मेहनत करनी होगी।

लेकिन कुछ ही समय बाद इसे साफ़ करना असंभव हो जाएगा और फिर आप अनंत काल के लिए निगोद में पहुँच जाओगे.
हे प्रभो, यहां पर दान करने के लिये धन कमाने को कीचड़ कहा है।
लेकिन अगर आप अपनी किसी स्वार्थ की पूर्ति के लिये धन कमाते हो और भले ही आप उसका कुछ अंश दान कर देते हो, तो वह तो ऐसा ही हो रहा है, जैसे आप अपने शरीर पर कीचड़ से भी बड़ी गंदगी लगा रहे हो।
आपके इस कार्य से आपका यह भव तो बिगड़ेगा ही, साथ ही आगामी अनन्त भव भी बिगड़ जावेगें।

18 सच्ची विरक्ति को समझें

शिष्य - हे प्रभो, मैं सभी तरह के सतकर्म कर रहा हूँ जैसे कि भक्ति-पूजा, नियम-संयम, व्रत, जप-तप आदि। ये सभी कार्य करते हुए भी मुझे इस संसार से विरक्ति नहीं हो रही है, अतः मुझे क्या करना चाहिए?
सदगुरू - हे वत्स, आपका यह प्रश्न बहुत उत्तम है और आपकी आगामी अच्छी होनहार का परिचायक है।
आपकी ऐसी उत्तम भावना आपको इन सतकर्मो में, सदाचार में कहीं भी अटकनें नहीं देगी और आपका कल्याण करायेगी।
बस आप अपने समस्त कर्तत्व का त्याग कर अपने निज उपयोग को अपने आत्मदेव में ही केन्द्रित रखो। अब जब भी कभी आपका अपने निज चैतन्य तत्व से उपयोग विचलित हो, तब इस तरह विचार करो कि -

1. अनादिकाल से अनंत बार हुई चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक में आपने भी अनन्तबार जन्म-मरण किया है।
2. अनादिकाल से आजतक के समुद्र बराबर समय में तो प्रत्येक जीव ने निगोद में ही जन्म-मरण किया है या फिर एकेन्द्रिय के जन्म धारण किये हैं।

3. अपने कल्याण करने का विचार भी आपको अनन्त मनुष्य भव धारण करने के बाद कदाचित किसी-किसी भव में ही आता है, जो कि समुद्र की एक बूंद के समान दुर्लभ है।

4. इसमें भी सदगुरू का सुयोग मिलना, उनकी देशना मिलना, यह तो असंभव सरीखा ही है।

5. फिर भी हे देव, यह असंभव योग भी आपको अनन्तबार मिला है। फिर भी आपने अपने आत्मदेव के ऊपर द्रष्टि नहीं की है।

6. समवशरण में जाकर आपने साक्षात तीर्थंकर भगवंत की वाणी भी अनन्त बार सुनी, किन्तु फिर भी आपने उसका कोई लाभ नहीं उठाया।

7. इस मनुष्य भव में आपने अधिक से अधिक इस संसार के, नरकादि के, तिर्यन्चों के दुखों को टालने ही भावना रखी है और सांसारिक सुखों को पाने की और उन्हें प्रगटाने वाली भौतिक भोग-उपभोग की सामग्रियों की, स्वर्गादिक की ही कामना की है।

8. इस तरह आपने मात्र कुछ भवों के दुखों को टालने की और कुछ भवों के सुखों को पाने की भावना दर्शायी है।

9. ऐसा करते हुए आप यह भूल गये कि आपका स्वरूप तो अनादि-निधन है, परमात्ममयी है, चैतन्य चमत्कार है।

उपरोक्त वर्णित अपार दुखों के सामने वर्तमान के आपके दुख तो सूई की नोक जितने भी नहीं हैं।

अत: ऐसे वर्तमान के अल्प दुखों को टालने की कोशिश करके आप अपने अनादि-निधन परमात्म स्वरूप को नहीं प्राप्त कर सकते हो।

जो चैतन्य-प्रभाकर अपने अन्तरंग में अत्यन्त-अत्यन्त दुखी होकर विचार करता है कि वह बूंद बराबर समय को छोड़कर समुद्र बराबर समय तो निगोद में ही रहा है. ऐसा विचार करके फिर वह वर्तमान में ही अपने आपको निगोद के अकथनीय दुखों की वेदना से तप्त पाता है।

इसलिए अब उसकी द्रष्टि अपनी वर्तमान मनुष्य पर्याय से हट जाती है तथा फिर अनादिकाल से उसने जो घनघोर दुख उठाये हैं;

वे अब आगे और न हों, ऐसी कोशिश में वह पूरे मनोयोग से जुट जाता है।

अनन्त दु:खों को टालना अनन्त सुख के आश्रय से ही संभव है, क्योंकि दोनों में अनन्तता का समावेश है।

इस तरह परमात्म स्वरूप को पाने की, सच्चे धर्म को प्राप्त करने की और कोई अन्य विधि होती ही नहीं है।

अत: हे प्रभो, जब तक आपकी द्रष्टि वर्तमान पर टिकी है, तब तक आपको यह संसार दिखता ही रहेगा और तब तक ही आपकी इससे विरक्ति असंभव है।

एक बार अगर आपकी द्रष्टि अपने अनादिकाल से अभी तक के स्थायी निवासस्थान निगोद पर पड़ गयी, तब आप तत्काल उस मेंढक की तरह उछलकर बाहर आ जाओगे, जो उबलते हुए पानी में जा गिरता है और तत्काल ही उछलकर बाहर आ जाता है।

वही मेंढक अगर ठंडे पानी में बैठा रह रहा हो और उस पानी को कोई अगर धीरे-धीरे गर्म करें तो वह उस पानी से बाहर नहीं आता है और वहीं पर पड़ा हुआ अत्यन्त आकुलित होता हुआ उबलकर मर जाता है, नष्ट हो जाता है ।

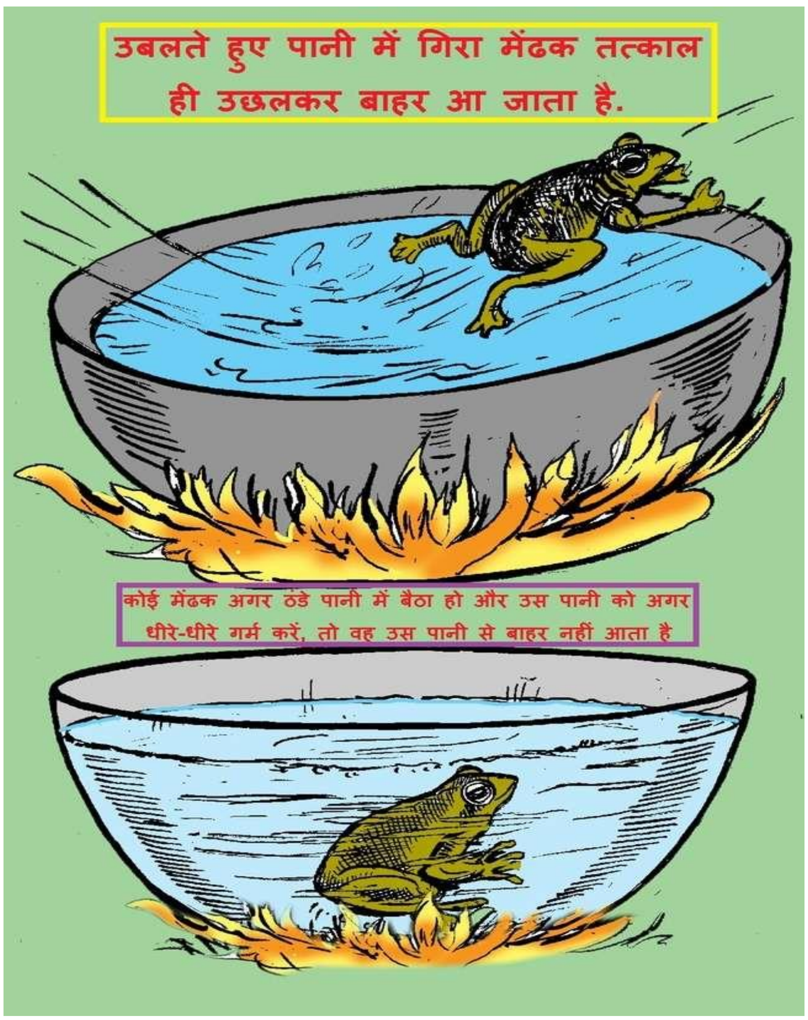

हे प्रभो, आपकी स्थिति भी ठीक वैसी ही है। वर्तमान में आप भी मेंढक के समान कदाचित अल्प साता के ठंडे जल में पड़े हुए हो और जैसे-जैसे असाता का उदय बढकर इस ठंडे जल को गर्म करता जाता हैं, आप वहीं पर आकुलित होकर चक्कर लगाने लगते हो और शीध्र ही आपकी इस त्रस पर्याय का नाश हो जाता है और फिर आप एकेन्द्रिय या निगोद में पहुंच जाते हो।

अगर आपको अभी ही इन निगोद रूपी दुखों का उबलता पानी दिख जावे तो तत्काल आप उसमें गिरते ही उछलकर बाहर आकर इस लोक के शिखर पर बैठ जाओगे।

अतः हे परमेश्वर, अब और कुछ मत करो, क्योकि करने योग्य बस यही कार्य है.

प्रत्येक जीव को अपनी द्रष्टि अपने स्वयं के अनादि-अनन्त सच्चे यथार्थ स्वरूप पर ही रखना चाहिए और यह मान लेना चाहिए कि वह अभी निगोद से निकला ही नहीं है.

कारण यह है कि अनादिकाल से लेकर आज तक प्रत्येक जीव समुद्र समय तो वहां ही रहा है और बूँद बराबर समय के लिए ही वहां से निकला है.

फिर उस निगोद में आप दुबारा न पहुंचे, बस इस बात को टालने के लिये अपनी द्रष्टि को अपने सहजसुख-धाम, परमात्म तत्व, चैतन्य द्रव्य पर रखने से प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण निश्चित ही होगा।

19 मिठाई

इस संसार में अधिकांश व्यक्तियों को मिठाई बहुत रूचिकर और आनन्ददायक लगती है।

कोई भी खुशी का मौका हो, उस समय मुंह मीठा कराकर उस प्रसंग को मनाया जाता है।

जब भी हम किसी को खाने पर बुलाते हैं, तो उस समय भी एक डिश मीठे की अवश्य रखते हैं।

किसी भी पार्टी या भोज में भी मिठाई अवश्य परोसी जाती है और आप उस समय उसे बड़े प्रेम से खाते हो।

कोई हलवाई या किसी दूकान की कोई विशेष अच्छी मिठाई बनती है, तो लोग उसे लेने दूर-दूर से आते हैं।

इस तरह अक्सर हम देखते हैं कि सामान्यत: सभी लोगों को मिठाई काफी पसंद आती है, किन्तु यही मिठाई अगर किसी डायबटीज या मधुमेह के रोगी को बहुत आग्रह पूर्वक खिलाई जाये, तो उसे वह नुक्सान करती है और वह परेशान हो उठता है।

ये सब बहुत सामान्य बातें हैं और आप और हम सभी इन्हें रोजमर्या के जीवन में स्वीकार भी कर लेते हैं.

लेकिन क्या आप कभी भी इस बात पर भी विचार कतरे हैं कि जो मिठाई सामान्यत: सभी को आनन्ददायक प्रतीत होती है, वही कुछ को पीड़ादायक कैसे हो जाती है?

इसका कारण स्पष्ट है.

किसी भी जड़ प्रदार्थ में ऐसी शक्ति नहीं होती है कि वह किसी चैतन्य पदार्थ को अनुभूति प्रदान कर सके।

फिर यह जो मिठाई के खाने में आपको जो रूचिकर स्वाद आ रहा है, वह कहां से आ रहा है?

अगर किसी मिठाई में ही आनन्द देने वाली कोई शक्ति होती, तो वह जो भी उसे खाता, उसे ही आनन्द देती, किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है; क्योकि डायबटीज, बुजुर्ग और बीमारों को यह मिठाई तकलीफ भी दे सकती है.

यहां पर एक और विचारणीय प्रश्न यह भी है कि जो भी वस्तु किसी दूसरे को आनन्द दे, उसे स्वयं आनन्द न मिले, यह कैसे संभव है?

किन्तु मिठाई में जड़पना होने से उसमें किसी भी तरह की अनुभूति का अभाव रहता है, इसलिये वह स्वयं आनंदित नहीं होती है और जिसको स्वयं आनन्द नहीं मिल रहा हो, वह दूसरों को आनंदित करे, यह असंभव है।

फिर यह मिठाई को खाने पर जो आपको आनंददायक सुख की अनुभूति हो रही है, वह कहां से हो रही है?

हे भव्य प्रभो, जरा ध्यान से इस बात को समझो. यह सुख की अनुभूति तो आपके निज चैतन्य आत्मा में जो सुख का महासमुद्र भरा हुआ है, उसी में से छलक रही है। फर्क इतना ही है कि आपकी द्रष्टि इस समुद्र पर नहीं है, इसलिये आप ऐसा मानते हो कि यह आनन्द मिठाई में से आ रहा है।

हे प्रभो, यह बहुत विपरीतता है भाई। अहोSS, आपके अन्दर अनन्त सुख का महासमुद्र हिलोरे मार रहा है और आप सुख को बाहर की वस्तु में, जड़ पदार्थ में खोज रहे हो।

यह बात अगर आपने अपने अंतर्मन से स्वीकार कर ली, तो फिर आपको इस संसार से कुछ भी पाने की आकांक्षा, इच्छा शेष ही नहीं रहेगी।

तब आप भी इस लोक के ऊपर अपने आपको तैरता हुआ पाकर अपने त्रिकालवर्ती परमात्म-स्वरूप को प्राप्त कर सकोगे.

हे प्रभो, मिठाई का तो एक उदाहरण है। इसी तरह जिस किसी भी वस्तु को आप सुख पाने की आशा से गृहण करना चाहते हो, उस वस्तु के प्रति अब अपने मोह का त्याग कर वस्तु-स्थिति को गृहण करो।

इस उदाहरण में यह भी सम्मिलित है कि जिस तरह कोई भी जड़ प्रदार्थ सुख देने में समर्थ नहीं है, उसी तरह वह दुख देने में भी समर्थ नहीं है।

अत: अब आपको न तो किसी पदार्थ से राग करना चाहिये और न ही किसी से द्वेष।

यही सच्ची वीतरागी परिणति होती है।

20 संसार चक्र

1. हे प्रभो, शास्त्रों के अनुसार आपने अनादिकाल से चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक में अनन्त बार जन्म-मरण किया है।

2. आपने पंचेन्द्रियपने में भी अनन्तभव धारण किये हैं।

3. लेकिन इससे भी अनन्तगुने भव आपने चार इन्द्रिय के धारण किये हैं।

4. इससे भी अनन्तगुने ज्यादा भव आपने तीन इन्द्रिय के धारण किये हैं।

5. फिर उससे अनन्तगुने ज्यादा दो इन्द्रिय के और उससे भी अनन्तगुना ज्यादा भव आपने एकेन्द्रिय के धारण किये हैं।

6. एकेन्द्रियपने में आपने जितना समय व्यतीत किया है, उससे अनन्तगुना ज्यादा समय आपका निगोद में रहा है।

अहोSS, कितना गंभीर कथन है यह।

हे प्रभो, इन सब भव भ्रमण में आपने अनन्तानन्त दुख उठाये हैं, जिनका वर्णन करने में यह लेखनी भी असमर्थ है। फिर भी आप वर्तमान के अपने इस मनुष्य भव पर इतना अभिमान कर रहे हो और अन्य मनुष्यों और तिर्यन्च आदि को हीन मानकर दुत्कार रहे हो, उनको पीड़ा पहुंचा रहे हो।

आपका यह मिथ्या अभिमान जिन्हें आप छोटा तुच्छ जान रहे हो, उनके अभी के जन्म के समान आपके खुद के भी ऐसे कई गुणा भव करवायेगा और तब वे आज के हीन जीव ही, फिर उस समय उच्च पद पाकर आपको इसी तरह प्रताड़ित करते रहेंगे।

हे प्रभो, इस तरह यह उच्च और निम्न पद का चक्र चला रहेगा और बारी-बारी से सभी प्राणी ऐसे ही ऊपर नीचे चक्कर लगाते रहेंगे।

इस बात को हम विज्ञान के एक सरल उदाहरण से समझाते हैं -

एक कांच या बोरोसिल के पात्र में तीन चौथाई पानी भरकर फिर उसमे लाल दवा या पोटेशियमपरमेगनेट के कुछ कण डालकर हम जब उसे गरम करते हैं, तो उसके एक-एक लाल अणु गरम होकर हमें ऊपर आते दिखते हैं और फिर औेर दूसरे गरम अणु ऊपर आकर इसे नीचे ठेल देते हैं।

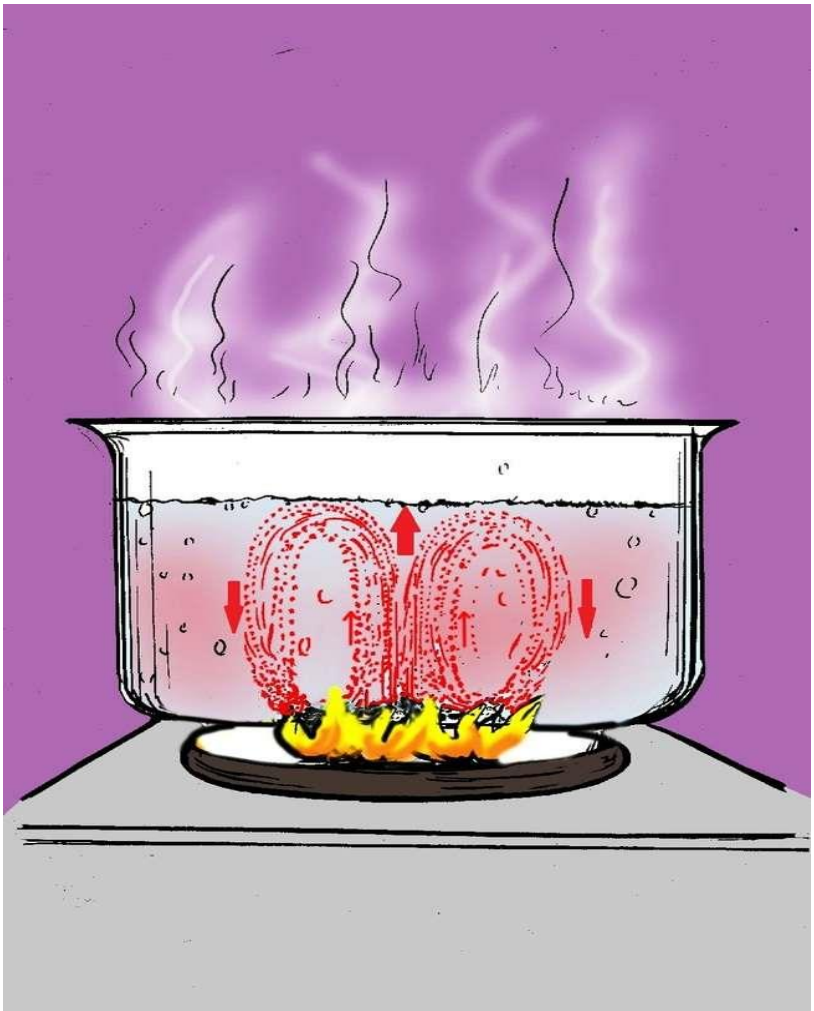

इस तरह जब तक अग्नि का साथ रहता हैं, तब तक ये लालकण ऊपर आते रहते हैं, फिर नीचे आ जाते हैं। इस तरह यह उतार-चढ़ाव का चक्र चलता रहता है।
इसी तरह हे प्रभो, आप भी इस मिथ्यात्व रूपी अग्नि का संग पाकर कभी उच्च पद प्राप्त करते हो और फिर परम्परा से कुछ काल बाद निम्न पद प्राप्त करते हो।
इस तरह आपका यह जन्म-मरण का चक्र अनादि से चल रहा है।
इस संसार चक्र से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय इस मिथ्यात्व रूपी अग्नि को नष्ट करना ही है।
फिर आप अपने परमपद को पाकर लोकाग्र में विराजमान हो जाओगे और इस जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर अनन्त सुख के अमृत कुण्ड में सदाकाल के लिये निमग्न रहोगे।

21 संसार रुपी अँधेरे में कहाँ हो आप?

शिष्य - हे प्रभो आप हमेशा मुझे समझाते हो कि प्रत्येक वस्तु या पदार्थ अनादि-अनन्त है, स्थायी है, कभी भी नष्ट नहीं होता है, किन्तु हमें तो यह संसार परिवर्तनशील दिखता है।
इस संसार की प्रत्येक वस्तु विनाशवान होने वाली दिखती है; लेकिन हम तो अविनाशी होना चाहते हैं, अतः हमारा उद्धार कैसे संभव हो सकता है?
सदगुरू - हे वत्स, आपके प्रश्न से यह प्रतीत होता है कि आपको इस संसार से वास्तव में थकान लग रही है। आपकी यह उदासीन प्रवृत्ति अगर 6 माह भी रह गयी, तो फिर आपका कल्याण निश्चित है।
इस उदासीन प्रवृत्ति की तुलना आप रात के अंधेरे से कर सकते हो।
जिस तरह आपको रात के घनघोर अंधेरे में कुछ भी दिखाई नहीं देता है और फिर आप उससे भयाक्रांत हो उठते हो; उसी तरह इस संसार से उदासीन व्यक्ति भी अपने चारों ओर दिख रहे इस घनघोर अंधेरे में भयाक्रांत हो उठता है।

हे प्रभो, जैसे इस अंधेरे में आपकी सभी तरह की प्रिय और अप्रिय वस्तुएं गुम हो जाती हैं, उसी तरह की सच्चे उदासीन या मुमुक्षु जीव की इस उदासीनता में भी इष्ट और अनिष्ट, दोनों तरह की वस्तुऐ इस संसार रुपी अँधेरे में खो जाती हैं और फिर मात्र उदासीनता रूपी स्वभाव-द्रष्टि ही बची रह जाती है।

हे प्रभो, आपकी वर्तमान पर्याय तो एक प्रवाहमान नदी की तरह है, जो जब तक समुद्र रूपी अपने निज चैतन्य-स्वभाव में नहीं मिलती है, तब तक अपूर्ण ही रहती है और अगर नहीं मिल पायी, तो कहीं पर भी सूख कर खो जाती है।

हे प्रभो, आपके अनादि-अनंत निज-स्वभाव रूपी समुद्र में मिलते ही आपकी वर्तमान अशुद्ध पर्याय नष्ट होकर सादि-अनन्त सत्ता की पर्याय प्रगट होती है।

किसी भी नदी के थोड़े से जल को देखकर कोई भी विश्वास नहीं कर सकता है कि उसकी सत्ता समुद्र-प्रमाण भी हो सकती है, क्योकि जो प्रवाह इधर-उधर व्यर्थ ही किसी भी पत्थर की चट्टान से टकराता रहता है, वह सदैव ही नष्ट हो जाता है।
नदी, नालें, बादल आदि तो समुद्र की ही एक पर्याय हैं, उसकी असीम शक्ति की एक झलक ही है।
इसी तरह आपकी यह मनुष्य-भव रूपी पर्याय तो आपकी अनन्त शक्ति का बहुत छोटा अल्प भाग ही है। उस अल्प पर्याय पर द्रष्टि रखने से आपकी अलौकिक शक्ति, सामर्थ्य का आपको पता नहीं चल सकता है।
हे प्रभो, जो नदी धीर-गम्भीर होकर शांत भाव से गमन करती है और जिसको अपने अनादि-अनन्त वस्तु स्वरूप का ही लक्ष्य है; वह नियम से अपनी समुद्र समान त्रिकाल सत्ता मे जा मिलती है।
अन्य सभी प्राणी, जो अपने आत्मदेव के अनादि-अनन्त स्वरूप को नहीं जानते हैं, नहीं मानते हैं, वे उसे कैसे पा सकते हैं?

22 तीन लोक का नाथ, भींख मांगे आज

शिष्य – हे गुरुवर, यह सही है, ठीक है कि हम आत्मा की प्राप्ति नहीं कर पा रहे हैं, किन्तु उसे प्राप्त करने के लिये तो हम दिन-रात भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं, सदगुरूओं के वचनों का बारम्बार श्रवण कर रहे हैं, शिक्षण शिविरों में सम्मिलित हो रहे हैं।
अतः अब हमें पूरी उम्मीद है कि ऐसा करते-करते हमारा कल्याण अवश्य ही होगा।

सदगुरू – हे वत्स, अगर मैं कहूँ कि आप यह मान लो कि आप एक अरब-खरबपति व्यक्ति हो। फिर आप बताओ कि अगर आप इतने धनवान हो, तो क्या आप किसी भी स्थिति में एक रूपये की भीख मांग सकते हो? किसी भी परिस्थिति में ऐसा करना आपके लिए असम्भव ही होगा।
अब आप फिर यह भी बताओ कि क्या तीन लोक के नाथ होते हुए, अनन्त गुणों के स्वामी होते हुए भी आप कटोरा लेकर एक रोटी की भीख मांगोगे?
क्या यह कभी भी संभव हो सकता है?

साथ ही यह भी बताओ कि किसी तीन लोक के नाथ को, त्रिलोकपति को कोई कुछ भी देने में समर्थ है क्या?

हे प्रभो, जब आपकी निज-वस्तु आपके ही पास है, फिर आप दूसरों से, यहां तक कि सिद्ध भगवन्तो से भी उसे क्यों मांग रहे हो?

थोड़ा विचार तो करो कि अगर आपके पास कोहिनूर हीरा हो, तब आप क्या किसी और से उसे मांगोगे और क्या वह आपको वह हीरा दे पाने में समर्थ होगा?

इसी तरह हे प्रभो, आपकी वस्तु आपके ही पास है; उसे कोई दूसरा आपको दे भी कैसे सकता है?

आपका द्रव्य, उसके अनन्त गुण और उसकी अनन्तानन्त पर्यायों को भोगने में सिर्फ आप ही समर्थ हो।

कोई कितना ही बलशाली क्यों न हो, वह आपकी एक भी पर्याय को न तो भोग सकता है न हीं आपको दे सकता है।

हे प्रभो, अपने चैतन्य महल को छोड़कर आप गांव-गांव, गली-गली, बस्ती-बस्ती भटक रहे हो और अपनी आत्मा की भिक्षा मांग रहो, तो यह जान लो कि आपके इस भिखमंगेपने से आपका किंचित भी लाभ नहीं होने वाला है।

आज तक किसी भी भिखारी ने भिक्षा मांग-मांग कर अपना राजमहल नहीं खड़ा किया है। इसलिये आप जो यह सोच रहे हो कि ऐसा करते-करते आपका कल्याण हो जावेगा, तो यह आपकी मृगमरीचिका ही है और शीध्र ही अपनी इस भूल के कारण आपके त्रसपने की पर्याय का भी नाश होगा और तब आप हमेशा की तरह पुनः एकेन्द्रियपने, निगोदपने में पहुंचकर अनन्तकाल के लिये भूमि में मिल जाओगे।

अतः इस भिखमंगेपने का त्याग कर परम-राजत्व पाने को धारण करने से आपका निश्चित ही कल्याण होगा.

23 पात्रता

शिष्य - हे प्रभो, मैं अपनी पूर्ण शक्ति से अपने चैतन्यदेव को पाने की कोशिश कर रहा हूं, फिर भी उसे प्राप्त नहीं कर पा रहा हूँ.
कृपया मुझे मेरी भूल बताकर मेरे ऊपर कृपा करें.
सदगुरू - हे वत्स, आपका प्रश्न बहुत उत्तम है किन्तु क्या आपको खुद इस प्रश्न की गहराई पता है?
ऐसा प्रतीत होता है, कि जब आपको कोई सांसारिक कार्य करना होता है, तब आप उसके लिये अपनी पूरी शक्ति और संसाधनों से जुट जाते हो। सिर्फ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिन-रात मेहनत करते हो, अपने घर और परिवार को भी भूल कर सभी तरह के जतन और प्रयत्न करते रहते हो.
आत्मा की प्राप्ति के लिये भी आप इसी तरह की मेहनत और प्रयत्नों को करने में जुट जाते हो और भक्ति करना, पूजा-पाठ करना, प्रवचन सुनना, स्वाध्याय करना आदि कार्यो में लग जाते हो।
इस तरह आप अपने आप को सुबह से शाम तक व्यस्त रखते हो और बीसियों साल से ऐसा कर आत्मा को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हो।
लेकिन हे प्रभो, आपका यह कृत्य ऐसा ही है जैसे कोई मनुष्य चलनी में दूध दुहे ओर फिर कहे कि मुझे दूध की प्राप्ति नहीं हो रही है।
इसी तरह आप भी कई सालों से ये सब कार्य कर रहे हो, किन्तु फिर भी आपको अपनी आत्मा की प्राप्ति नहीं हो रही है, और अब आप पूंछ रहे हो कि आपकी भूल क्या है?

हे ज्ञान प्रभाकर, जिस तरह दूध दुहने के लिये उपयुक्त पात्र या बरतन की आवश्यकता होती है, उसी तरह इस आत्मा की प्राप्ति के लिये भी आपको उपयुक्त उत्तम पात्र रखना पड़ेगा। ऐसी सच्ची पात्रता या लगन के बिना आत्मा की प्राप्ति असंभव है।

हे प्रभो, जिस तरह किसी भी कार्य की सिद्धि में छहों कारकों आवश्यक हैं,

उसी तरह आत्मा की प्राप्ति में भी छहों कारक लगते हैं।

किन्तु ये सभी कारक एक आत्मा में ही समाये हुए हैं।

ऐसे अपने चैतन्यघन भगवान आत्मा को लक्ष्य में लेने से इन सभी कारकों का परिणमन आत्मा में निश्चित ही होता है और उससे आपकी निर्मल पर्याय की भी प्राप्ति होती है।

हे प्रभो, आपका कर्तव्य तो एक मात्र यह ही है कि आपको अब अपने परमात्म स्वरूपी परमपारणामिक भाव को लक्ष्य में लेकर नि:कांक्षित भाव से, कूटस्थपने से, विकल्पातीत हो कर अपने निज-आत्मा में रम जाना चाहिये, जम जाना चाहिये, तभी आपको आपकी सिद्धि की सिद्धि नियम से और अवश्य ही होगी।

यहां छह: कारकों की चर्चा आयी है, इनका संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है-

1) कर्ता - निर्मल-पर्याय रूपी कार्य को करने वाला ऐसा आपका चैतन्य-आत्मा।

2) कर्म - निर्मल पर्याय ही इस चैतन्य-आत्मा का कार्य है।

3) करण - निर्मल पर्यायों के होने की परिणति रूपी क्रिया भी चैतन्य-आत्मा की ही है।

4) सम्प्रदान - निर्मल पर्यायों का लाभ देने वाला व लेने वाला कारक स्वयं चैतन्य-आत्मा ही हैं।

5) अपादान - निर्मल-पर्याय रूपी कार्य जिसके आश्रय से उत्पन्न हो, ऐसा ध्रुव तो अनन्त पर्यायों के नष्ट होने पर भी ज्यों का त्यो शाश्वत, अक्षत बना रहता है।

6) अधिकरण - निर्मल पर्यायें चैतन्य-आत्मा के आधार से ही प्राप्त होती हैं, और टिकती हैं।

पुन: विचार कीजिये कि यदि किसी जीव के पांव में कांटा लग जावे, तब वह कितना भी अपने घर, परिवार, इष्ट मित्रों में, संसार की सुख सामग्री में रमण करे, किन्तु फिर भी हर समय उसका दर्द कम नहीं होता है।

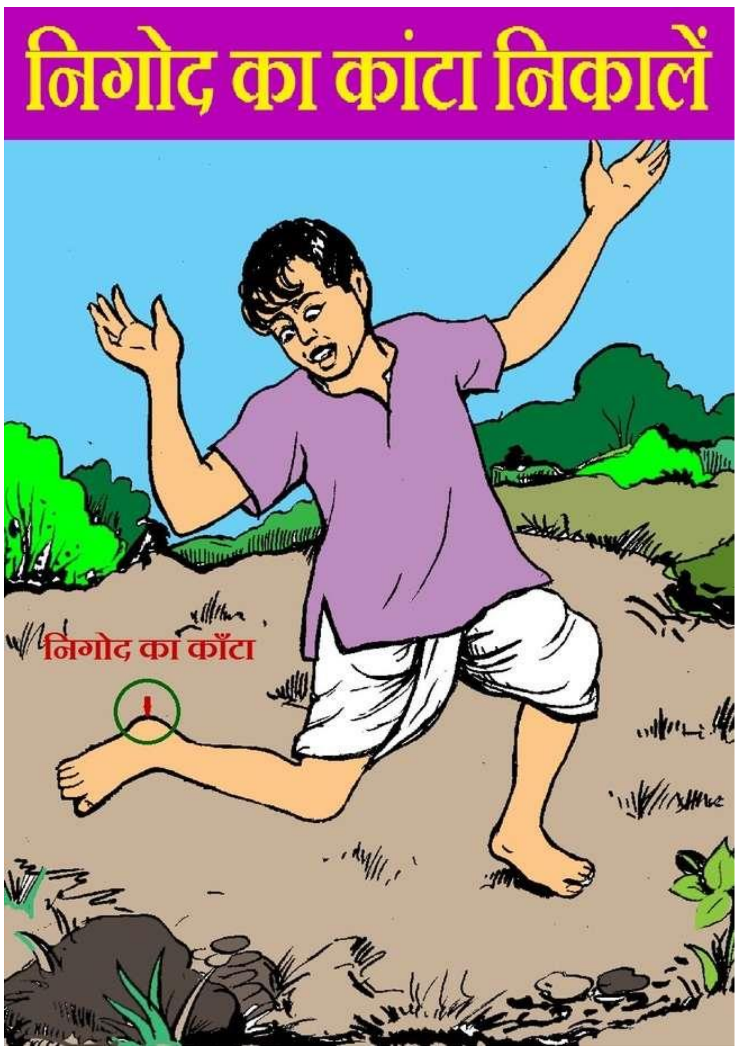

इसी तरह सच्चे पात्र रूपी जीव को संसार के समस्त कार्य करते हुए भी यह संसार एक कांटे के समान लगता है। इस कारण से उसे प्रति समय इस संसार में चलने से घनघोर पीड़ा होती है और इस सांसारिक निगोद के कांटे को निकाले बिना जीव को चैन नहीं मिलता है।
अत: अब तो हे प्रभो, सभी जीवों को शीघ्र ही इस संसार रूपी कांटे को निकालकर अपना कल्याण कर अपने परमात्म स्वरूप को प्राप्त करना चाहिये।

24 अग्नि की लपटें

हे प्रभो, अग्नि से सभी को डर लगता है क्योंकि यह अग्नि अगर भड़क गयी, तो यह आपका कमाया हुआ, पाया हुआ सब कुछ नष्ट करने में समर्थ है।
फिर भी अगर सावधानीपूर्वक नियंत्रित ढंग से इसका प्रयोग किया जावे, तो इस अग्नि की लपटों पर आपका भोजन भी पक सकता है, जिससे आपकी भूख भी शांत हो जाती है और फिर जिससे आपके शरीर का एवं आपके परिवार का भी पोषण होगा।

लेकिन अग्नि के प्रयोग में सावधानी तो रखनी ही होगी, अन्यथा यह उपकारी अग्नि ही अनियंत्रित होकर आपको एवं आपके परिवार को जलाकर आपका सर्वनाश कर देगी। हे प्रभो, जरा विचार तो करो। यह मनुष्य भव भी इस तरह का होता है। इस मनुष्य भव रूपी अग्नि को अगर आपने नियंत्रण में रखा और अपने अनादिनिधन परमात्व-स्वरूप को पाने में इसका उपयोग किया, तो फिर आपकी अनादि की भूख भी शांत हो सकती है, जिससे फिर आपको अनन्त सुख की प्राप्ति होगी।

अत: इस मनुष्य जन्म को व्यर्थ मत गंवाओ और इसे अपने परमात्व स्वरूप की प्राप्ति में लगाओ, तभी आपका यह भव सार्थक हो सकता है; नहीं तो आपके पूर्व भव में कमाये हुए सभी पुण्यकर्म शीध्र ही नष्ट हो जावेगें और फिर आप अनन्तकाल के लिये निगोद की गहन गहराई में समा जाओगे।

अत: हे प्रभो, जिस तरह आप अपनी ओर लपलपाती अग्नि की लपटों से डर कर भागते हो और उनका आलिंगन नहीं करते हो,
फिर आप क्यों मूढ बन कर कर्म रूपी अग्नि से बने इस मनुष्य भव और इसमें मिली अग्नि की लपटों के समान भोग-उपभोग की सामग्री को अपने सीने से लगा रहे हो?
क्या आपको अपने खुद के भस्म होने का डर नहीं है?
अहोss, बहुत गम्भीर बात है भाई। अनंत सुख का दरवाजा आपके सामने खुला पड़ा है। अब तो अपनी द्रष्टि उठाओ और अपने चैतन्य चमत्कार को पाने के लिये उसके अंदर घुस पड़ो।
फिर आपको और कुछ पाने की कभी भी इच्छा नहीं होगी, क्योंकि आपका यह चैतन्य-आत्मा अनन्त सुख रूपी अमृत का ऐसा सागर है, जिसमें आप अनन्त काल तक रमण करते रहो, फिर भी यह सुख रंचमात्र भी कम नहीं होता है। अहोss, भगवान आत्मा की ऐसी ही अदभुत महिमा है।

25 निज-स्वभाव द्रष्टि

शिष्य - हे प्रभो, आप हमें बार-बार समझाते हैं कि आप चैतन्य-परमात्मा हो, किन्तु हमें तो यकीन ही नहीं होता है कि हम इतने महिमावन्त हैं।
हमें तो यह संसार दिखता है, इसलिये यही सच है।
जब तक हमें हमारा आत्मा नहीं दिखेगा, तब तक हम उसे नहीं मानेंगे।
अत: इस गुत्थी को सुलझाने का उपाय बताइये।
सदगुरू - हे वत्स, अगर कोई आपकी आंखो पर पटटी बांध दे, तब आप अपने आपको देख नहीं पाते हो।
लेकिन ऐसा होते हुए भी आप अपने आपको महसूस तो करते ही रहते हो।

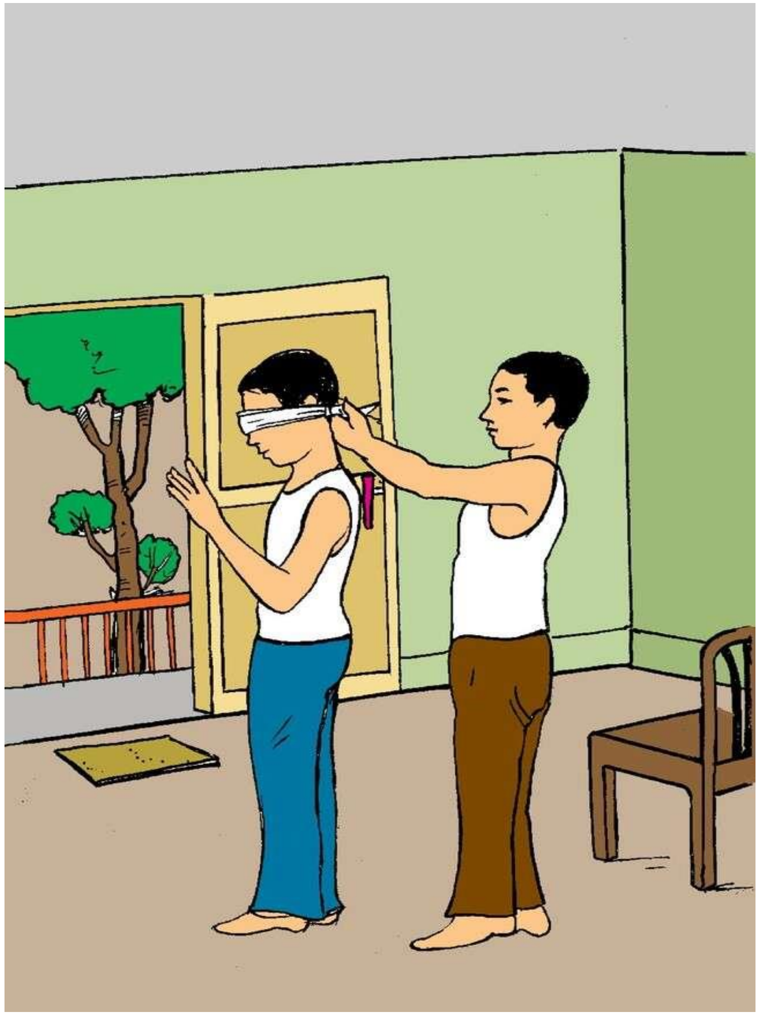

अगर आप ऐसा मानते हो, तो फिर अनन्त तीर्थंकरों द्वारा बताये इस आत्म तत्व को मानने में आपको क्या परेशानी हो रही है?

शिष्य - हे प्रभो, हमने अपने आपको देखा है, इसलिये आंख बन्द होने पर भी हम अपनी सत्ता मानते हैं।

साथ ही आंख बन्द होने पर भी हम स्पर्श और अन्य इन्द्रियों द्वारा अपने आपको महसूस कर सकते हैं, किन्तु आत्मा को तो हम किसी भी तरह महसूस नहीं कर पा रहे हैं, अत: उसे हम अपना माने तो कैसे माने?

सदगुरू - अहो कैसी अचरज की बात हो रही है, क्योंकि आप जो हो, उसके लिये कह रहे हो कि हम कैसे मानें और जो नहीं हो, ऐसे मल-मूत्र, खून, मांस और विष्ठा के कुंड इस नाशवान शरीर को कह रहे हो कि यह आप हो।

इस तरह आप स्वयं स्वीकार कर रहे हो कि इस शरीर के नष्ट होते ही आप भी नष्ट हो जाओगे।

अगर आप अपनी सत्ता इतनी ही मानते हो, तो आपको चैतन्य-आत्मा के बारे में समझाना व्यर्थ है, क्योंकि अभी आपको उसको समझने की योग्यता ही नहीं है।

कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो बाह्य में तो आत्मा को मानते हैं, लेकिन अन्तरंग में उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

ऐसे लोगो को समझाते हैं कि यह बात सही है कि आपने अपने आपको नहीं देखा है, अत: आत्मा के क्षेत्र में आप अंधे ही हो.

किन्तु जिस तरह आप आंखो पर पटटी बंधी होने पर भी स्पर्श इन्द्रिय द्वारा अपने आपको महसूस कर सकते हो,

उसी तरह आप, अगर चाहो तो, अपनी आत्मा के ही मति-श्रुत ज्ञान में अपने आपको महसूस कर सकते हो,

क्योंकि यह जो आपका मति-श्रुत ज्ञान हैं, यह इन्द्रियाश्रित नहीं हैं, मन के आश्रित नहीं हैं।

एक बार अगर आपने अपने मति-श्रुत ज्ञान में नक्की कर लिया कि आप आत्म-स्वरूप हो, तब आप जिनकी प्रतिदिन भक्ति करते हो, पूजा करते हो, ऐसे त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर भगवंतों पर विश्वास रखकर उनके ज्ञानचक्षु का सहारा लेकर खुद के ज्ञाता-दृष्टापने को स्वीकार करो.

फिर आपको अपने निज आत्मदेव के निर्मल स्वरूप के अवश्य ही दर्शन होंगे और तब आप भी उन अनन्त भगवन्तों के समान अपने परमपद में स्थित होकर अनन्त काल तक अन्य जिज्ञासुओं को भी द्रष्टि प्रदान करते रहोगे।

26 सूत्रवती सुई

श्री अष्टपाहुण की गाथा 4 में आचार्यश्री समझाते हैं कि कि जिस तरह सूत्र या धागे रहित सूई नष्ट हो जाती है, उसी तरह सूत्र या सम्यक्त्व रहित प्राणी भी संसार में खो जाता है, शून्यवत हो जाता है।

अत: आचार्यश्री अत्यन्त करूणा बुद्धि से सभी जीवों को इस गाथा में समझा रहे हैं कि अगर इस पंचमकाल में पूर्ण शुद्धि नहीं हो सकती है, तो कम से कम अब आत्म-सूत्र तो डाल लो, अन्यथा आप भी नष्ट हो जाओगे, शून्यवत हो जाओगे, जड़ हो जाओगे और न जाने कब निगोद की अनन्त गहराईयों में खो जाओगे।

हे प्रभो, अतः अभी भी समय है।
सिर्फ एक बार दृढ़ विश्वास के साथ जम जाओ,
रम जाओ कि अब यह संयोगी अवस्था रहे या न रहे,
देह रहे या न रहे,
किन्तु अब तो आप उसी समय उठोगे और चैन लोगे,
जब आप भी सूत्र सहित हो जाओगे।
हे प्रभो, यह देह तो क्या ऐसी अनन्त देह और तीन लोक, तीन काल के समस्त वैभव भी मिलें, तो भी आपको इनमे से कोई भी नहीं चाहिये, क्योंकि वे सभी मात्र दुःखरूप ही हैं।
दुखरूप नहीं अपितु मात्र दुख ही दुख हैं।
क्या करें भाई वस्तु स्थिति ही ऐसी है।
उसमें कोई क्या कर सकता है।
उनका मात्र ज्ञाता रहकर ही सुख का अनुभव कर सकता है।
अतः अब आओ और आज प्रतिज्ञा करो कि इस संसार के समस्त इष्ट पदार्थ न तो आपको सुख पहुँचा सकते हैं और न ही अप्रिय अनिष्ट वस्तुऐं दुःख पहुँचा सकती हैं।
हे प्रभो, सूत्र रहित अवस्था में ही दुःख है एवं सूत्र के साथ ही सुख है।

अतः आप सूत्र डाले बिना दुःखी ही हो और शीघ्र ही सूत्र को डालकर सुखी हो जाओ।
फिर तो जिस तरह सूत्रवती सूई कपड़े का नाश कर योग्य वस्त्र का निर्माण करती है, उसी तरह आपका यह सूत्रवती सूई समान सम्यक्त्व भी शीघ्र ही लीला मात्र में इस संसार का नाश कर आपके अपने निज स्वभाव को आपको प्राप्त कराएगा। इसमें आपको रंचमात्र भी शंका नहीं करना चाहिये।
अब तो आपके लिए दिन-रात एकमात्र यही विचार ह्रदयंगम करने योग्य है।

27 शरीर रूपी अग्निकुंड

जब हम गर्मी की ऋतु में रात्रि के समय किसी पहाड़ी प्रदेश की यात्रा करते हैं, तब दूर किसी स्थान में जलती हुई अग्नि का दृष्य बड़ा मनोरम प्रतीत होता है.
उसकी लपलपाती लपटों में प्राकृतिक सौन्दर्य के रसिक को नृत्य एवं संगीत का भी आभास होता हैं।

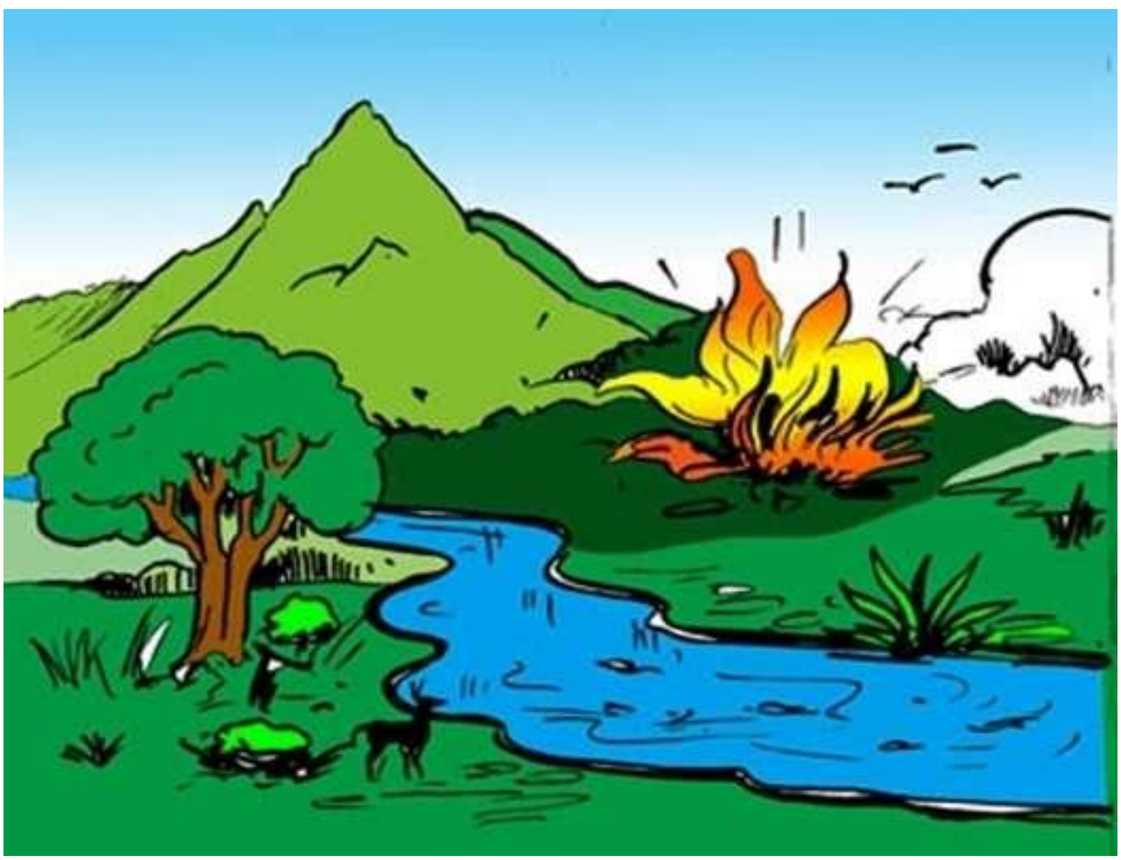

फिर आपकी ऐसी इच्छा भी होती होगी कि आप उसे देखते ही रहें और अपना बाकी जीवन प्रकृति की गोद में ही बिता दें.
क्या कभी आपने यह भी विचार किया है कि उन लपटों में कितने सूक्ष्म जीव झुलस कर मरण को प्राप्त हो रहे होगें
अगर आपने कभी ऐसा सोचा होता, तो फिर आपको वह दृष्य मनोरम नहीं, अपितु अत्यन्त कारुणिक प्रतीत होता।
तब आपको ऐसा लगता कि वहां पर अनेकानेक छोटे-छोटे सूक्ष्म जिन्दा जीवों की चिता जल रही हैं।
अहोss, यह मनुष्य भव भी ऐसा ही है; जो हमारे जीव की कर्म रूपी अग्नि का कुंड ही है।
जब आप अपनी आत्मा से दूर होकर इस शरीर को देखते हो, तो आपको यह बड़ा ही सुंदर प्रतीत होता हैं।
तब यह आपको अपना प्रिय प्रतीत होता है।
तब आप इसके पालने-पोषणें में लग जाते हो। इस शरीर को प्रिय सभी तरह की सुख सामग्री इकठठी करने मे लग जाते हो।
किन्तु आपने कभी विचार किया है कि इस शरीर रूपी अग्निकुंड में प्रति सेकण्ड कितने जीव भस्म हो रहे हैं?

अरे इन जीवों के अगर हम पक्षी बनाकर पूरे लोकाकाश में उड़ायें, तो यह सम्पूर्ण लोकाकाश ठसमठस भर जावेगा लेकिन फिर भी वे पक्षी नहीं समायेंगे।

देखो भाई, इस शरीर के निमित्त से प्रति सेकण्ड अनन्त जीव मरण को प्राप्त हो रहे हैं और फिर भी अगर आपको इस शरीर को धारण करने का दुख नहीं है और उल्टे आप इस शरीर को ही अपना स्वरूप मानकर इसी की रक्षा में लग रहे हो,
तो ऐसे आपके भाव तुम्हे फिर किस गति में ले जावेगे; एक पल तो आपको इसका भी विचार करना चाहिये.
साथ ही ऐसे शरीर रूपी अग्निकुंड आगे आपको और न मिलें, इसके लिये अब आपको सतत प्रयत्न करना चाहिये।
यही भगवान् महावीर द्वारा बतायी गयी सच्ची अहिंसा है और जिसका पालन करने से आप भी अगले भगवान महावीर बन सकोगे.

28 मूढ़जन

1. इस संसार में मूढ़जन तरह-तरह के होते हैं।
2. कुछ संसार की कामना करते हैं,
3. कुछ स्वर्ग की कामना-इच्छा करते हैं।
4. बहुत कम ऐसे भी लोग होते हैं, जो मोक्ष की कामना-इच्छा करते हैं।
5. बहुत ही कम लोग ऐसे भी होते हैं, जो आत्मा की कामना करते हैं।
6. जिस तरह किसी भी बिना बच्चे वाली महिला के बच्चे की शादी होना अशक्य है,
7. इसी तरह ज्ञानीजन भी सभी तरह की इस मूढ़ता को जानकर आत्मा की अनन्त गहराईयों में निर्विकल्प भाव से परम समाधि में लीन होते हैं।

29 परछाई

1. जब एक आत्म-ज्ञानी महापुरुष मुक्ति मार्ग की ओर गमन कर रहा है,
2. तब रास्ते में एक विधुत बल्ब के निमित्त से ज्ञानी को खुद की एक परछाई नजर आती है।
3. ज्ञानी तो आगे बढ़ता जाता है।
4. फिर दूसरे बल्ब से दूसरी परछाई बनती है और पहली अस्त हो जाती है।
5. गमन करते ज्ञानी के पीछे इसी तरह एक के बाद एक कर्म रूपी परछाइयों का क्रम चलता रहता है।

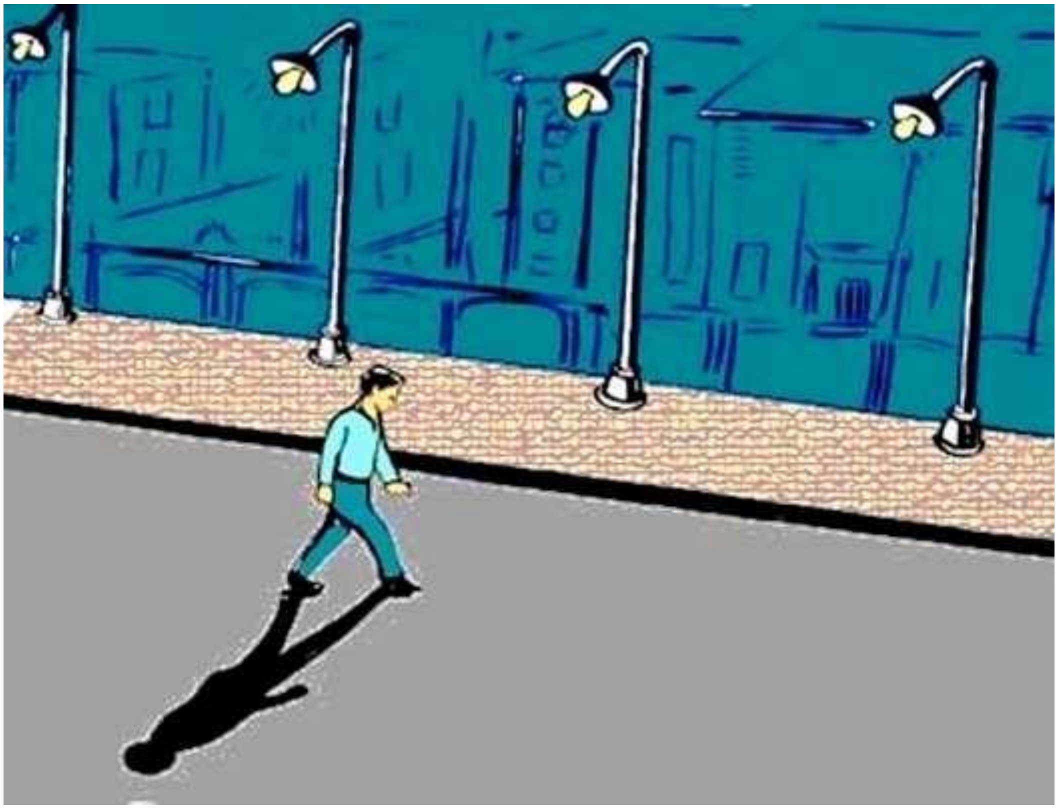

6. ज्ञानी तो ज्ञानी ही है,
7. अपने निज-चैतन्य स्वरूप में ही लीन है।
8. वह तो सहजभाव से बिना किसी वांछा से मुक्ति मार्ग की ओर गमन कर रहा है।
9. वह तो सोचता है कि कोई भी परछाई रूपी चतुर्गति के भव आयें, रहें या नष्ट हों, उसे क्या?
10. वह जानता है कि वास्तव में वे भव या जन्म उसमें दूर-दूर तक नहीं हैं।
11. हे प्रभो, कोई व्यक्ति आपसे यह कहे कि यह परछाई रूपी भव अच्छा है; यह बुरा है,
12. तो वास्तव में परछाई तो वास्तव में परछाई ही है।
13. उसमें अच्छा-बुरा क्या?
14. यह अच्छा-बुरा मानना ही मिथ्यात्व है।
15. अतः हे प्रभो, अब आप भी इस परछाई से मुंह फेर कर अपने चैतन्य-प्रकाश की ओर आगे बढ़ो.

30 आपकी सच्ची कसौटी

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी द्वारा रचित ग्रंथराज श्री समयसारजी की पाँचवी गाथा की टीका की अंतिम पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार निकलती हैं :-

शास्त्र समुद्र के बहुत से प्रकरण हैं, इसलिए यहाँ पर स्वसंवेदन की कसौटी पर जो कथन खरा उतरे, उसी अर्थ को गृहण करना चाहिये।

अतः यहाँ पर एक प्रश्न उपस्थित होता है कि मिथ्यात्व अवस्था में जीव को स्वसंवेदन रूपी कसौटी के अभाव में और सदगुरू की सच्ची देशना के बिना शास्त्रों के सार का या उन सद्गुरू के भावों का सम्यक गृहण किस तरह संभव हो सकता है?

इस प्रश्न के उत्तर में श्री निहाल भाई के वचनामृत क्र. 241 दृष्टव्य हैं -

1. सुनने के काल में भी मैं निरालम्बी तत्व ही हूँ।
2. बस यहीं से ही शुरूवात करना चाहिये।
3. फिर सुनने-करने का भाव आयेगा,
4. लेकिन मुख्यता नहीं होगी।
5. हे प्रभो, जैसे सोने को परखने की कसौटी होती है,
6. उस कसौटी पर सोने को घिसने से यह पता चलता है कि वह आभूषण या डली सोना है या नहीं.

7. तथा अगर है, तो कौन सा सोना कितने अंशों में शुद्ध है?
8. इसी तरह हे प्रभो, शास्त्रों में भी अनन्त कथन होते हैं;
9. उनकी अपेक्षाऐं भी अलग-अलग रहती हैं।

अत: जब आप इन शास्त्रों को पढ़ते हो, तो उसमें आया कौन सा कथन कितने अंशों में शुद्ध है, ऐसा आप सरीखे सामान्य जिज्ञासु को पता कैसे चलेगा, ताकि आप उसे उसी रूप में, उतने ही अंशों में ग्रहण कर सको।

हे प्रभो, हमारे ऊपर समस्त भगवन्तों, श्री कुन्दकुन्दाचार्य और अमृतचन्द्रचार्य आदि मुनिराजों के अनंत-अनंत उपकार हैं कि जो उन्होने अपना ह्रदय खोलकर चैतन्य के एक-एक रहस्य को इतना स्पष्ट कर दिया है और सभी तरह के मुमुक्षुओं और

जिज्ञासुओं को जगह-जगह पर सावधान करते हुए उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग बतलाया है।

अत: समस्त भगवन्तों, आचायों, गुरूवरों के सर्व कथनों का सार यही है कि पढ़ने, सुनने, पूजा, भक्ति, व्रत, उपवास, सामयिक, स्वाध्याय, जप-तप आदि करने के काल में भी -

1. आप निरालम्बी हो,
2. आप कृतकृत्य हो,
3. आप चैतन्य परमात्मा ही हो,
4. ऐसा ही आपको मानना चाहिये.
5. फिर उन बातों को,
6. कार्यो को करने का भाव तो आयेगा,
7. परन्तु उनमें रूचि पूर्वक अटकना नही होगा।
8. यह निरालम्बता, कृतकृत्यता ही वह कसौटी है
9. जिससे परमागम के सूक्ष्म अर्थो का भेद खुल सकता है
10. फिर उसको गृहण कर आप भी पामर से परमात्मा बन सकते हैं.

31 फायदा बूँद का; नुकसान समुद्र बराबर पाप का

1. हे प्रभो, आपको अपने पुण्य कमाने का बड़ा गर्व है,
2. किन्तु क्या आप जानते हैं कि जिस समय आप थोडा सा पुण्य कमा रहे हो,
3. उसी समय आप उस पुण्य से भी अनन्त गुणा ज्यादा पाप कमा रहे हो.

4. इस तरह आपको बूंद बराबर पुण्य की कमाई का फायदा है,
5. लेकिन आपका नुक्सान तो समुद्र बराबर पाप का हो रहा है, कैसे?
6. एक पल को तो आपको इस बात का भी विचार करना चाहिये।
7. इस संसार में समुद्र बराबर असातावेदनीय या दुःख का उदय है
8. लेकिन सातावेदनीय या सुख का उदय सिर्फ बूंद बराबर का ही है.
9. फिर भी यह जीव इतना विमोहित क्यों है?
10. यह अत्यन्त आश्चर्यजनक है

32 सुई की नोक जितने मनुष्य भव होते हैं

1. हे प्रभो, इस जीव ने अनादिकाल से आज तक समुद्र बराबर समय तो निगोद में अत्यन्त-अत्यन्त अकथनीय दुःखों में व्यतीत किया है,
2. तथा बूंद बराबर समय के लिये ही उसने त्रस पर्याय में जन्म लिया है।

3. कुल मनुष्य भव तो उसमें सुई की नोक जितने भी नहीं हुए हैं.
4. अत: हमें अपना कर्तव्य आज ही विचार लेना चाहिये.
5. अन्यथा फिर पता नहीं, आगे आपको कब अपने कल्याण का समय मिलेगा?

33 समुद्र की एक बूंद

1. हे प्रभो, सम्यकद्रष्टि महात्मा का समुद्र बराबर संसार तो कट ही गया है.
2. अब उसका बूंद बराबर समय ही इस संसार में बचा है।
3. वह भी सहज रूप से लीला मात्र में ही कटेगा।
4. यही समयसार के सर्वविशुद्धिज्ञान अधिकार गाथा 320 के भावार्थ में कहा है.
5. मिथ्यात्व के जाने के बाद संसार का अभाव ही कहलाता है.
6. क्योकि समुद्र की एक बूंद की समुद्र के सामने गिनती ही क्या होती है?

34 आपके पास समुद्र समान विशाल आत्मा है

1. इस संसार में रह रहे अज्ञानी लोग अपने आत्म-समुद्र की बूंद बराबर चर्चा करते हैं,
2. तथा बूंद बराबर के समान तुच्छ इस संसार की समुद्र बराबर चर्चा करते हैं,
3. अहोऽऽ, यह कितना विस्मयकारक है.

4. हे प्रभो, आपके खुद के समुद्र बराबर ज्ञान के समक्ष आपका वर्तमान मतिश्रुत ज्ञान का उघाड़ बूंद बराबर भी नही है।
5. उसी में कुछ लोग अपने आपको ज्ञानवंत मानकर और अन्य को और तिर्यन्चों को ज्ञान हीन समझ कर खुश होते हो तो हो लो,
6. लेकिन सच्चा जिज्ञासु इनमें अटकता नहीं है.
7. वह तो अपने अनंत-ज्ञान में ही मस्त रहता है
8. तथा सबको यही बात बताता है.
9. जिस चैतन्य प्रभाकर ने समुद्र समान आत्मा की समुद्र बराबर चर्चा की है,
10. उसे बूंद रूपी इस संसार की चर्चा का अवकाश ही कहाँ है?
11. हे प्रभो, उसे ही सच्चा मुमुक्षु कहा जा सकता है.

35 सहज द्रष्टि

1. नियमसार में जीव अधिकार गाथा में आता है कि अरिहन्तों को समुद्र जितने सातावेदनीय कर्मोदय के मध्य बिन्दु जितना असातावेदनीय कर्मोदय वर्तता है,
2. लेकिन वह मोहनीय कर्म के बिल्कुल अभाव में लेशमात्र भी क्षुधा या तृषा का निमित्त कहाँ से हो सकता है?
3. इस तरह से अब द्रव्य सामान्य पर द्रष्टि होते हुए भी,
4. वो मेरी द्रष्टि का विषय नही है;
5. फिर पर की तो बात ही क्या है?
6. इस मानवाकार त्रिलोक में समस्त द्रव्यों का परिणमन सहज ही रहता है और क्रमबद्ध ही है.
7. उसमें विकार या फेरफार की कल्पना करना ही मिथ्यात्व है.
8. अत: अब यह मान लो कि कल्पना और मिथ्यात्व एकार्थी हैं।
9. जो मूर्ख व्यक्ति समुद्र की ऊँची-नीची लहरों को सम्हालने या रोकने की चेष्टा करता है,
10. वह व्यर्थ ही आकुलित होता है,
11. क्योंकि लहरें तो एक समय पश्चात् स्वयं ही नष्ट हो जाती हैं,
12. फिर यह सम्हालना या रोकना किसे चाहता है,
13. इसे स्वयं ही यह स्पष्ट नहीं है।
14. इसी तरह जो लोग सोचते हैं कि धर्म इस तरह से चलेगा, उस तरह से चलेगा,
15. वे व्यर्थ ही आकुलित होते हैं।
16. उन्हें तो वास्तव में सच्चे धर्म की खबर ही नही है।
17. हे प्रभो, अब आपको भी अपनी त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायों को रोकने, सम्हालने या पाने की चेष्टा नहीं करना चाहिए,
18. बस उसके ज्ञाता-दृष्टा बन कर आपको सिर्फ अपना कल्याण करने की कोशिश करना चाहिये।

36 चौबीस सूत्रीय चिन्तन आराधना

(इस चिन्तन आराधना को एक बड़ी ऐ-3 साइज़ की फोटो कापी निकलवा लें और उसे अपने बेड रूम में लगवा कर रोज रात को सिर्फ पांच मिनिट तक पढ़ते रहें)

1. मैं तो त्रिलोक का स्वामी चैतन्य-परमात्मा हूँ।
2. मुझ में अनन्त गुण भरे पड़े हैं।
3. इन अनन्त गुणों की अनंतानंत पर्यायें प्रति समय निकल रही हैं।
4. इस तरह मैं खुद ही अनन्त शक्तियों का स्वामी हूँ.
5. इस तीन लोक के शिखर का मैं ही चूड़ामणि हूँ।
6. अनन्तज्ञान, अनन्तसुख की जो पर्यायें मेरा दर्शन करती हैं;
7. उन्हें भी जब आना होवे, तब आए, मुझे उनसे भी क्या प्रयोजन।
8. मेरी निर्मल पर्याय जो मुझे दर्शाती है,
9. वह भी वास्तव में मेरा मल है.
10. अनन्त तीर्थकरों द्वारा बताए गए उपरोक्त मार्ग पर अब मैने गमन करना शुरू कर दिया है।
11. अतः अब मुझे करने योग्य कोई भी कार्य शेष ही नहीं बचा है।
12. ये जो ऊपर लिखे हुए तरह-तरह के विकल्प मुझे आ रहे हैं,
13. मैं तो उनका भी मात्र ज्ञाता-दृष्टा ही हूँ।
14. आँख बंद करने पर जो प्रतीति मुझे खुद की महसूस होती है,
15. वह वास्तव में शरीर की न होकर मेरे चैतन्य-द्रव्य की ही है।
16. इस तरह जो मैं जान रहा हूँ, वही मेरा चैतन्य-द्रव्य है।
17. अब मुझ में कोई इच्छा शेष नहीं बची है।
18. इस जगत में प्रत्येक वस्तु अनादि-अनन्त है।
19. क्षणिक कुछ भी नहीं है।
20. जैसी होगी द्रष्टि, वैसी होगी स्रष्टि.
21. अगर मेरी द्रष्टि मेरे चैतन्य-परमात्मा पर होगी,
22. तो मेरी स्रष्टि भी फिर लोक के शिखर यानी मोक्ष में ही होगी.
23. अब मैं ऐसे खुद के अनादि-अनन्त स्वरूप को भाता हूँ.
24. इस तरह मैं अपनी अनादि-अनन्त सत्ता को पाता हूँ.

37 सम्यकदर्शन तो मेरी परछाई है

हे प्रभो, सम्यकदर्शन तो मेरी परछाई है.
उसे पकड़ने जाऊँगी, तो वह दूर भागेगी.
जब मैं उसकी ओर पीठ करके चल दूँगी,
तो वह मेरे पीछे-पीछे चली आयेगी.

38 शून्य और एक

1. गणित शास्त्र में मुख्य अंक शून्य (0) और एक (1) ही होते हैं.
2. इन्हीं दोनों के मिलन से सभी अंक बनते हैं.
3. फिर महानतम सिद्धाँतों की रचना होती है.
4. इसी तरह इस संसार में भी दो ही तरह के जीव होते हैं –

(1) मतलब भव्य

(0) मतलब अभव्य

5. अनन्त भगवन्तों द्वारा कथित यह उदबोधन पाकर भव्यजन चैतन्यमय आत्म-स्वभाव में लीन होने की चेष्टा करते हैं और अभव्यजन संसार में.
6. हे प्रभो, क्या आप भी शून्य के समान इस संसार को पाना चाहते हैं,
7. या फिर एक के समान अपने चैतन्य को पाना चाहते हैं?

39 बिन्दु-बिन्दु विचार

1. मृत्यु से तो सभी बचना चाहते हैं,
2. परन्तु यह मिथ्यात्व रूपी महाकाल जो हर समय आपके साथ रहता है;
3. उस पर आपकी द्रष्टि जाती ही नहीं है.
4. मृत्यु से तो एक बार ही मरण होता है,
5. परन्तु यह मिथ्यात्व तो अनन्त बार आपका जन्म-मरण करवाता है।
6. अत: आपको अपने सभी मुख्य कार्यों को तुच्छ मान कर इस मिथ्यात्व को दूर करने का उपाय सोचना चाहिये।
7. इस संसार के समस्त मोह को त्याग कर जो जीव ऐसे अपने ज्ञानानन्द स्वभावी, अविनाशी, शुद्ध स्वरूपी, कारणपरमात्मा को निस्पृहता, कूटस्थता, कृतकृत्यता के साथ "जो हूँ सो हूँ" का भावभाषण करते हुए भाता है,
8. वह शीघ्र ही परम-पद, त्रिलोक-पद, मोक्ष-पद को पाता है।

40 खाली पालना मत हिलाओ

हे प्रभो, जिस महिला को अभी कोई बच्चा न हो और फिर वह अगर खाली पालना हिलाये, तो किसको आनन्द मिलेगा?
न तो उसको खुद को और न ही देखने वालों को।

इसी तरह अगर आप बहुत से शास्त्र पढ़ते हो और आपके ह्रदय में आत्मा की लगन न लगी हो, तो आपके इस शास्त्रज्ञान का फल किसे मिलेगा?
अतः हे प्रभो, आपको यह स्वीकार कर ही लेना चाहिए कि चतुराई से कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है।
अगर आपके अन्तर में लगन रूपी अगन नहीं है, तो बाहर के सभी कार्य और क्रियायें व्यर्थ हो जाती हैं, क्योकि ये सभी कार्य आपने पूर्व के जन्मों में अनंत बार किये हैं, फिर भी आपको उनका कोई भी फल नहीं मिला है।
अतः आज और अभी से ही आपको यह मान लेना चाहिये कि यह अगन ही कर्मो को जलाती है.
उसके बाद ही आपके सच्चे धर्म की शुरूवात होगी।

41 आत्म-ज्ञानी

1. ज्ञानी तो समुद्र के समान होते हैं,
2. उनके ऊपर कर्म रूपी कितनी भी बिजली गिरे,
3. उनका कुछ नहीं बिगड़ता है.
4. अतः आप भी जल्दी से ज्ञानी बन जाइये.

42 कोयला

1. सौ मन साबुन लगा कर धोने से भी कभी कोई कोयला उज्जवल हुआ है क्या?
2. इसी तरह हे प्रभो, आप कितनी ही बार पूजा, जप-तप, नियम-संयम करें,
3. लेकिन फिर भी आप अज्ञान रूपी कोयले को साबुन से धो-धो कर उजला नहीं कर पायेंगे. अतः अगर आपको यह शुद्धि का कार्य करना है,
4. तो आपको इस संसार रूपी कोयले के प्रति अपने समस्त ममत्व को त्याग कर उसको हर जगह जल रही इस संसार रूपी भट्टी में डाल देना चाहिये।
5. फिर अपने आप ही मिथ्यात्व रूपी कोयले का नाश होगा,
6. शुभ्र और निर्मल राख का जन्म होगा,
7. तब सदाकाल के लिए आपकी आत्मा भी उज्जवल हो जाएगी.

43 कर्मोदय रूपी अंगार

1. अज्ञान के बादलों ने जीव को घेर लिया है
2. कर्मोदय रूपी अंगार बरसने लगी है।
3. अब तो चिल्लाकर पुकार कि यह संसार जल रहा है।

4. जो सच्चे जिज्ञासु हैं, जिन्हें वास्तव में आत्मा की सच्ची लगन है,
5. उनकी ही आत्मा पर ज्ञानी के ऐसे अद्भुत कथन तत्काल समझ में आकर सीधे चोट करते हैं।

44 सूरदास की पत्नी का श्रंगार करना व्यर्थ है

1. हे प्रभो, किसी भी सूरदास की पत्नी का श्रंगार करना व्यर्थ है,
2. क्योंकि उसे देखने वाला कौन है?
3. फिर भी अगर वह श्रंगार करती है,
4. तो उसे बहुत गंभीर दोष लगता है.

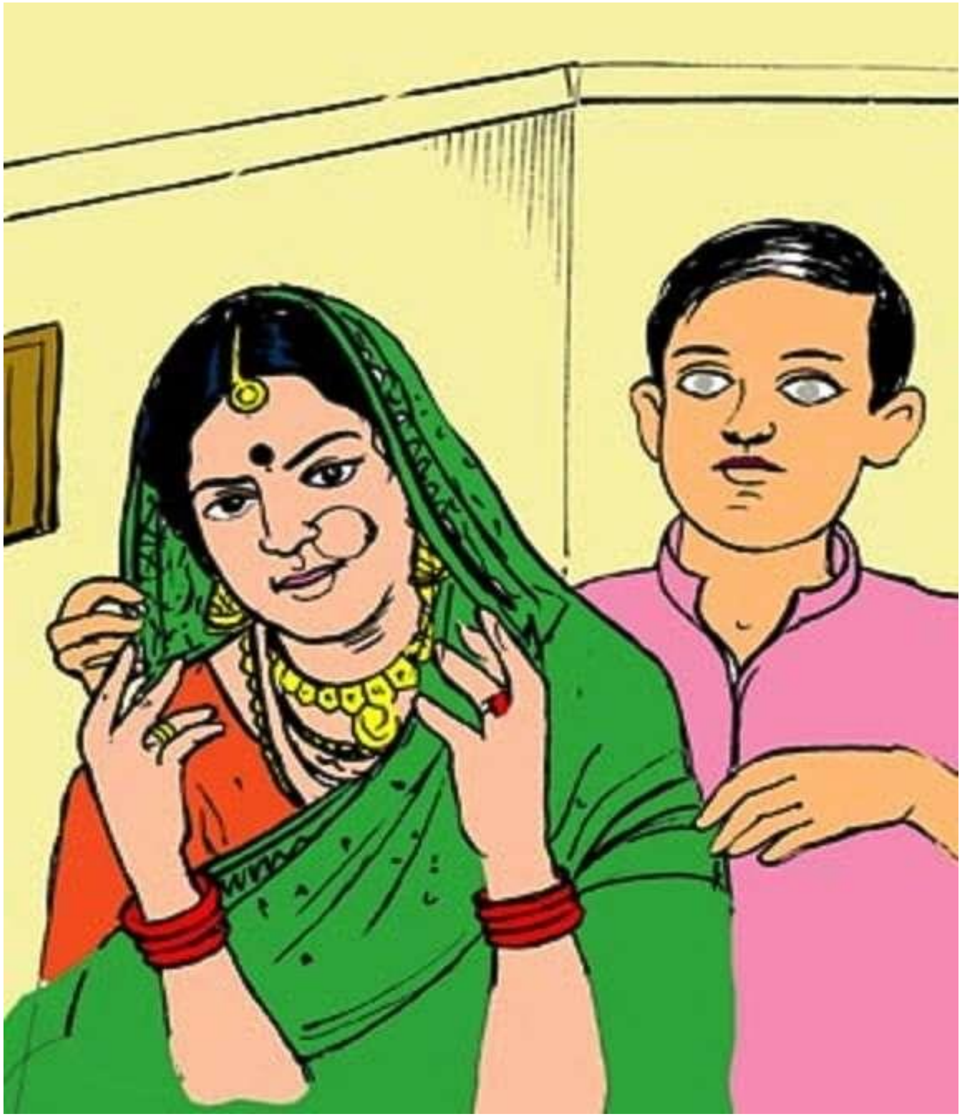

5. इसी तरह हे प्रभो, आप भी ज्ञानचक्षु से रहित होने से सूरदास ही हो,

6. फिर भी अगर आप इस शरीर को सजाने, संवारने, सम्हालने की क्रिया करते हो,

7. तो आपको भी मिथ्यात्व का बहुत गंभीर दोष लगता है.

8. अतः हे प्रभो, आपको सबसे पहले तो दिख रहे इस संसार को देखने वाली वस्तु को देखने की कोशिश करनी चाहिए.

45 प्रज्ञा-छेनी

1.	जिस तरह लोहे के घन को घिसकर कुल्हाड़ी नहीं बनाई जा सकती है,
2.	उसी तरह इस अज्ञान रूपी घन को घिसकर आप प्रज्ञा-छेनी नहीं बना सकते हैं। अब अगर यह कार्य आपको करना है तो आपको इस घन को आत्मा की लगन की अगन में खूब गर्म करना होगा।

3.	फिर ज्ञाताद्दष्टापने के हथोड़े से पीट-पीटकर उसे कुल्हाड़ी या प्रज्ञा-छेनी बनाना होगा.
4.	फिर जब आप इस प्रज्ञा-छेनी से जड़ और चैतन्य की सूक्ष्म संधि में चोट करेंगे,
5.	तो आपका चैतन्य प्रभो आपके पास होगा,
6.	तथा यह जड़ कहीं दूर चला जायेगा.

46 आने वाले जन्मों में अपना खुद का नुकसान रोकें

1.	कई लोग कहते हैं कि हमारे घर-परिवार के प्रति हमारी जिम्मेदारी के कारण ही हम अपना कल्याण नहीं कर पा रहे हैं,

2. किन्तु हे प्रभो, अगर विचार करें, तो आपको पता चलेगा कि आपके सभी सगे संबंधी तो सिर्फ आपके वर्तमान भव के ही अहितकारी हैं,

3. किन्तु आप स्वयं उनसे अनन्त गुणा ज्यादा अपने स्वयं के बैरी हैं

4. क्योकि इस तरह से आपने आजतक अपने पिछले अनंत भवों का नाश किया है,

5. तथा पुन: आगे के भी आगामी अनन्त भवों में अपना खुद का नाश करने पर तुल गये हैं.

6. हे प्रभो, कृपया अब इस भव में अपनी हो रही गलती को स्वीकार कर उसे आगे होने से रोकें.

47 ग्यारह अंग रूपी क्षयोपशमज्ञान

अहोss, हे चैतन्यदेव, पूर्व के कई जन्मों में इस संसार के ग्यारह अंग रूपी अथाह क्षयोपशम ज्ञान को भी आपने अनंत बार प्राप्त कर लिया है.

अतः इस जन्म में आपने जो थोडा सा शास्त्र ज्ञान प्राप्त कर लिया है,

उस ज्ञान पर मुग्ध जीवों, थोड़ा विचार तो करो कि आपने इस अल्प ज्ञान को आप रख कहां पर रहे हो,

क्योंकि आपको खुद का तो पता नहीं है।

अहो, आपका यह ज्ञान सबको जान रहा है;

परन्तु जिसे उसको जानना चाहिये,

उसका तो इसे पता ही नहीं लग पा रहा है।

यह जो क्षयोपशम ज्ञान होता है वह तो हाथी के दांत की तरह है,

जिससे शरीर की शोभा तो होती है।

किन्तु आत्मा का कोई भला नहीं होता है।

फिर कोई भी हाथी दांत का लोभी शिकारी आयेगा और इस दांत के लिये हाथी की जान ले लेगा।

इसी तरह यह क्षयोपशम ज्ञान ही जीव के अंहकार का कारण बनेगा और फिर उसके समस्त सतकर्मो को नष्ट कर अधोगति में ले जायेगा।

हे प्रभो, वर्तमान में आप जो शास्त्रज्ञान रूपी क्षयोपशम ज्ञान बढ़ा रहे हो, वह तो साबुन की टिकिया जमा करने के समान है। आपका अध्ययन और चिन्तन कई वर्षो से चल रहा है और अब तो आपके पास ग्यारह अंग रूपी ज्ञान की कई टन साबुन की बट्टियां भी जमा हो गयी होगी, किन्तु उससे आपको क्या लाभ हो सकता है, क्योंकि आपकी चैतन्य-आत्मा रूपी चादर तो अभी भी मैली ही है।

अत: चिन्ता तो आपको इस चादर की सफाई की होना चाहिये, जिसके लिये अधिक से अधिक एक टिकिया ही पर्याप्त है।

साबुन की बट्टी रूपी क्षयोपशम ज्ञान को आप कितना भी जमा कर लो, किन्तु वह अपने आप खुद ही आपकी चादर को साफ तो नहीं कर सकता है।

हे प्रभो, इस उदाहरण से यह भी प्रतीत होता है कि आप मात्र बिट्टियों को जमा करने में ही खो गये हो।
आप बात तो बारम्बार आत्मा की ही करते हो, पर ध्यान तो आपका बिट्टियों को इकठ्ठा करने में ही है.
अन्यथा पहली बट्टी से ही अपनी चादर को साफ कर के पहले ही इस संसार से अलग होकर हट गये होते।

48 सदगुरू महिमा

1.
कोटिन चन्दा ऊगहीं, सूरज कोटि हजार,
तीमिर तो नाशे नहीं, बिन गुरू घोर अंधकार.
2.
यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान,
सीस दिये जो गुरू मिलें, तो भी सस्ता जान.
3.
पंडित पढ़ी गुनि पचि मुये, गुरू बिन मिले न ज्ञान,
ज्ञान बिना नहीं मुक्ति है, सत् शब्द परमान.
4.
गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब सन्त,
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महन्त.
5.
कुमति कीच चेला भया, गुरू ज्ञान जल होय,
जनम जनम का मोरचा, पल में डारे धोय.
6.
गुरु बिन ज्ञान न ऊपजे, गुरु बिन मिले न मोक्ष.
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटे न दोष.
7.
सब धरती कागज करुँ, लेखनी सब वन राय,
सात समुद्दर की स्याही करुँ, गुरु गुण लिखा न जाय.
8.

सदगुरु के हर शब्द में,
आगम अनन्त समात हैं,
जो माने निज में आत हैं,
मोक्ष महल में जात हैं.

49 दस-बीस-पचास साल बाद आपका क्या होगा?

हे प्रभो, आप दिन-रात मेहनत करके, कायःक्लेश करके, अपने और अपने परिवार के सुख के लिये अत्यन्त कष्ट सहकर भी पैसा कमाते हो और उस पैसे से एक घर बनाते हो और सोचते हो कि अब आगे का सम्पूर्ण जीवन उस घर में अपने परिवार के साथ सुख से रहोगे।

लेकिन यह विचार करके तो बताओ कि कितने समय तक आप उस घर में सुख से रह सकते हो क्योकि कल का तो कोई भरोसा नहीं है।
मान लो आप कदाचित् पूर्व भव के पुण्य के उदय से उसमें दस-बीस-पचास साल रह भी लेते हो, लेकिन फिर आगे आपका क्या होगा?

इस फिर की अगर आप आज ही चिन्ता करते हो, तो आप को सदाकाल रहने वाले अविनाशी सुख की प्राप्ति हो सकती है।
अतः इस संसार के प्रति आप का जो मोह है, उस मोह को तत्काल छोड़ कर संसार के प्रति समस्त विकल्पों का त्याग कर दो। तब देखना, आपको आपके चैतन्य परमात्मा की अवश्य ही प्राप्ति होगी।

50 अविनाशी चैतन्य ज्योति

1. हे प्रभो, आप ने चाहे कितने भी पाप क्यों न किये हों,
2. वर्तमान में आप चाहे कितने भी दीन-हीन क्यों न हो,
3. पाप कर्मों का छाया हुआ अंधेरा कितना भी घना क्यों न हो,
4. फिर भी आप निराश मत होइये,
5. क्योंकि अगर आप इस संसार के दुखों से घबड़ा गए हो,
6. तो आपका एकमात्र कार्य अपने आत्म-सूर्य की अनन्त गुण रूपी किरणों का निर्णय करना ही है।

7. हे चैतन्य प्रभो, आप तो सदाकाल रहने वाली अविनाशी शाश्वत धातु हो,

8. जिसके प्रकाश में समस्त अन्धकार क्षणमात्र में ही नष्ट हो जाता है।

9. अतः अपने इस अलौकिक स्वरूप को पहचानो

10. तथा मान लो कि मैं तो सहजानन्दी, शुद्ध स्वरूपी, अविनाशी चैतन्य-ज्योति स्वरूप परमात्मा ही हूँ।

11. इस अनादि की अज्ञान अवस्था में अगर आपने अपने अन्तरंग में समाये चैतन्यस्वरूप का निर्णय कर उसकी रूचि जाग्रत करने का अद्भुत पुरूषार्थ कर लिया,

12. तो फिर आपकी यह चैतन्य ज्योति स्वयं ही आपके समस्त कर्मपुंजों को भस्म कर शीघ्र ही आपको इस त्रिलोक का सम्राट बना देगी.

13. क्या आप अपनी इस अविनाशी चैतन्य ज्योति को पाना चाहते हैं?

51 घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
जगमग-जगमग तेरी सत्ता,
जिसका है नहीं कोई लुटेरा
अनन्त सुखों का वास जहां है,
ऐसा तेरा घर अपना है

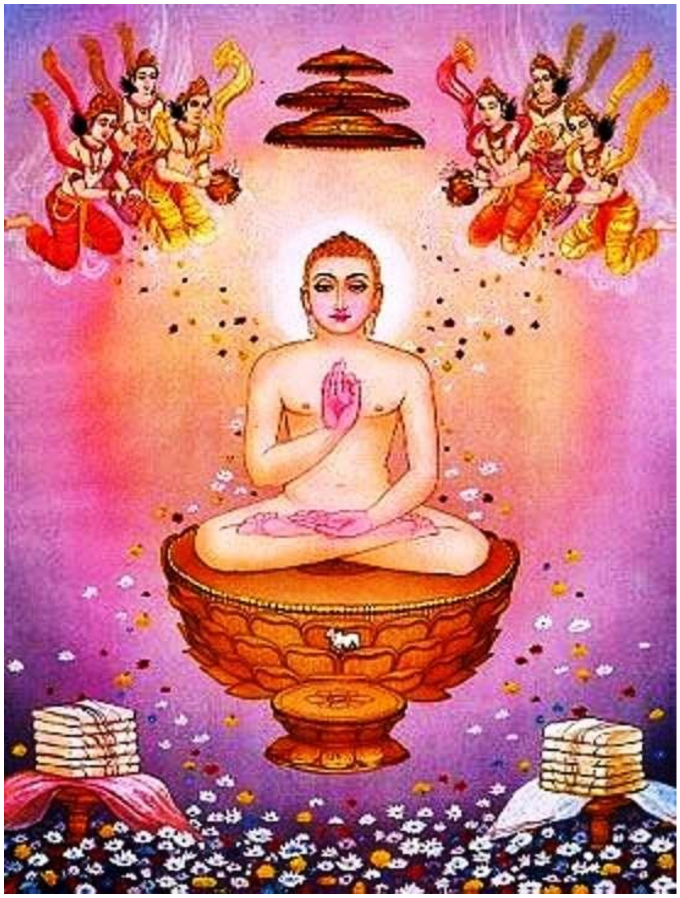

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
तीन लोक का राज है तेरा,
अनन्त गुण जहां डालें डेरा
सिद्ध भगवन्त तेरे मात-पिता हैं,
अनन्त केवली जहां बंधु-सखा हैं

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
तेरे घर को तूने छोड़ा,
मोक्ष महल कर दिया है सूना
सिद्धालय से आये आवाज,
मोक्ष-लक्ष्मी अब करे गुहार

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
सागर में हैं बूंद कितने,
धारे हैं निगोद भव जितने
इक सांस की यह कहानी है,
जनम मरण अठ-दस बारी है

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
बूंद बराबर समय को भइया,
निगोद से है तू निकला
तब पाया स्थावर पर्याय,
देखा जो जिनवर ने न्याय

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
ये गलियां ये चौबारे में,
जनमा तू हर द्वारे में
बिका तू कौड़ियन के मोल,
होता अभिमान अब क्यूँ बोल.

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
अनन्त काल जब यूं ही खोया,
तब तू त्रस पर्याय में उपजा
इल्ली भंवरा बनकर भटकाया,
चिड़िया तोता बन घबराया

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
तब आया इक दुर्लभ पल,
पाया तू अनुपम संज्ञी बल
देव मनुज तिर्यन्च नारकी बन,
चतुर्गति के धारे सब तन

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
चतुर्गति क्या अजब-गजब है,
तीन लोक का दुःख प्रगट है
ऐसी गति को अब तुम छोड़ों,
निज चेतन में अपनापन जोड़ो

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
चेतन सत्ता को अपनी न मान,
मोह की मदिरा पीकर सुजान
पर में निज पन को नहीं छोड़ा,
अकथनीय दुख को तूने जोड़ा

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी, तेरा देश बुलाये रे.
डगर-डगर यूं ही रखड़ाया,
पर परदेशी तू ना समझाया
लख चौरासी योनी लपटाया,
हे चेतन तुझे होश न आया

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
घर की लक्ष्मी को तूने छोड़ा,
परदेशी बन के मुंह को मोड़ा
पर से तूने किया व्यभिचार,
उपजा दुख घोर अपरम्पार

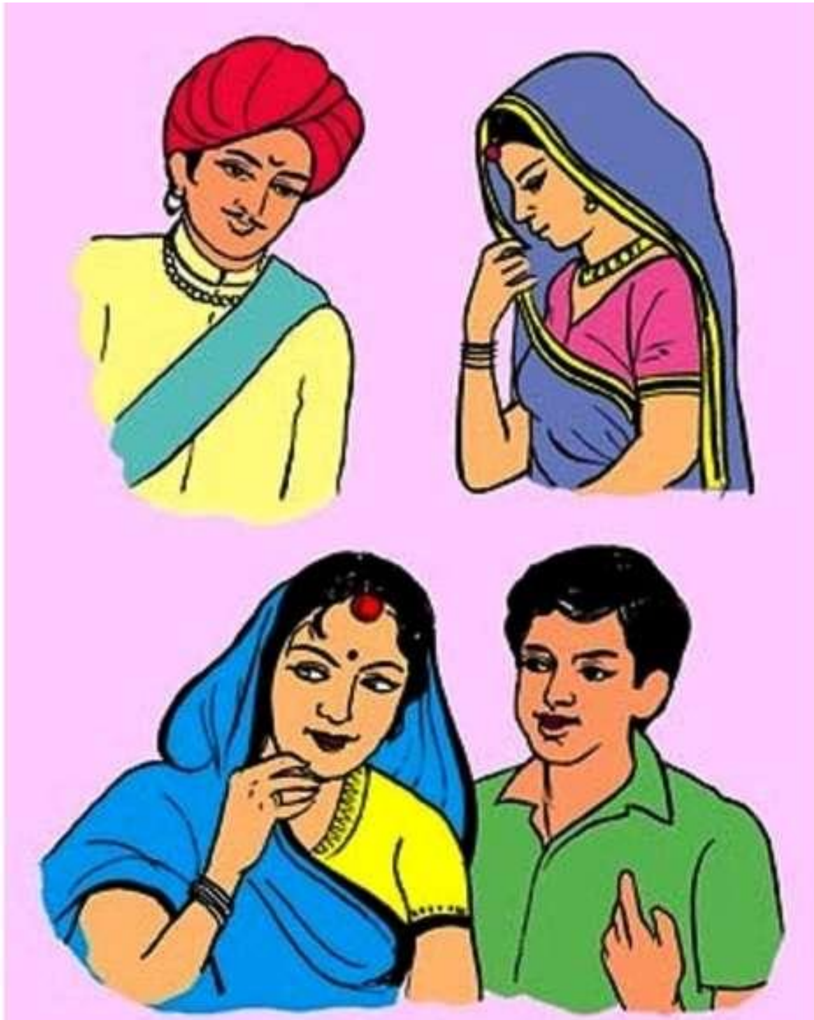

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
दिन बीता फिर रातें बीती,
बीता देखो समय अनन्त
पर फिर भी तू ना चेता,
कह गये केवली भगवन्त

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
बस तेरी यही कहानी है,
देखा जिनने सब ज्ञानी हैं
कर शुरु आतमराम जपना,
और छोड़ अब भ्रमण अपना

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
कारण परमातम निज पद मान,
जो हूँ सो हूँ सुख की खान
कर्ता हर्ता कोई नहीं जान,
बन स्वतंत्र पा लो यह ज्ञान

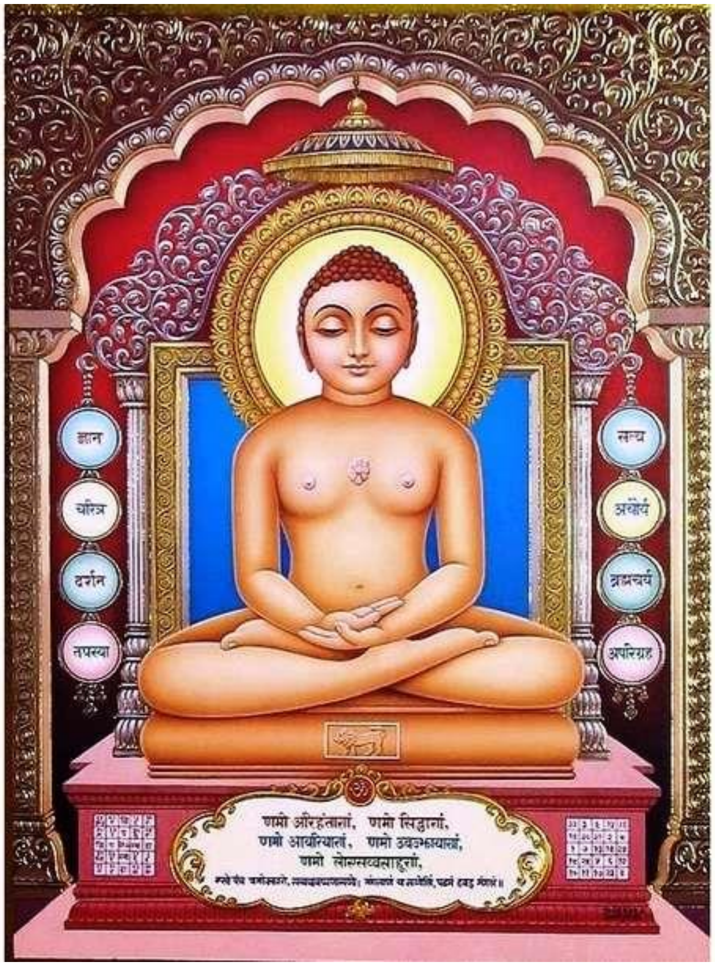

सिद्ध भगवन्त बाहें फैलायें तुझे पुकारे रे,
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे.
घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाये रे
तेरा SS देश SS बुलाये SS रे.

डॉ. स्वतंत्र जैन के प्रति
लोगो के ह्रदयोदगार
तथा स्नेह पूरित भावाभिव्यक्ति

Kripashankar Pandey

डॉ०साहब ! एक वीतराग सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन और एक महान कर्मयोगी की तरह नरनारायण की निस्वार्थ सेवा..
आपके व्यक्तित्व के इन दो पहलुओं ने मेरी दृष्टि में आपको एक सच्चा महात्मा घोषित किया है..
आपके चरणों में मेरे प्रणाम निवेदित हैं..!
हार्दिक कृतज्ञता..! अहोभाव..!!
मेरी शुभकामना है कि आप ऐसे ही गीतोक्त कर्मयोग के मार्ग पर चलकर स्वरूपस्थ हों ...!! ॐ.....!

Mangilal Chandan
श्रीमद् जी तो दूसरे महावीर थे.
इसमें कोई संका नहीं, कोई सनदेह ही नहीं !
बहुत ही सुन्दर लेख लिख कर आपने लोगोँ को जागृत किया हैं
धन्य हैं आप Dr स्वतंत्र जी
आपकी विचार श्रेणि अति उत्तम हैं
आपकी विचार धारा आत्मा से परमात्मा तक पहुचाने में मार्ग दर्शक हैं
आदरणीय पंडितजी श्री फुलचन्दजी शास्त्रीजी की तरह
आप के भी उच्चविचार हैं
खूब खूब अनुमोदना

Poczta kwiatowa bydgoszcz
June 1, 2017 at 1:44 pm

Undeniably believe that which you said.
Your favorite justification appeared to be on the net
The simplest thing to be aware of.
I say to you,
I definitely get irked
While people think about worries
That they plainly don't know about.
You managed to hit the nail upon the top
And defined out the whole thing without having side effect,
People can take a signal.
Will likely be back to get more.
Thanks

Manu Bharradwaj
साधुवाद महोदय !
आपकी हर पोस्ट मानव उत्थान की है।
ईश्वर सदा आपके साथ रहें।

Anurag Goel

आपका कार्य बहुत प्रशंसनीय और अदभुत है और हम सभी को सामाजिक सरोकार की प्रेरणा भी देता है
आपकी लगभग सभी पोस्ट मैं share करता हूँ और
यथा सम्भव उसका print अपने institute में भी लगाता रहता हूँ
आप इसके लिये बधाई के पात्र हैं
कृपया pdf मेरे id पर भी भेजने की कृपा करें जिससे ज़रूरतमंदों को उपलब्ध कराई जा सके
धन्यवाद

Abhishek Jain
5 star*
अद्भुत है डॉ० साहब,
आपका यह एक महान कर्मयोगी की तरह नर-नारायण की निस्वार्थ सेवा
तथा एक वीतरागी सन्यासी जैसा गहन आध्यात्मिक चिन्तन.

Sulochana Dagli

Dr.Sahib
Paranam
aapko hardik badhai
aap ek Adhayatam jagat ke ek Tejesvi Prakash Stambh hai
aapke nishara me hum sab prakashsit ho rahe hai
aapka yai karya hum sabko adhayatam punj se bandhe rakh raha hai
aap hamare aadarsh hai

Mangilal Chandan
बहुत ही सुन्दर लेख हैं
धन्य हैं आप
जैन धर्म के रत्नों में आप भी एक
रत्न हैं ....
डॉक्टर स्वतंत्र जैन
प्रणाम सा.
Poczta kwiatowa radom

May 31, 2017 at 5:22 pm
If some one wishes expert view concerning running a blog afterward
I propose him/her to pay a quick visit this web site,
Keep up the nice work.

Swami Roopam
बहुत ही हृदयगामी
प्राञ्जल
शिक्षायुक्त
सर्वकल्याणी
बौध प्रदाता
और क्या क्या नही ?
वाह यही है सत्य ।
इसीलिए राजा लोग नंगें ही पाँव चल कर महात्माओं का सानिंध्य पाने जाया करते थे।

Dinesh Chandra Shah

डॉ.साहब, आप पञ्च परमेष्ठी का स्मरण करते हैं,
ज्ञायक में रमण करते हैं,
मिथ्यात्व का वमन करते हैं,
इसलिए मै आपको नमन करता हूँ ।

Poczta kwiatowa 24h

May 31, 2017 at 4:59 pm
I enjoy the efforts you have put in this,
Appreciate it for all the
Great posts.

Rana Thakur

Sir aapki post or jankari ko Mene bahut se ese logo ko batya he Jo doctor ki fees na de pane ke Karan bacho ko na dikha pate the.
Nimonia jesi Kai binaries sahi ho gai he sir.
Sabse pehle to Mene hi apne bête ko diya tha treatment.
Bilkul sahi ho gya aapka bhut bhut aabhar mere or mere jese logo ka.
Kal ek bujurg ko khasi ki dava lakar di
Badi Kush thi aaj mili.
Boli beta meri khasi sahi ho gai
Pese dene lagi
Me bola Amaa ji meri to bête ko laya tha, vo sahi ho gya
Ab aapke kaam aa gai
Aap sirf dua de.
Ye hamre group ki dava he.

Maa Tara —
5 star*
बहुत ही सुन्दर एवं अनुकरणीय विषय जिसे अपनाकर स्वस्थ शरीर रखा जा सकता है।
डॉ.साहब का अनेक धन्यवाद् जो लोगों को सही मार्ग दर्शन कर रहे हैं।
जय माँ तारा !

Kamal Kumar Johari
बार बार मन आपको प्रणाम करता है और यह आवाज आती है कि
इस युग मे आप महान पुरुष है
इसलिए पुनः प्रणाम

Onkar Singh Rana
5 star*
Bahut khoob Ji,
kaya baat hai Ji,
Sir main bhi thoda bahut Ayurveda ka gyan rakhta hoon,
aur logo ko batata rehta hoon Ji,
aapki post padh kar maza aa gaya Ji,
may Sahib Ji bless you.

Sumer Jat Muktiya –
5 star*
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

CP Gupta —
5 star*
Aap bahoot achha kary Manav Sewa ke liye kar rahey h,bahoot kam log kartey h, sarahniy kary ke liye many many thanks

Pushpendra Naik

मैंने 1973 में आयुर्वेद एवं एलौपैथी से इंटीग्रेटेड स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है, तत्कालीन वरिष्ठ प्राकृतिक चिकित्सक डा० खुशीराम शर्मा दिलकश के मार्गदर्शन में 1975 में उ०प्र० प्राकृतिक चिकित्सा परिषद से प्रशिक्षण प्राप्त किया है
अपने 40 वर्ष से भी अथिक चिकित्सा व्यवसाय के अनुभव के आथार पर मैं निःसंदेह कह सकता हूँ कि डा० स्वतंत्र जैन के कथन से पूर्ण सहमत हूँ
एंजियोप्लास्टी या बाईपास सर्जरी के अपने लाभ हैं परन्तु जहॉ तक मैं समझ रहा हूँ कि डा० जैन गैर जरूरत सर्जरी के प्रति जनचेतना जगाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं

Tikendra Sahu —
5 star*
Bahut prabhawit hu aapki sewa bhawna se......sahej k rakhane yogya jankariya aapke dwara d jati hai.bahut km log aapke jaise hote hai.pranam

Vasudeo Chandwani
मेरे गूरुजी पूज्यनीय श्री तरूणसागर जी महाराज आप ही की तरह
ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहते है

Mamta Jaindaga
Aap Bhagwan ke avatar me is dharti pr aaye ho.....
my first God is Mahavir n second is U Sir

Sudhir K Srivastava
Priya Dr. Jain, saprem vande.
Aapne "SWASTH RAHO SWASTH KARO" post mere
e-mail par bheja, maine ise padha.
Mai aapko kin shabdo me dhanyavad dun
samajh nahi aa raha,
phir bhi aap mera hardik dhanyavad sweekar karen.
Mera aapse vinamra nivedan hai ki aap apne anubhoot prayogon ki jankari mere mail par bhejne ki kripa karte rahe,
aapka sada abhari rahunga.

Manu Bharradwaj
धन्यवाद इंजिनियर+डॉ. जैन
उस सब के लिए जो आपने मुझे व मेरे द्वारा भेजे emails पर भेजा।
साथ ही उस सब के लिए जो आप मानवता के लिए कर रहे हैं।
ईश्वर आपको और शक्ति तथा दीर्घायु प्रदान करे।
अस्तु। पुनःधन्यवाद !

Vikas Shivhare
Respected sir aapne bahut acchi jankari di thank you sir
Adv. Sanjeev Abrol
Cell 9855200503
Thanks doctor sahib for this wonderful book.

I am very thankful to u.
I will forward this book to all of my friends.
Regards

Virendra Sharma
अत्यन्त सेवामूलक एवं गरिमामय कार्य।
इस महान कार्य की जितनी प्रशंशा की जाए, कम ही होगा।
पराशक्ति प्रेरित कार्य हेतु माँ भगवती सदैव सहयोग करें एवं आप सपरिवार पर उनकी कृपा बनी रहे।
आपका कल्याण हो।

Cp Jain
Aapka prayas bahot he sarahniya he.
Dharm ke kshetra me bhi aur swasthya ke kshetra me bhi
Bahot he achha lagta he aapke articles padhkar.

Sumer Jat
Muktiya — 5 star
आप समाज कल्याण के लिए जो कार्य करते है,
उन के लिए आप को बहुत बहुत साधुवाद

Sanjiv Kumar Swarnkar
Muktiya — 5 star
This is a very useful and good healts information

Deepak Ladha —
5 star*
Very good service provided by you thanks for these types of service

NandKishore Darak
डॉक्टर सां आपके लेख तो स्वास्थ्य के लिए क्रान्तिकारी है

Davinder Dhillon —
5 star*
Very nice very much good tips
Very important & beneficial

Vasudeo Chandwani
भाईजी आप की कोई पोस्ट गलत हो नहीं सकती ।
हर पोस्ट से ज्ञान गंगा का अमृत मिलता है ।

Anand Singh
Dr swatantar jain saab ki jai ho
Bhart ka veer real hero

मनोरंजन पाल आर्य
डॉ. साहब प्रणाम
आपका एक पीडीएफ है मेरे पास स्वस्थ रहे स्वस्थ करे.
इस पीडीएफ के द्वारा मैंने मैंने बहुतो को उपचार बताया जिसे बहुत लाभ भी हुआ
जिसमे से ओरिसा के एक भाई का एपेंडिस ठीक किया
पीलिया ठीक किया !
क्या आपके पास और दूसरा भी कोई पीडीएफ फ़ाइल है
क्योंकि मुझे एक भी फलेरिया के बारे में पूछा था
मैंने उसे उपचार तो बता दिया
क्योंकि एक बार आपका पोस्ट आया हुआ था फेसबुक में वही बताया है
क्या कोई और पीडीएफ है
आपके पास जिसमे इस भी बीमारी के उपचार बताया हुआ हो
क्योंकि उस पीडीएफ में फलेरिया का उपचार नही है
धन्यवाद

स्नेहलता जैन —
5 star*
आपकी जन कल्याण और विश्व सुख, शांति और सम्रद्धि की भावना अत्यंत सराहनीय है.

Dharmendra Singh Parihar —
5 star*
बहुत ही सुन्दर प्रयास ! ईश्वर आपको सफलता प्रदान करे |

Dinesh Chandra Shah
Aap adhyatma jagat ke Dedipyaman nakshatra ho

Raju Raju —
5 star*
Guru ji aap mahan hi ni swarth aap jan sewa kurtay hi aap ko mera koti koti parnaam

Divya Jain —
5 star*
Dr sir, lakho logo ki duaye apke sath hai.
Bhagwan lambi umar de apko

Sumit Motwani
Sir me apke diye upchar fb pr dekhta hu.
apko naman jo aap sub ka sochte hai.

Nandan Mahalwal
Shadhey Dr Muktiya Ji.

SAMAJ. KO DI JANE WALI SEWA KE LIYE
HAM AAP KAA " SAMMAN " KARTE HAIN.
DHANYAWAD. BHAIYA JI

Rohit Singh
Dr sir parnam sir mai apki batai dwai 2 moth she kha RHA hu colistrol kam krne ke liye muje bhut fayda ho RHA h lekin sir mane blood test karwaya h avi to baki sab thik h lek in sir mera thaioraid tsh 6.16 a RHA h Jo Jada h plzz sir muje thairoid normal karne keep liye dwai btaye sir dil se dua deta hu apko ap sakchat bhagwan ho

Pushpa Sethi Maggu
Thanks for yr great efforts towards the right diection to people in this professional world

Anand Singh
Dr swatantar jain h to hosla buland h thanks

Ashish Bhandari
अंधत्व की पीड़ा।अद्भुत अलौकिक लेख।
हम जैसे अज्ञानियों को राह दिखाने वाला।
आपका अनंत उपकार

Kamalakar Dhabulkar
Koi Magaveer bankar kis roop me janm leta hey aur Dukhiyo ki seva karta h. Example aapka hi - Din dukhiyo ki anwarat seva hi Dharm

रूद्र नाथ निखिल
प्रिय डॉक्टर साहब नमस्कार
आपकी इस सेवा को देखकर ह्रदय प्रसन्न हो गया है,
आप जैसे डाक्टर बहुत कम मिलते हैं इस धरती पर,
आप जन कल्याण और समाज की जो सेवा कर रहे हैं उसके लिये में ह्रदय से आपका बहुत बहुत स्वागत और धन्यवाद करता हूँ,
मैं महादेव से प्रार्थना करता हूँ की महादेव और धन्वन्तरि आपको यश कीर्ति के साथ उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करे

Pushpa Maggu
Sir u are truly work for the people & god bless u with good health and longevity

Naresh Nayak
Thanks sirji. aap ka kam kalyug me bhagvan jaisa hai
Aapko or koi mandir jane ki jarurat nahi.

Shantnu Sharma

dr sar lakho logo ki duaye apke sath h bhagwan lambi umar de apko

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! सादर नमन् और अहोभाव..!
समस्त धर्मों का चरम उद्देश्य अनन्त काल के लिये स्वरूपस्थिति ही है।
जब तक यह देह है इसके लिये सेवा ही परमधर्म है जो आपके आचरण में सुस्पष्ट है। भगवान् महावीर की स्थिरचित्तता मैं भी इसी जीवन में अनुभूत कर सकूँ ;
इस हेतु आप महानुभाव का आशीर्वाद और स्नेह मुझे पुस्तकरूप में प्राप्त हो...
यह मेरे लिये परमसौभाग्य होगा...!!
मेरा पता ह.... डॉ० कृपा शंकर पाण्डेय C/O श्री लाल चन्द्र मिश्र E.W.S. 44 , नीमसराँय कालोनी मुण्डेरा चुंगी, जनपद-इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, पिनकोड- 211014

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Sk Pandey
Is jankari ke liye aapko jitna bhi very nice thanks bola jai vah kam hi hai.
Thank~~~~~~~~~~~~~~~~~~~s

Jagjeet Jandu
Dear doctor sabh I have downloaded your books and prescribing the medicine to our known free of cost as you proclaimed that we have to make india allopathic free so I am also striving a little in this direction.regards j s jandu

Rajesh Gupta
डॉक्टर साहब आप मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

Mukesh Singh
Namaste sir..
Aapke dwara di gai jankari kafi upyogi hoti hai aur sabse mahawapurna hai aapki niswarth sewa
Jaha aaj ke date me log ek dusre ke dushman bane hain, jyada se jyada dhan kamane ka swarth hai wahi aapki ye nishwarth sewa prashansniye hai aur is kary me shayad aapke dharm ka bhi mahatwapurna yogdan hai
Aapki post mai gahanta se padhta hu.

Yogesh Arya
डा. सहाब नमस्कार मेरे लिऐ बेहद गर्व की बात है कि आप जैसे महान व्यक्तित्व मेरी मित्र सूची की शोभा बढाऐ हुऐ हैं हर रोज आपकी पोस्ट स्वास्थय की दृष्टि से बेहद महत्व पूर्ण जानकारी से परिपूर्ण होती है मैं आपकी सभी पोस्ट अक्सर पढता हूँ आपसे निवेदन है अपनी अब तक की सभी पोस्ट कृपया मेरे ईमेल पर भेंजने की कृपया करें

Anil Mathur
सराहनीये कदम है आपका... ईश्वर आपको लम्बी आयु दे

Nitin Singhal
I am doing it every day after learning it from you and its very helpful... highly recommended... thanks for all the wonderful info

Mahesh Jaiswal
डां0 साहब सुप्रभात आप को समाज के लिए इन सराहनीय कार्य के लिए धन्यवाद

Gopal Narayan
अति महत्वपूर्ण जनहित कार्य कर रहे हैं ..दिर्घायु

Anand Singh
Jain saab you are real hero of India

Vishal Satija
Dr sir It's nice and a great work for humanity ki ap Bahaut sare facts Bina kisi personal benefit k share karte h. Thanks alot for that.

Cherry McGill
ap manavta ki sew ka bot acha kam kar rhe h

Rohit Singh
Hath jodkar parnam karta hu Dr sir apko logo ka bhala kar rhe h ap lakho duaye milegi apko

Pushpendra Naik
I think that due to essence of my good karmas I have to know about you yesterday by your post on cardiac treatment. I am also an ayurvedic professional, retd. as distt. ayurvedic officer, Lalitpur, U.P. in 2011. Individually I am studying and working about Spiritual Treatment and now interested to work under your guidance.

Hansa Rohit —
5 star*
apka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge......
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best

Vinay Vishwas
Thank you Sir....Thank you very much....I am filled with gratitude for what you are doing for humanity.....thanks a lot..

नरेंदर कुमार भाट्ट

बहुत ही सुंदर विचार हैं चिरंजीवी भव सदा सुखी रहो शुभ प्रभात

Sudhir Rathi
आपके लेखो को पढ़कर सुख मिलता है

Rohit Singh
dr sar ap mahan ho bhagwan apka bhla kre garibo ki lakho duaye apke sath h

Kamal Kumar Johari
sir, i arrang satsang on every sunday and convey ur message to each participants. They are also being benifited. I shall feel obliged if u send me ur book to me

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder salah rog ko jad se samapt karne ka aachuk nuskha, bahut Bahut aanumodna

Prabhat R. Sharma
Great source of life you provide to all. Well done Sir

M Azam Siddiqui
Sir aap Jesé ho to sansar me koe Bemar nahe hoga

Dev Khandelwal
koti koti dhanyvad aapka

Kripashankar Pandey
इस कलियुग में आप स्वरूपस्थिति की बात करते हैं, यह तो अद्भुत है.
निश्चित ही आपका कल्याण शीघ्र ही होगा.

Ankush Sharma
Aapka amulya samay dekar jankari dene ke liye bahut -bahut aabhar

B.k. Chatter
Wah kya khub ati sunder hamesha swath rahne ka ati uttam upay

Kripashankar Pandey
हे महात्मन्..! आप द्वारा प्रेषित मुक्तियाँ (पुस्तक) मुझे प्राप्त हो गयी है ! विभिन्न युक्तियों तथा उदाहरणों के माध्यम से आत्म तत्त्व को उपदेशित करने वाली यह पुस्तक स्वरूपस्थिति हेतु साधक के लिये पाथेय है..!
आप की इस अकारण करुणा का पात्र हो कर मैं आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञतापूर्वक अहोभाव से भर गया हूँ ।
आपके लिये बस यही शुभकामना है कि आप इस देहपर्यन्त नरनारायण की सेवा हेतु पूर्ण समर्थ रहें तथा देहोपरान्त अनन्त काल के लिये स्वस्वरूपस्थ हों ...नतशीश नमन्.

Kamal Singh Shekhawat
Thanks sir ji bhagwan aspko lambi umar de

Navneet Jagatramka
Nice job, great to see a man like u working for social cause

Sudhir Rathi
आपके इस सेवाभाव को नमन

Visu Parmar
पहले तो आपको बहुत बहुत धन्यवाद सर जी
और आप जो ये कार्य कर रहे है वो बहुत ही सराहनीय है

Meenu Jain
Sir jai jinendra
Aapka mere or meri family pe anant upkar hai,
Kyuki maine jeene ki aas hi chhod di thi
Aapke disha nirdesh ne jeevan badal diya

Ramesh Kumar
बहुत अच्छा कार्य कर रहे है आप

Pushpa Maggu
U are doing great job for awareness of people may god bless u sir

Suresh Goswami Anupam
अतिसुन्दर मानवतावादी अनुकरणीय मिशन।बहुत बहुत साधुवाद।

Anshul Vashishtha
Thank you sir ji.... Hats off to ur sense of charity

Rohit Singh
Sar ap mahan h ap logo ka dukh dur kar the h bhagwan apko sada khus rakhe m dil se dua de RHA hu Sar apko

Vineet Krgoel
Dr Saab Namaskar ..sir your posts are really helpful towards humankind. Thanks a lot sir

Amarsingh Rajpurohit
Sir aapka Yeh nek kary desh k liye bahut kam ayega

Seema Seema
Bahut bahut dhanyavad .ap ne bahut achi salah de

Ashok Kumar Gangwal
Dr. Sab
बहुत बहुत धन्यवाद इससे बहुत लोगों को फायदा होगा

Tushar Dutt
सर आप निःस्वार्थ एक बहुत अच्छा काम करते है वो भी बिना किसी फीस के

Sushil Dubey
आप की पोस्ट पढ़ कर प्रसन्नता मिलती है। साधुवाद ।

Arun Pathak
Sir koti - kot Parnam

Mayank Jain
Sir apko koti koti naman

Manorama Rani
I am very thankful for your help and hope it will help my daughter. Thanks once again and hope u will show your guidance to the needy

Amar Nayak
अतिसुन्दर। अद्भूत

Devendra Nath
Heartiest thank from deep of soul for posting valuable informations .
Salute .....Salute.... Dr

Anil Mathur
Great thought sir ji..........We will try to give our best for this thing....Thanks..........

Anil Mathur
Amazing effort by you Dr. sahab ji...Thanku so much

Rohit Singh
Dr Sar namste Sar apnea Jo dwai btai thi colistrol kam Karen keep liye muje bhut fayda ho RHA h

Kailash Bohra
शानदार साधुवाद

Anil Mathur
शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार शानदार

Ram Kumar Ballan

डॉक्टर साहब नमस्कार
बहुत ही सुन्दर कार्य
परमपिता परमात्मा आपको दीर्घायु करे

Mayank Jain
जय जिनेन्द्र
For supporting nd guiding me
I m grateful to u sir

Anshul Vashishtha
Dr satyanarayan thanx for sharing such a valuable information
After reading ur articles I am profoundly impressed

Anshul Vashishtha
U r doing an amazing job sir

Gulshan Jain
डॉक्टर साहब, आप बहुत नेक कम कर रहे है। बधाई। कृपा करके अपनी उपयोगी किताबे Gulshan.jain@gmail.com पर भेज दे। धन्यवाद।

Rana Thakur
sir aapki is post ki hum bhut absykta thi bina mange hi hi moti mile aapka hardik dhanyabaad

Ranjeet Singh Yadav
आज के वक्त मैं यदि कोई इतनी लाभकारी जानकारी
समाज की भलाई के लिये समय निकाल कर
निस्वार्थ बाँटता है,
यह सोच काबिले तारीफ है,
इतनी सुंदर सोच को हम दिल से सम्मान सहित सलाम करते हैं।

Vikas Shivhare
Sar mene aapki side par jaakar aapko msg karna chaha lekin nahi ho raha.
sar me ye kahna chahta hoo ki aap bahut hi shandar docter hai aur minded bhi.
aap free me logo ko rog ki teatment batate hai aur bade pyar se,namrta se baat bhi karte hai
aap best ho sar.
me apne mobile ka net ka recharg kewal aapke teatmet ko padne ke liye.hi karta hoo.
sar me iss samay bahut pareshan hoo.
Lekin me aapase milne indore jaroor aaonge kewal aapse milne aur aapko paas se dekhne ke liye aap best ho sar Charan sparsh sar

Yasmeen Budhwani

डॉक्टर सांब आप जो ये सेवा कर रहे है बहोत बडी मिसाल है
बहोत बडी सेवा कर रहे है
आपके लीये जोबी दुवा माँगे कम ही है
भगवान आपको ख़ुश ओर सुखी रखे,
ये मेरी प्रार्थना है भगवान से.

Harish Chandra Joshi
Thank you for this useful information.
It is really positive way of thinking and good cause for the humanity.
Thank you once again

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब प्रणाम
मै आप का बहुत आभार मानता हूँ
जिस तरह से आप निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे है
वैसा प्रमाण मिलना कठिन है।

Rana Thakur
Ati utaam yogdaan he sir aapka samaj ke prati.

Varun Mishra
हे महामानव, आपका मार्गदर्शन शारीरिक व अध्यात्मिक रुप से सबलता प्रदान करती है।

Durga Joshi
Dr. Shab ko thanks kahuga or sabhi dosto ko ye bhi batauga ki mai bhi dr. shab se Skin ka treatment le raha hu or mujhe 80% thik ho gaya hai.
Aap sabhi pathako ko batana chahuga ki 3 year's se maine English medicine liya tha, magar bimari kam ke jagah badh raha tha.

Kavi Anand Jain Akela
आपका परामर्श मानव मूल्यों की धरोहर है.

Meenu Jain
Jab kisi ko aapki dawa batati hu n,
usko aaram mil jata h
to bhut achha lagta h

Varun Mishra
आपका हर दवाई और विचार मानवीय जीवन के लिए अमूल्य है। इसे आत्मसात कर मानव का शारीरिक, मानसिक व अध्यात्मिक रुप से स्वस्थ व सबल जीवन जी सकता है।
हे महामानव ! आपको शत शत नमन व वंदन।

DrKishan Swaroop Sharma

एक अति सुंदर, कामयाब तथा जीवनोपयोगी पोस्ट के लिये आपको हमारी ओर से कौटी-कौटी धन्यवाद- जय श्री राधै. ..राधै जी की

Neeku Gupta
Aap se Accha Paropkari Insan is Puri Darti par no Milega Sir
Ni SWarth Sava Bhav Sir Aap Bhagwan h Ap Sir Pujniy hai.

Tikam Jain
Jai jinendra sa prnaam sa.
Aapki hr post sadhak ke liye praan vaayu ka kaam krti he.
Aatm pipasu ke liye to amrit hi he.
Chintan Krte Krte Rom Rom Pulkit Ho Jata He Aur Avrnniy Anubhav Hota He.

Anil Garg
पता नहीं कितने लोगों के जीवन में स्वास्थ्य का उजियारा किया होगा आपने डाक्टर साहब और वो भी निस्वार्थ।

Manju Singh
Good Morning Sir. I have reading all your health posts which I have found extremely helpful.
You are doing a very noble service.
Kindly give some advice and treatment of Thyroid .
Can it be cured permanently through homoeopathic treatment and medication.

Anil Garg
सौभाग्यशाली हैं वो जिनके दिल में दूसरों के लिए दर्द है।
आपको हृदय से प्रणाम डाक्टर साहब।

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मै ठीक हूँ. आपके द्वारा बताई दवाओ से अब मै दूसरो को भी लाभान्वित करा रहा हूँ.

Aadityaa Sharma
आपको प्रणाम।
समाज के लिए आपके विचार, अपने अनुभव, समाधान, ललक
आपकी कितनी भी सराहना करे तो भी कम है।
कहने के शब्द नही मिल रहे।
मै अपनी भावना व्यक्त नही कर पा रहा हूँ।
कोटि कोटि नमन।

Neeku Gupta
Sir ji Ap to Bagwan ho
Sir ji Ap Roj New Acchi Daba Aur Gyan Ki Jankari Post Kar Rahe ho.

Subodh Kumar Mishra
डॉ साहब बहुत बहुत आभार
मै आपके ही सहारे हूँ
आपके ऊपर बहुत विश्वास है ।

Deepak Dewnani
डॉ. साहब ,सादर नमस्कार,
मैं नियमित रूप से आपकी सभी पोस्ट को पढ़ता हूँ।
इनसे काफी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं।
आपके द्वारा किया गया यह कार्य प्रशंसनीय है
एवं लोक कल्याण हेतु सराहनीय है।

Nishit Sharma
बहुत ही अच्छी जानकारी दी गई है
डाक्टर साहब बहुत आभार व्यक्त करते हैं
आगे भी इस तरह हमारा जीवन में मार्ग सुझाये.

Surender Kaushik
Nice Dr sahib. Great service to mankind.

Chandrakant Singh
Very very useful lines.
thank you so much.

Ramkumar Sharma
Sir ko naman
aap bahut hi punnaya ka Karya kar rahe hai

Manju Singh
Good Evening Sir.
Your prescribed medicines are very effective.
I am really thankful to you.
You are so genuine.

Shivam Saxena
Sir mai swath raho swath karo koi bhi bimari ho
Uski dava puri tarahe se fayda kar rahi hai
Thanks sir

Ramdulare Gupta
डाक्टर साहब प्रणाम आपके आशीर्वाद से मेरा शुगर लेवल बिना दवा के ठीक रहता है.
आपके द्वारा बताये गये इलाज को मैने अपने घर परिवार और गाँव मे बहुत लोगो को दिया है.
सभी को बहुत जल्दी आराम मिलता है.
आपके द्वारा बताया गया बुखार का इलाज बहुत ही प्रभावशाली है.

जिसको भी दिया है शत-प्रतिशत सकारात्मक परिणाम मिले हैं.

Narayan Lal Choudhary
Aapka every treatment 100% useful rhata hai.
Aap sir world ke best doctor ho.
Aapke btayi gyi medicine se mere ko aur mere dost ko bhoot benifit hua hai.
Ek request hai maine upper likha hai body vibration aur stage phobia ke baare mai advice digeye plzz.

Rana Thakur
Dhanyawad sir
Aaj hi le lunga mene aapki bataya anusaar kai treatment liye he or
Dusro ko bi bataya he
Jinse bhut hi fayda ho raha he.
Logo ki duaye aapko mil rahi he sir.

Kailash Chandra Khandelwal
उत्तम स्वास्थ्य हेतु अत्यन्त उपयोगी,हितकारी,जानकारियों के लिए अनंत आत्मीय साधुवाद। बधाई।

Harry Suyal
muktiya — 5 star
This is excellent to help us every time
this is excellent to help us every time

Rana Thakur
आपका बहुत बहुत आभार जो इन्गलिश दवाओ से होने बाली परेशानी ओर लुटने से बचने मै सहायता की हम आपके इस प्रयास को ओरो को भी बताता हूं जिससे गरीब जन मानस फायदा ले सके ओर सुख से रहे. आपका कोटि कोटि आभार.

Atul Singh
muktiya — 5 star
जीवन में स्वस्थ्य शरीर के लिये अति उपयुक्त पेज है,
पाये निरोग व साफ सुथरी जिन्दगी !

Kadar Khan
muktiya — 5 star
Salute dr swatantra jain...
Sacchi manav sewa koi aap se seekhe

Girish Vyas
reviewed muktiya — 5 star
Aapke jese sahi doctor sahab nahi dekha .
Great work.
Aapke pas har bimari ka ilaj he

Hansa Rohit
muktiya — 5 star
Bhagvan ne aapko bahot achhi socha di he.
Aur aajke dorme logo ko
Aapke jese ki sahi me jarurat he sir.
Bhagvan aapko bahot sakti de
Aapka prayas achha hai
Aur logo ki duvao se jarur
Aap safal hinge......
Aur achhe kaam me
Bhagvan bhi sath deta hai
All the best.

Vipin Garg
muktiya — 5 star
बहुत अच्छा कार्य है
अगर जनता का इस पर विश्वास बनाए रखे
तब जिन्दगी मे किसी को एलोपेथिक दवाईयां खाने के कारण अलसर का भी सामना नही करना पड़ेगा

Jitendra Bhadauriya
Apka koi jod nahi hai sir
Aap logo ke liye God ho.
Jo itna app sochte ho.
Apki sari poste vardaan hai
Thanks

Chetna Kanchan Bhagat
आप दोनों ही मेरे लिए प्रेरणा रूप हो
आपके प्रेम, लोक कल्याण की भावना व सामाजिक उत्तर दायित्व की अमिट छाप मेरे मन ह्रदय में सदा से है।

Kadar Khan
Muktiya — *5 star*
Salute Dr Swatantra Jain...
Sacchi Manav sewa koi aap se seekhe.

Jeetendra Singh
Muktiya — *5 star*
Really very helpful humanity...
Dr swt....is goodman

Arvind Singh
Muktiya — *5 star*

He is great man who serving humanity unconditionally.

Jagannath Tanty
Aap ki saari baatein mere lie Amrit baan hai aor yaha bahot achhi baat hai ki main bhi kisi ke kaam aunga Dhanyabaad sir, my Gmail is

Deepak Rajput
Rajiv Dixit ji ke bad drswatantra jain ji ko maine dekha h jo is desh ke liye dil se kaam krte h warna sab lootne ka hi sochte h.

Arvind Singh
He is great man who serving humanity unconditionally

Sneh Jain
Aapki posts bindas hoti hai aur bilkul real.sach
bahut dukh hota hai
chand rupees ke liye marijo se khilwad karte hai doctors

Rana Thakur
धन्यवाद सर, कल दवाई लाता हूं
सर आपके सहयोग से हम अब काफी टाईम से किसी के द्वारा नही लुटे है
नही तो हमारी तनख्वाह का ज्यादा भाग डाक्टर साहब की फीस मे खर्च हो जाता था.

Lalit Sharma
Swasthya aur Sresth-jeevan kaise haasil ho....is disha me aapka marg-darshan bahot anmol h....
kripaya apna aashirwaad baye rakhiyega....
dhanyawaaaad

Pawan Sharma
आपकी सेवा को नमन है डॉक्टर साहब

Rohit Singh
logo ke dukh ka niwaran karne wale dr sar m apko parnam karta hu

Piyush Jain
So Graceful. God Bless u.

Jitendra Jain Bhavya Atmn
Dr Swatantra jain ji kya Face pr Saralta h,
सबका दुख दूर करने वाले डॉक्टर, आपको सादर जयजिनेन्द्र

Devendra Pandey
Apke bare m bhut suna h
Garv hota h Hume apke sath jud k

thank you sir

Ashok Patil
Very good.
Feeling pleasure n proud of you after reading your post.
I read you for the first time.

Pc Bargot
सर में दो साल से आयुर्वेदि और एलोपेथी दवाई खाई और फिर बाद में होम्योपैथी लेकिन किसी भी दवाई से लाभ नही हुआ सिर्फ आपके द्वारा बताई गई दवाई से लाभ हुआ

Prakash Maan
You are really so great
Perhaps God have chosen you sir ji carry on please.

Tripurari Sharma
आपकी सेवा व सेवा भावना की जितनी तारीफ की जावे वो कम है

OM Singh
A Great person on a great mission.
He always helps people

Pawan Sharma
नमनः है आपकी सेवा को डॉक्टर साहब

Jeenu Bhansali Jain
Bahut hi badiya...
Anmol Jaankaari share karne ke liye.
aapko tahedil se Dhanyawaad aur naman karta hu,

International Human Rights Association
Website : www.ihra.co.in | Incorporated Under the Legislation of Government of India
Affiliated to : United Nations Networks & International Bar Association
Dr. SWATANTRA JAIN
Chairman, Indore City, IHRA
CMD : Muktiya World Peace, Pleasure & Prosperity Center
CMD : Muktiya Spiritual Treatment Center
Website : www.muktiya.com, E-mail : drswatantrajain@gmail.com
145, Vindhyachal Nagar, Airport Road, Indore (M.P.) INDIA • Mobile : +91-94248-76961, +91-99265-00416 • www.facebook.com/drswatantrajain

-: डॉ. स्वतंत्र जैन एक परिचय :-

डॉ. स्वतंत्र जैन सा. एक प्रख्यात निःस्वार्थ डॉक्टर, लोक कल्याणकारी और मानवाधिकार के क्षेत्र के मनीषी, जनहित, प्रेरणादायी और आध्यात्मिक लेखक हैं.
देश और विदेश के लाखों लोगो तक डॉ. सा. के मुक्तियाँ ट्रस्ट द्वारा निशुल्क पहुंचाया जा रहा उपचार रोगी के परिवार को स्वस्थ रखने की सम्पूर्ण जीवन प्रणाली है.
आपकी बताई नेचरल होम्योपैथी की दवाई रोगी के शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत कर लोगो को स्वस्थ बनाती है और रोग से पूर्ण लाभ देती है.
आज तक लाखों लोगों ने उनके इस उपचार को लिया है और उन सबको आराम हुआ है.
साथ ही डॉ. सा. की भावना है कि उनकी इस नेचरल होम्योपैथी की पद्धति का विदेश में भी प्रचार-प्रसार कर सम्पूर्ण विश्व के लोगो को इसका लाभ पहुंचाना चाहते हैं.
साथ ही डॉ. सा. के मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख सम्रद्धि ट्रस्ट द्वारा हर देश में समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स की स्थापना का अति विशाल कार्य भी शुरू किया जाना है.
ये सभी एक हजार आठ समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स दीन-दुखी, बेबस, लाचार तथा बीमार व्यक्ति को भोजन, औषधि, शिक्षा तथा सुरक्षा देंगे तथा फिर उनको सर्वांग सुखी कर सहजानंदी शुद्ध स्वरूपी चैतन्य भगवान के ज्ञान का दिव्य-प्रकाश प्रदान कर पामर से परमात्मा बनने की प्रेरणा देते रहेंगे.
इन सभी समवशरण सेवा मंदिर काम्प्लेक्स में सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण लिए चार प्रकार के दान या सेवा की व्यवस्था रहेगी –

a. औषधि दान या सेवा
b. शास्त्र दान या ज्ञान सेवा
c. अभय दान या सुरक्षा प्रदान करना
d. आहार दान या पौष्टिक भोजन प्रदान करना

पूरे विश्व में ऐसे 1008 समवशरण सेवा मंदिर बनाना है.
आप अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन के इन्दौर शहर के अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश राज्य के उपाध्यक्ष भी हैं.
आप मानवाधिकार के क्षेत्र में अतुलनीय जनहितकारी कार्य कर रहे हैं.
प्राणी मात्र के चैतन्य-सम्राट की बात करने वाले आपके आध्यात्मिक लेख भी आपकी खुद की आत्मानुभूति, आत्मज्ञान, आत्मवैभव,

निजी अनुभव और नय, न्याय एवं वैज्ञानिक प्रमाणों के आधारों पर ही लिखे गये होते हैं.
अतः आप चाहे तो उनकी लिखी सभी आध्यात्मिक पुस्तको को भी उनकी वेब साईट से डाउन लोड कर सकते हैं.
डॉ. सा. का जन्म एक जनवरी 1949 को भोपाल में हुआ था और आपने इंजीनियरिंग की डिग्री मौलाना आजाद कालेज आफ टेक्नोलाजी, भोपाल से प्राप्त की।
फिर आपने म.प्र. विधुत मंडल में विभिन्न पदों पर रहते हुए अत्यंत कुशलता एवं कर्मठता के साथ अपना कार्य निष्पादित किया एवं अधीक्षण यंत्री पद से समय पूर्व सेवानिवृत्ति ले ली।
आपने डॉक्टर आफ मेडीसिन (वैकल्पिक चिकित्सा) की उपाधि भी प्राप्त की। आपके पास आने वाले सभी पीड़ित और परेशान लोगों की दुख, बीमारी और समस्याओं का उपचार, परामर्श, सलाह एवं इलाज आप निस्वार्थ भाव से करते हैं।
आपने विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं सचिव पद पर रहते हुए बहुत ही निपुणता के साथ उन संस्थाओं के कार्य को आगे बढ़ाया है।
आपके लेख सन्मति संदेश दिल्ली एवं अन्य पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपते रहे हैं।
आपके द्वारा लिखी गई पुस्तके निम्नानुसार हैं -

1. मुक्तियाँ
2. मुक्तिशिखर
3. MUKTIYA THE ULTIMATE FREEDOM (अंग्रेजी)
4. MUKTIYA RAYS (अंग्रेजी)
5. छहढाला
6. मुक्ति-धारा
7. मुक्ति किरण
8. मुक्ति-पथ
9. मुक्ति-कुंज
10. मुक्ति महल
11. मुक्ति दीप
12. मुक्ति मार्ग
13. मुक्ति सुख
14. मुक्ति तरंग
15. मुक्ति दर्पण

आपकी वेबसाइट www.muktiya.com पर आपके सभी लेख और पुस्तके उपलब्ध हैं।
आपकी शैली अत्यंत सरल, सुबोध, शास्त्रोक्त, वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है।
आत्मा जैसे गंभीर एवं दुरूह विषय को भी आप अपने तर्क एवं उदाहरण द्वारा इतने सहज रूप में समझाते हैं कि आत्मा की सत्ता को ही नकारने वाला श्रोता भी उस पर विचार करने को मजबूर हो उठता है।
आपकी स्पष्ट उदघोषणा है कि जिस तरह हर नागरिक को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनने की स्वाधीनता है,
उसी तरह आत्मा के क्षेत्र में भी प्रजातंत्र की ही प्रतिष्ठा है। यहाँ पर भी प्रत्येक प्राणी अपनी आत्मा को गृहण कर अपना कल्याण कर परमात्मा बन सकता है।
वर्तमान में आपके द्वारा निम्न कार्य और केंद्र संचालित किये जा रहे हैं -

1. <u>अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन इन्दौर</u> के अध्यक्ष के रूप में आपके द्वारा लोकहित, सामाजिक उत्थान और समभाव के लिये कार्य किया जा रहा है एवं दीन-हीन एवं गरीब लोगो की बेबसी, लाचारी और परेशानियो को केंद्र और राज्य सरकारों के समक्ष रख कर उन्हें दूर करने की कोशिश की जा रही है।

2. <u>लोक हित, प्राणिमात्र के कल्याण</u> के लिये आपके प्रवचन छः माह तक भास्कर टी.वी. पर आते रहे हैं।

3. फेसबुक और Samadhan समाधान ग्रुप पर भी आपके लेख और बीमारियों के उपचार से सम्बंधित लेख आते रहते हैं.

4. देश-विदेश के हजारो लोग उनकी बीमारियों और परेशानियों के निवारण के लिए आपसे सम्पर्क करते रहते हैं.

आपके द्वारा संचालित निशुल्क संस्थायें और कार्य इस तरह हैं -

1. <u>मुक्तियाँ विश्व शांति, सुख, समृद्धि ट्रस्ट</u> –

संसार में हर ओर आज लड़ाई, झगड़ा, मार-पीट, हिंसा आतंकवाद आदि दिखते हैं, उससे मुक्ति पाने की दिशा में प्रत्येक मनुष्य अगर अपने सर्वजनहितकारी स्वरूप को स्वीकार कर हरेक दीन-हीन, दुखी, बीमार, निम्न जाति एवं वर्ण के मनुष्यों को अपने अंतरमन से मुक्त-हस्त से तन, मन एवं धन से मदद करे तो विश्व शांति की कल्पना की कल्पना साकर हो उठेगी; सुख और समृद्धि का साम्राज्य स्थापित होगा। यह कल्पना साकार करने का प्रयत्न करना ही आपका उद्देश्य है।

2. <u>मुक्तियाँ नेचुरल होम्योपथिक हॉस्पिटल</u> –

किसी भी तरह की तकलीफ, परेशानी है, बीमारी अगर आपको है, तो उसकी पीड़ा से आपको मुक्त करने और आपके शरीर की समस्त क्रियाओं को अत्यंत सुचारू रूप से कार्य करने योग्य बनाने और आपकी सभी तरह की शारीरिक पीड़ा से आप मुक्ति पा सकें, यही आपका प्रयत्न है और उद्देश्य है।

3. आप अपने पास आने वाले हर बीमार को दवाई के अतिरिक्त यह सलाह अवश्य देते हैं कि वे रात्रि को खाना और जमीकंद खाना बंद करें.

4. सिर्फ सूर्य तप्त शाकाहारी सादा भोजन ही लें.

5. अपने आसपास की झोपड़पट्टी में रहने वाले किसी गरीब व्यक्ति की हर हफ्ते मदद करें.

6. अध्यात्मिक कैप्सूल के रूप में आपकी पुस्तक मुक्तियाँ की एक-एक मुक्ति तीन माह तक रोज पढ़ें. इससे उनकी नेगेटिव एनर्जी कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आपके द्वारा सभी को खुद को स्वस्थ रखने और अन्य दूसरे हजारो-लाखों लोगो को भी स्वस्थ करने की प्रेरणा दी जा रही है.

फेसबुक के कई दोस्तों ने बताया है कि उन्होंने अपने गाँव या शहर में डॉ. सा. द्वारा बताई चिकित्सा पद्धति से मरीजों को हर तरह से निशुल्क सलाह देना और उनका उपचार करना भी शुरू कर दिया है. इस तरह इन सेवाभावी लोगो ने न केवल अपने परिवार को स्वस्थ रखा, अपितु अन्य लोगो को भी स्वस्थ बनाये रखने को कोशिश की. साथ ही गरीबों का निशुल्क उपचार भी शुरू कर दिया है और लोगों को इससे बहुत लाभ भी हुआ है.

इस तरह सभी लोग स्वस्थ रहे और अपने आसपास के लोगो को भी स्वस्थ रहने में मदद करे.
तथा विश्व-बंधुत्व की ज्योत को जलाये रखने में हमे सहयोग करें.

यदि आप चाहे तो डॉ. सा. के हजारों आध्यात्मिक लेखों को पढ़ने के लिए उनकी लिखी मुक्तियाँ, मुक्ति शिखर, मुक्ति धारा, मुक्ति पथ और मुक्ति कुञ्ज आदि पंद्रह आध्यात्मिक पुस्तको को muktiya.com से आप निशुल्क डाउन लोड कर सकते हैं –

इन को रोज पढने से आपकी नेगेटिव एनर्जी निश्चित ही कम होगी और पॉजिटिव एनर्जी बहुत तेजी से बढेगी.

आप सभी को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के प्रवचनों और साक्षात्कारों की 15 डीवीडी के सेट सभी जिज्ञासुओं को भेजे जा रहे हैं.

इन सभी 15 डीवीडी के सेट को आपके बताये पते पर कोरियर द्वारा निशुल्क प्राप्त करने के लिए कृपया आप अपना पता और मोबाइल नं. डॉ. स्वतंत्र जैन सा. के मेसेज बाक्स में भेजे.

डॉ. सा. के पचासों विडियो प्रवचन, इंटरव्यूज को यू-ट्यूब पर भी डाल दिया गया है जिनको देखने का लिंक इस तरह से है –

https://www.youtube.com/channel/UCuVsIg6F2zYNLxUNbBqalkg

डॉ. सा. के "सुख की ओर" के पचासों प्रवचनों को MP-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ – https://we.tl/RoT5BnIbiy

डॉ. सा. के "WAY TO HAPPINES" के इंटरव्यूज को MP-3 में सुनने के लिए आप इस लिंक में जाएँ – https://we.tl/1Il2BRAp94

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
सिद्ध भगवन्त बाहें फैलाये तुझे पुकारे रे
घर आजा परदेशी तेरा मोक्ष बुलाये रे।
डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
यह संसार एक सपना है
मोक्ष महल ही अपना है
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
धर्म का कार्य सदाकाल सुख देना है
अपनी आत्मा को पहिचानकार मानकर एवं गृहणकर
आप भी अन्य परमात्माओं के समान अपने सम्पूर्ण
सुख को प्राप्तकर अमर हो कर भगवान बन सकते हो।
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
अगर आपको अपनी दीन-हीन अवस्था, दुख, बीमारी, गरीबी,
लाचारी, बेबसी परेशान कर रही हैं तो अपने भगवान आत्मा
को मानने से आप इन तकलीफो से शीघ्र ही मुक्त होकर सदाकाल
रहने वाले सुख को पाकर अमर हो जावेंगे।
डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
इस संसार में एक परमाणु भी नष्ट नही होता हैं। हर बार वह दूसरे परमाणु से क्रिया कर नया यौगिक (शरीर) बनाता हैं और पुराना यौगिक नष्ट हो जाता है। आप भी एक शरीर (यौगिक) से दूसरे शरीर में भ्रमण करते रहते हो। नये शरीर के धारण करते ही पुराना शरीर नष्ट हो जाता है। इस तरह जब एक सुक्ष्म परमाणु भी इस जन्म–मरण की क्रिया में नष्ट नहीं होता है तो फिर यह मान लें कि आप भी सदाकाल अविनाशक ही हैं अमर ही हैं। पुन: जैसे परमाणु में अपार शक्ति भरी है वैसे ही आप में भी अनन्त शक्ति एवं गुण भरे हुए हैं। इस तथ्य को स्वीकार करने से आप भी भक्त से भगवान बन जाओंगे।
डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
मो. 94248 76961, 99265 00416
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
आप अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, अनन्त ज्ञान,
अनन्त शान्ति के भंडार हो
एवं वर्तमान में ही त्रिलोकीनाथ भगवान हो।
डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
तुम स्वयं ही हो तीन लोक के नाथ
डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
हिन्दु मुस्लिम सिख इसाई
सब ही हैं परमात्मा भाई
डॉ.स्वतंत्र जैन
आध्यात्मिक चिंतक व लेखक
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
तुम स्वयं सिद्ध–बुद्ध–शुद्ध हो,
एवं सम्पूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हो
डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
सभी मनुष्य समान रुप से भगवान हैं
चाहे राजा हो या रंक, अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष
बालक हो या जवान हो या वृद्ध, उच्च वर्ग हो या निम्न वर्ग
डॉ.स्वतंत्र जैन
Website : www.muktiya.com

भक्त से भगवान बनें
मुक्तियाँ
विश्व बंधुत्व
इस संसार में प्रत्येक प्राणों नें चौरासी लाख योनियों में से प्रत्येक योनी में अनन्त बार
जन्म–मरण किया हैं। आपको दिखने वाला प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी जन्म में
आपका ही पारिवारिक सदस्य, दोस्त आदि रहा हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि सभी
मानव कभी न कभी आपके ही माँ, बाप, भाई, बहिन, सम्बन्धी या दोस्त रहे होंगे।
अत: अब प्रत्येक दीन–हीन, दुखी, बीमार, लाचार, बेबस भाई–बहिन के अ ांसू पोंछना
उनकी मदद करना ही विश्वबंधुत्व की भावना को साकार करना है और इस मार्ग पर चलकर
आप शीघ्र ही भक्त से भगवान बन जाओंगे ''
डॉ.स्वतंत्र जैन